सिंदूर की तलाश

बलवन्त सिंह

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

पुष्पा कालिज से बाहर निकली तो उसने देखा कि प्रतिदिन की भांति वह युवक आज भी बड़े फाटक के निकट खड़ा था। वह समझ गई कि अब वह उसका पीछा भी करेगा। आज तक वह यह सोचकर अपने हृदय को सान्त्वना देती रही थी कि सम्भवतः यह उसका भ्रम था। परन्तु अब भ्रम की कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी।

क्या वह युवक सदा ही उसका पीछा करता रहेगा? यदि अन्य लड़कियों का ध्यान इस ओर चला गया तो उसकी कितनी बदनामी होगी! इसका कुछ उपाय करना ही पड़ेगा।

मन में यह निश्चय कर पुष्पा बड़े फाटक से बाहर निकल गई। कुछ लड़कियां उसके साथ थी, परन्तु थोड़ी देर बाद ये दूसरे मार्ग पर चल पड़ेंगी तो वह अकेली रह जाएगी। उस समय उस अपरिचित युवक से सीधे बात करना उचित रहेगा। आज तो इसका निर्णय हो ही जाना चाहिए। यह प्रतिदिन का झंझट ठीक नहीं है।

दूसरी लड़कियों के साथ चलते-चलते पुष्पा ने छिपी नजरों से देखा कि युवक निस्संकोच मटरगश्ती करता हुआ चला आ रहा था। मन ही मन वह सोचती रही कि आज उससे कैसे निबटेगी।

आखिर साथ वाली लड़कियां विदा हो गईं। अब वे दोनों पुरुषार्थ एक-दूसरे के आगे-पीछे चल रहे थे। पुष्पा का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। चलते-चलते वह अपने घर के निकट पहुंच गई। उसकी हिम्मत कुछ बढ़ी, वह रुक गई। युवक भी रुक गया। बात आरम्भ करते हुए पुष्पा ने कुछ घबराए हुए स्वर में पूछा, "आप मेरा पीछा कर रहे हैं?"

"जी हां।"

पुष्पा को ऐसे उत्तर की आशा नहीं थी। उसका विचार था कि युवक इस बात से बिल्कुल इन्कार कर देगा। परन्तु उसने तो निस्संकोच मान लिया कि वह उसका पीछा कर रहा था। पुष्पा ने थूक निगल कर अपना गला तर किया और पूछा, "आप प्रतिदिन ऐसा ही करते हैं?"

"आप ठीक कहती हैं।"

"क्यों ?"

"क्या यह भी बताना पड़ेगा ?"

पुष्पा को आश्चर्य हुआ, "क्यों ? बताना क्यों नहीं पड़ेगा ?"

"मैं सोच रहा था कि आप समझदार हैं। आपको अधिक कुछ बताना नहीं पड़ेगा।"

पुष्पा झल्ला उठी। कुछ गर्म होकर बोली, "सुनो मिस्टर ! मेरा घर बिल्कुल सामने है, अभी अपने कुत्ते को आवाज़ दे दूं तो सारा मसखरापन दम-भर में गायब हो जाएगा।"

युवक तुरन्त हाथ जोड़कर बोला, "नहीं, कुत्ते की आवश्यकता नहीं है। मेरे लिए आप ही काफी हैं।"

गुस्से से पुष्पा का चेहरा तमतमा उठा। ज़ोर से पांव पटकते हुए बोली, "बदतमीज़।"

युवक दोनों हाथ ऊपर को उठाकर कहने लगा, मैं नहीं चाहता "कि मामूली-सी बात का बतंगड़ बन जाए।"

"मामूली बात ?···आप···तुम इसे मामूली-सी बात समझते हो ? तुम अच्छी तरह जानते हो कि किसी लड़की का पीछा करना कितनी बुरी बात है।"

"यदि पीछा करने वाले का इरादा बुरा न हो तो किसी के पीछे-पीछे चलना बुरी बात नहीं है।"

"हां तो, यही बता दीजिए कि आपका इरादा क्या है ?"

"हां, यह हुई मर्दों वाली बात ! मेरा मतलब है—कायदे की बात ! यही सवाल आप मुझसे पहले ही पूछ लेतीं तो कोई गलतफहमी न उत्पन्न होती···हां तो मेरा इरादा है कि मैं आपको बहन बनाना चाहता हूं। मेरी इच्छा है कि आप मुझे राखी बांधकर मेरी बहन बन जाइए।"

"वाह ! क्या बात है !···आप···तुम यह समझते हो कि तुम्हारी यह बात सुनकर मैं उछल पड़ूंगी और तुम्हारी कलाई पर राखी बांध दूंगी। यह सब फिल्मों में होता है। तुमने लड़कियों से दोस्ती गांठने का यह नया तरीका निकाला है। मैं पूछती हूं कि क्या तुम्हारी सगी बहन नहीं है ?"

"है।"

"तो फिर मुझे बहन बनाने का ढोंग क्यों ?"

"इसका भी कारण है···। आप खुद ही सोचिए कि कारण न होता

तो मेरे जैसा भला आदमी आपसे अपमान करता ?"

पुष्पा कुछ सोच में डूब गई। शोर मचाने से अपनी बदनामी का भी भय था। उस युवक को भाई बनाने में भी कोई तुक नहीं थी। उसको उलझन में पाकर युवक बोला, "आप व्यर्थ ही परेशान हो रही हैं। परसों राखी है। मेरे घर पर आइए···या न आना चाहें तो मैं आपके घर आ सकता हूं···"

"नहीं, नहीं, आपको मेरे घर आने की जरूरत नहीं है···"

"तो ठीक है ! आप ही मेरे घर पर चली आइएगा। इसमें क्या फर्क पड़ता है—बहन के घर भाई आए या बहन भाई के घर आए, बात एक ही है—डरने की कोई बात नहीं है। मेरे घर में मेरी सगी बहन है···मां-बाप हैं। वैसे भी हमारे घर के आस-पास वालों से आप हमारे विषय में जानकारी प्राप्त कर सकती हैं कि हम कैसे लोग हैं। आपको कोई खतरा नहीं होगा।"

पुष्पा शान्त रही। युवक ने इस मौके का लाभ उठाते हुए हाथ बढ़ाया। "लीजिए ! यह मेरे नाम का कार्ड है। इस पर मेरा पता भी छपा है···। अच्छा, तो अब परसों मुलाकात होगी।"

यह कहकर युवक ने हाथ उठाकर हिलाते हुए कहा, "और हां, इस खुशी में कल मैं आपका पीछा भी नहीं करूंगा···आप आइएगा जरूर ! ···ऐसा न हो कि मुझे फिर से आपका पीछा करना पड़े···'सो लांग'। टा··· टा !"

रक्षाबन्धन का त्योहार था। सुबह का समय था। पुष्पा रिक्शा में बैठी चली जा रही थी। मन ही मन वहम में फंसी हुई थी। आखिर वह क्या करने जा रही थी ? एक अपरिचित और अज्ञात युवक के कहने में आकर उसे राखी बांधने जा रही थी। इस बात का परिणाम क्या होगा ? वह उसके कहने में आई ही क्यों ?—इन सब प्रश्नों का उसके पास कोई उत्तर नहीं था।

एकाएक रिक्शावाला बोला, "जवाहर नगर तो आ गया। आपको कहां उतरना है ?"

"क्यों ?"

"क्या यह भी बताना पड़ेगा ?"

पुष्पा को आश्चर्य हुआ, "क्यों ? बताना क्यों नहीं पड़ेगा ?"

"मैं सोच रहा था कि आप समझदार हैं। आपको अधिक कुछ बताना नहीं पड़ेगा।"

पुष्पा झल्ला उठी। कुछ गर्म होकर बोली, "सुनो मिस्टर ! मेरा घर बिल्कुल सामने है, अभी अपने कुत्ते को आवाज़ दे दूं तो सारा मसखरापन दम-भर में गायब हो जाएगा।"

युवक तुरन्त हाथ जोड़कर बोला, "नहीं, कुत्ते की आवश्यकता नहीं है। मेरे लिए आप ही काफी हैं।"

गुस्से से पुष्पा का चेहरा तमतमा उठा। ज़ोर से पांव पटकते हुए बोली, "बदतमीज़।"

युवक दोनों हाथ ऊपर को उठाकर कहने लगा, मैं नहीं चाहता "कि मामूली-सी बात का बतंगड़ बन जाए।"

"मामूली बात ?...आप...तुम इसे मामूली-सी बात समझते हो ? तुम अच्छी तरह जानते हो कि किसी लड़की का पीछा करना कितनी बुरी बात है।"

"यदि पीछा करने वाले का इरादा बुरा न हो तो किसी के पीछे-पीछे चलना बुरी बात नहीं है।"

"हां तो, यही बता दीजिए कि आपका इरादा क्या है ?"

"हां, यह हुई मर्दों वाली बात ! मेरा मतलब है—कायदे की बात ! यही सवाल आप मुझसे पहले ही पूछ लेतीं तो कोई गलतफहमी न उत्पन्न होती...हां तो मेरा इरादा है कि मैं आपको बहन बनाना चाहता हूं। मेरी इच्छा है कि आप मुझे राखी बांधकर मेरी बहन बन जाइए।"

"वाह ! क्या बात है !...आप...तुम यह समझते हो कि तुम्हा यह बात सुनकर मैं उछल पड़ूंगी और तुम्हारी कलाई पर राखी बांध दूंगी यह सब फिल्मों में होता है। तुमने लड़कियों से दोस्ती गांठने का यह न तरीका निकाला है। मैं पूछती हूं कि क्या तुम्हारी सगी बहन नहीं है ?"

"है।"

"तो फिर मुझे बहन बनाने का ढोंग क्यों ?"

"इसका भी कारण है...। आप खुद ही सोचिए कि कारण न

तो मेरे जैसा भला आदमी आपसे अपमान कराता ?"

पुष्पा कुछ सोच में डूब गई। शोर मचाने से अपनी बदनामी का भी भय था। उस युवक को भाई बनाने में भी कोई तुक नहीं थी। उसको उलझन में पाकर युवक बोला, "आप व्यर्थ ही परेशान हो रही हैं। परसों राखी है। मेरे घर पर आइए···या न आना चाहें तो मैं आपके घर आ सकता हूं···"

"नहीं, नहीं, आपको मेरे घर आने की ज़रूरत नहीं है···"

"तो ठीक है! आप ही मेरे घर पर चली आइएगा। इसमें क्या फर्क पड़ता है—बहन के घर भाई आए या बहन भाई के घर आए, बात एक ही है—डरने की कोई बात नहीं है। मेरे घर में मेरी सगी बहन है···मां-बाप हैं। वैसे भी हमारे घर के आस-पास वालों से आप हमारे विषय में जानकारी प्राप्त कर सकती हैं कि हम कैसे लोग हैं। आपको कोई खतरा नहीं होगा।"

पुष्पा शान्त रही। युवक ने इस मौके का लाभ उठाते हुए हाथ बढ़ाया। "लीजिए! यह मेरे नाम का कार्ड है। इस पर मेरा पता भी छपा है···। *अच्छा, तो अब परसों मुलाकात होगी।"*

यह कहकर युवक ने हाथ उठाकर हिलाते हुए कहा, "और हां, इस खुशी में कल मैं आपका पीछा भी नहीं करूंगा···आप आइएगा ज़रूर! ···ऐसा न हो कि मुझे फिर से आपका पीछा करना पड़े···'सो लाग'। टा··· टा!"

रक्षाबन्धन का त्योहार था। सुबह का समय था। पुष्पा रिक्शा में बैठी चली जा रही थी। मन ही मन वहम में फंसी हुई थी। आखिर वह क्या करने जा रही थी? एक अपरिचित और अज्ञात युवक के कहने में आकर उसे राखी बांधने जा रही थी। इस बात का परिणाम क्या होगा? वह उसके कहने में आई ही क्यों?—इन सब प्रश्नों का उसके पास कोई उत्तर नहीं था।

एकाएक रिक्शावाला बोला, "जवाहर नगर तो आ गया। आपको कहां उतरना है?"

कागज़ पर लिखे पते को देखते हुए वह बोली, "मकान नम्बर एक सौ साठ।"

यह बस्ती नई थी। छोटे-छोटे बंगले और मकान बने हुए थे। प्रत्येक के आगे थोड़ी-थोड़ी जगह छूटी हुई थी। वहां हरी-हरी घास और रंग-बिरंगे फूल दिखाई दे रहे थे। पुष्पा प्रत्येक फाटक पर लिखे नम्बर देखती जा रही थी। आखिर वह उचित स्थान पर पहुंच गई। उसने कहा, "रिक्शावाले! बस, यहीं पर रोक दो।"

रिक्शा से उतरकर वह पैसे दे चुकी तो फाटक की ओर बढ़ी। फाटक में ही उसे सफेद दाढ़ी वाला एक वृद्ध पुरुष दिखाई दिया—वह उजली धोती और उजला कुर्ता पहने हुए था। कुर्ते के ऊपर वास्केट थी। आंखों पर चश्मा और हाथ में छड़ी थी। पुष्पा समझ गई कि यह उस युवक के पिताजी हैं। उसने दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते की। वृद्ध ने चश्मे में से ध्यानपूर्वक उसकी ओर देखा और पूछा, "कहिए, आप किससे मिलना चाहती हैं?"

"जी, क्या कमलजीत जी यहीं रहते हैं?"

"रहता तो है..."

"मैं...मैं...उन्हीं से मिलने आई हूं।"

यह सुनते ही वृद्ध ऐसे चौंका जैसे उसे सांप ने डस लिया हो। पुष्पा को चुभती नज़र से देखते हुए बोला, "आप उससे क्यों मिलना चाहती हैं?"

वह कुछ उत्तर भी नहीं देने पाई थी कि वृद्ध फिर बोला, "वह मेरा बेटा है। मुझे यह जानने का पूरा-पूरा अधिकार है कि वह किस-किस लड़की से मिलता है और क्यों मिलता है?"

पुष्पा को उसके बोलने का ढंग बिल्कुल पसन्द नहीं आया। गुस्से से उसका चेहरा लाल हो गया। उसने निश्चय कर लिया कि वह तुरन्त वापस लौट जाएगी। इतने में एक नवयुवती आई और दूर से ही मुस्कराकर बोली, "अरे! आप पुष्पा जी हैं क्या?

"जी हां।"

उस युवती ने उसका हाथ थामकर कहा, "आइए! आपकी ही प्रतीक्षा थी। मैं कमलजीत की छोटी बहन हूं। मेरा नाम ममता है।"

ममता बड़े प्रेम से पुष्पा को भीतर ले गई। सोफे पर बैठते हुए पुष्पा

बोली, "आपके पिताजी ने तो मुझे डांटना ही शुरू कर दिया था···आप न आतीं तो न जाने···"

"पिताजी ? ओ···हां···वह···"

इतने में एक और वृद्ध अन्दर आया। उसने आवाज़ दी, "ममता बेटी·· मेरा धूप का चश्मा कहा है ?"

ममता बाप का चश्मा ढूंढ़ने दूसरे कमरे में चली गई। पुष्पा सोच में डूब गई कि जो बूढ़ा उसे फाटक पर मिला था, वह कौन था ! फिर एका-एक उसे इस बात का आभास हुआ कि वह बूढ़ा वास्तव में कमलजीत ही था। उफ़ ! वह कैसी मूर्ख बनी। उसे पहचानना कुछ भी कठिन नहीं था। वास्तव में वह घबराहट के कारण उसे वृद्ध के मेकअप में भांप न सकी।

ममता लौटकर कमरे में आई तो पुष्पा बोली, "आपके भाई साहब ने तो खूब उल्लू बनाया मुझे। मैंने अधिक ध्यान नहीं दिया, वरना उन्हें तुरन्त पहचान जाती।"

तभी कमलजीत भीतर आकर बोला, "इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूं। आपका आभारी हूं कि आप राखी बांधकर मुझे अपना भाई बनाने के लिए चली आईं।"

पुष्पा ने व्यंग्य से उत्तर दिया, "जी मुझे आप जैसे व्यक्ति को भाई बनाने का कोई भी चाव नहीं है। मैं तो केवल आपसे पीछा छुड़ाने के लिए राखी बांधने चली आई।"

कमलजीत ने कलाई आगे बढ़ाते हुए कहा, "यह बात मैंने पहले ही स्पष्ट कर दी थी कि मैं आपका पीछा नहीं छोड़ूंगा। यदि आपसे अपना काम न निकालना होता तो मैं आपके मुंह से इतनी गालियां क्यों सुनता ? प्रेम की राह पर चलने वालों को बहुत कुछ सहन करना पड़ता है।"

यह सुनकर पुष्पा का चेहरा शर्म से लाल हो गया। सोचने लगी कि यह विचित्र व्यक्ति है···एक ओर मुझे अपनी बहन बना रहा है और दूसरी ओर प्रेम के इशारे भी कर रहा है।

पुष्पा राखी बांध चुकी तो कमलजीत ने दस रुपये का एक नोट उसकी हथेली पर रख दिया। ममता ने उसका हाथ थामकर कहा, "आपको खाना खाए बिना हम नहीं जाने देंगे।"

"नहीं···घर के मेरा इन्तज़ार हो रहा होगा। मैं घरवालों को कुछ बताकर भी तो नहीं आई।"

पुष्पा का कोई बहाना चल नहीं पाया। उसे रुकना ही पड़ा। कमलजीत भोजन से पहले बाज़ार से कुछ सामान लेने के लिए चला गया। ममता पुष्पा के कन्धे पर हाथ रखकर बोली, "बहन! मेरे भाई की बातों का बुरा न मानें। वह मन के साफ हैं।"

ममता ने बताया कि वे दो भाई और दो बहनें हैं। कमलजीत सबसे बड़ा है। दस साल का राकेश सबसे छोटा है। छोटी बहन गीता बम्बई में एक बड़ी फर्म में नौकरी कर रही है और अच्छा वेतन पा रही है। अन्त में ममता ने कहा, "आपको पाकर तो यों लगता है कि हम दो नहीं तीन बहनें हैं।"

पुष्पा हंस दी, "जी हां, मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

तब ममता ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, "मेरे विचार में अब मुझे यह भी बता देना चाहिए कि भैया हाथ धोकर आपके पीछे क्यों पड़े हैं।"

ममता ने जैसे पुष्पा के मन की बात कह दी। वह स्वयं यह जानने के लिए उत्सुक हो रही थी। परन्तु वह मुंह से कुछ नहीं बोली।

ममता ने रहस्यपूर्ण अन्दाज़ से कहा, "बात यह है कि भैया को प्रेम हो गया है एक लड़की से···इसीलिए वह आपके पीछे पड़े हैं।"

पुष्पा आश्चर्य से बोली, "अजीब बात है। उन्हें प्रेम तो हुआ है किसी और लड़की से लेकिन हाथ धोकर पीछे मेरे पड़े हैं—वह क्यों?"

"इसलिए कि वह लड़की आपकी सहेली है।"

पुष्पा सोच में डूबकर बोली, "मैं ऐसी किसी लड़की को नहीं जानती जो आपके भइया से प्रेम करती हो।"

"ओह! आप समझी नहीं···वह लड़की तो भइया को जानती भी नहीं···और न भइया उसे जानते हैं। वह लड़की इस शहर की है भी नहीं। शायद वह आपके घर में कुछ दिनों के लिए आकर ठहरी थी। फिर वह अपने शहर लौट गई। भैया ने उसे आपके साथ कई बार आते-जाते देखा। उसका नाम भी जान गए। वह यहां से चली गई तो परेशान हो उठे। इनके पास इसके सिवा कोई चारा न था कि आपका सहारा लें···"

"उस लड़की का नाम?"

"दीपा!"

"ओ! दीपा!···अब समझी···लेकिन वह तो बहुत धनी परिवार

की लड़की है। जहां तक मैं जानती हूं शादी के विषय में उसके विचार बहुत ऊंचे हैं। फिर भी यदि आपके भाई साहब अपनी तकदीर आजमाना चाहते हैं तो मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है। कमलजीत जी अब तो मेरे भी भैया बन गए हैं। जो मदद वह चाहेंगे सो मैं कर दूंगी।"

इस तरह उनकी मीठी-मीठी बातें होती रहीं। कमलजीत भी बाजार से लौट आया। पुष्पा बहुत जल्दी कमलजीत के घरवालों से घुलमिल गई।

जब भोजन समाप्त हो गया पुष्पा उनसे विदा होकर रिक्शे में बैठी और अपने घर पहुंची।

मां ने उसे देखते ही पूछा, "अरी बेटी! आज तू कहां गायब हो गई थी। यह भी नहीं बताया कि किसे राखी बांधने गई थी?"

पुष्पा जोर से हंस दी। कहने लगी, "वाह! गायब कहां होती? मुझे वहां खाने के लिए रोक लिया गया। मैं आपको सूचित भी नहीं कर सकी।"

"तू घर से चलते समय ही बता जाती।"

"पर माताजी! मुझे खुद भी नहीं मालूम था कि मुझे खाने पर रुकना पड़ेगा। उन्होंने मुझे बिल्कुल विवश कर दिया।"

"वे कौन थे?"

पुष्पा ने थोड़ा-बहुत बता दिया, लेकिन सारी बात नहीं बताई। मां के मन में सन्देह उठा। आगे को झुककर पूछा, "क्या उनके यहां कोई लड़का है? वे अकारण ही तुममें दिलचस्पी नहीं ले सकते।"

इस बात पर पुष्पा खूब हंसी। और फिर उसने सारी बात पर से पर्दा उठा दिया।

मां चिन्ता व्यक्त करते हुए बोली, "यह तो अच्छा नहीं हुआ।"

"क्यों, मां?"

"क्या तुझे नहीं मालूम कि तेरे मामा के लड़के रमेश और दीपा के रिश्ते की बातचीत चल रही है?"

"नहीं तो।"

"तू यह तो जानती ही है कि तेरे मामा कैसी तबियत के आदमी हैं। और फिर रमेश भी तुझे कितना चाहता है। तू भी उसको चाहती है। आखिर वह भी तो तेरा भाई है। रमेश और तेरे मामा कितना बुरा मानेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि तू दीपा के मामले में किसी

और लड़के की मदद कर रही है।"

"यह तो वाकई मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। पर मां मुझे तो इस बात का कुछ भी पता नहीं था। वरना भला मैं इस मामले में अपनी टांग क्यों अड़ाती!"

"अब तो इस बारे में कुछ सोचना पड़ेगा।"

जिस मकान में कमलजीत और उसके परिवार के लोग रहते थे, उसकी बगल में एक बहुत बड़ा बंगला था। बंगले के चारों ओर पर्याप्त भूमि थी, जिसमें बाग, विशाल लॉन और टेनिस कोर्ट बना हुआ था। बंगले के मालिक थे रामलाल पुरी। उनकी उम्र लगभग चालीस वर्ष थी। पत्नी आठ वर्षीया पुत्री को छोड़ स्वर्ग सिधार चुकी थी। रामलाल जी काफी स्वस्थ थे। धन का अभाव नहीं था। बड़े सज्जन पुरुष समझे जाते थे। किसी सांसारिक वस्तु का अभाव नहीं था, परन्तु उनका मन सूना-सूना रहता था। अब पत्नी के बिना रहना उनके लिए कठिन हो रहा था।

पुरी साहब की माताजी अभी जीवित थीं। जब कभी इस विषय पर बात चलती तो वह कहतीं, "बेटा! लगता है कि मैं चैन से मर भी नहीं सकूंगी।"

"माताजी! यह बैठे-बैठे आप कैसी बातें करने लगती हैं। अभी आप खूब स्वस्थ हैं। मरें आपके शत्रु!"

पुरी साहब मन में जानते थे कि मां को दुविधा क्या थी। परन्तु जान-बूझकर अनजान बन जाते।

माताजी फिर कहतीं, "बेटा! संतान कभी अपने मां-बाप के मन की दशा को नहीं समझ सकती।"

"अच्छा तो आप यही चाहती हैं न कि मैं दूसरी शादी कर लूं?"

"हां···सोचने की बात है कि जब तेरी बेटी रेखा बड़ी हो जाएगी तो शादी के बाद पति के घर चली जाएगी। फिर क्या तू अकेला नहीं रह जाएगा?"

"यह सब तो मैंने मान लिया। सवाल यह है कि मुझसे शादी करेगी कौन?"

"अरे ! मैं पूछती हूं तुममें कमी किस बात की है ? अभी तूने चालीस र्ष भी पूरे नही किए। सेहत भी अच्छी है। ईश्वर का दिया सब कुछ घर ां है। लड़की वालों को और क्या चाहिए ?"

"यह केवल मां का दिल बोल रहा है। लोग इस ढंग से नहीं सोचते। नकी दृष्टि में मेरी उम्र बहुत अधिक है। और सबसे बड़ी बात यह कि मैं वेधुर हूं।"

"इसके बावजूद यह भी तो ठीक है कि आजकल लड़की वालो से कतना दहेज मांगा जाता है। लड़के वालो के नखरों की कोई सीमा भी ? ?"

"वह सब ठीक है, लेकिन माताजी, लडकी वाले पुराने रीति-रिवाजों ी दलदल से अपने आपको निकाल नही पाते। घर मे बैठकर हम जो चाहें ातें करें, मगर जब हम लड़की ढूंढने निकलेंगे तो वास्तविकता का पता लेगा।"

"लड़की तो बगल में मौजूद है।"

"आप किसका जिक्र कर रही हैं ?"

"मेरा मतलब ममता से है।"

"ममता ?"

"हां।"

पुरी साहब कुछ देर को चुपचाप सोच मे डूब गए। माताजी ने पुनः कहना आरम्भ किया, "दो बहनें है वे। बडी बम्बई मे रहती है। वही ौकरी करती है। अगर उनके पास कुछ होता तो कुंआरी और नौजवान लड़की को इतनी दूर नौकरी करने क्यों भेजते ? खैर, वह तो शायद वही र किसी से शादी कर ले, लेकिन जो लडकी यहा पर है उसका क्या बनेगा ?"

"मैं बताती हूं कि उसका क्या बनेगा !"

यह स्वर पीछे से सुनाई दिया। उन दोनो ने मुड़कर देखा तो वहा बूढ़ी चाची खड़ी थी। पुरी साहब ने कुर्सी से कुछ ऊपर को उठते हुए कहा, 'आओ चाची ! तुम्हारे आने का तो हमें पता ही नहीं चला।"

चाची पान चबाते हुए बोली, "अरे बेटा, अपना घर है। जब जी चाहा चले आए।"

माताजी बोल उठी, "सो तो ठीक है ! अपने घर मे कोई ढोल पीट

र थोड़े ही आता है—जो बात यहां चल रही थी सो यह थी…"

चाची ने बीच में ही ही टोकते हुए कहा, "वह सब मैं समझ गई। नौकर को बुलाकर ज़रा चाय के लिए कह दो। तब इत्मीनान से इस बारे में बातचीत की जाए।"

पुरी साहब ने तुरन्त नौकर को बुलाया और चाय-नाश्ता लाने का आदेश दिया।

यह चाची वास्तव में जगतचाची थी। सारा दिन घर-घर घूमना उसका काम था। एक घर की खबर दूसरे घर पहुंचाने में उसे बड़ा आनन्द मिलता था। कुछ घरों से उसकी खूब पटती थी। उन्हीं में से पुरी साहब का घर भी था।

चाय की चुस्की लेते हुए चाची ने कहना आरम्भ किया, "पते की बात बताती हूं आपको। ममता की शादी बड़े घराने में करने के लिए उन लोगों ने एक विशेष तरकीब निकाली है।"

"वह क्या?" पुरी साहब और उनकी माताजी एक साथ ही बोल उठे।

चाची ने उन दोनों की ओर बारी-बारी से बड़े रहस्यपूर्ण अन्दाज़ से देखा और कहा, "कमलजीत के लिए एक बड़े घर की लड़की को फांसने की योजना बनाई जा रही है। लड़की वालों से जो धन प्राप्त होगा उसी से ममता की शादी का काम चलाया जाएगा।"

पुरी साहब मां की ओर देखते हुए मुस्करा दिए और फिर बोले, "लीजिए माताजी, आपकी यह योजना भी अधूरी रह गई। मैंने कहा न कि आप अब मेरी शादी का विचार मन से निकाल दीजिए।"

यह सुनकर चाची के कान खड़े हो गए। उसने सोचा कि इस घर से खाने-पीने का यह सुनहरा अवसर हाथ से नहीं जाना चाहिए। तुरन्त बोल उठी, "बेटा पुरी! तुमने पहले क्यों नहीं बताया कि तुम्हें ममता में दिलचस्पी है…?"

पुरी साहब बोले, "अजी मुझे क्या दिलचस्पी होगी। बस माताजी के सिर पर भूत सवार रहता है।"

चाची ने बात बनाते हुए कहा, "नहीं बेटा, ऐसा नहीं कहा करते। मां सदा अपनी सन्तान का भला ही सोचती है।"

पुरी साहब कटु स्वर में बोले, "मगर चाची, इनके सोचने से क्या

होता है!"

"होता क्यों नहीं ?" चाची ने सान्त्वना देते हुए कहा, "मुझे ज़रा पहले पता चल जाता तो और भी अच्छा होता। खैर! अब भी कुछ नहीं बिगड़ा।"

पुरी साहब उसी कटुता भरे स्वर में कह उठे, "झूठे आश्वासन मत दो, चांची। अब इस सिलसिले में कोई भी बात चलाना बेकार होगा।"

"बेकार कैसे होगा ?" चाची ने बात जारी रखते हुए कहा, "आखिर उन लोगों को धन ही तो चाहिए न—मैं उन्हें ऐसी उल्टी पट्टी पढ़ाऊंगी कि बस विवश होकर रह जाएंगे। मैं उनसे कहूंगी कि किसी धनी लड़की के मां-बाप को पटाना सरल नहीं है। इसमें तो यही बेहतर है कि पहले ममता की किसी धनी व्यक्ति से शादी कर दी जाए। इससे कमलजीत का रिश्ता भी किसी धनी घराने में आसानी से तय हो जाएगा।"

नागपुर विश्वविद्यालय में देश के समस्त विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्रों की वाद-विवाद प्रतियोगिता होने वाली थी। दीपा भी वहां जाने की तैयारी कर रही थी। जिस दिन वह गाड़ी पर सवार होने को थी उसी रोज उसे अपनी सखी पुष्पा का एक पत्र मिला। उसमें लिखा था.

"प्यारी दीपा,

बहुत छोटा-सा पत्र लिख रही हूं। उद्देश्य केवल तुमको सावधान करना है। हमारे नगर का एक छात्र कमलजीत भी इस प्रतियोगिता में भाग लेने नागपुर जा रहा है। संभव है कि वह तुमसे मुलाकात करने की कोशिश करे। उससे ज़रा होशियार रहना। उसकी लच्छेदार बातों में मत आना। शेष फिर···तुम्हारी, पुष्पा"

दीपा को यह पत्र पढ़ कर बड़ा आश्चर्य हुआ। समझ में नहीं आया कि ऐसा खतरनाक युवक कौन था जिससे सावधान करना पुष्पा ने इतना आवश्यक समझा। जब वह दिल्ली से नागपुर जाने वाली गाड़ी में बैठी तो उसके साथ एक और सखी भी थी जिसका नाम रानी था। वे दोनों गप्पें लड़ाती रहीं। सफर सरलता और प्रसन्नता से कट गया।

नागपुर में उनके रहने का प्रबन्ध एक क्लब में किया गया था।

कोठीनुमा बिल्डिंग थी। चारों ओर बाग था। सबसे बड़ा आकर्षण क्लब में बना हुआ स्वच्छ जल का तालाब था। दीपा ने अपनी सखी से चहक कर कहा, "रानी ! यहां नहाने और तैरने में खूब मजा आएगा।"

"लेकिन संभल कर नहाना। अभी हमें बहुत अच्छी तरह तैरना कहां आता है ?"

"इस तालाब में किस बात का भय ! भय तो नदी या समुद्र में होता है ?"

वैसे तो छात्रों और छात्राओं को पृथक-पृथक खण्डों में ठहराया गया था, परन्तु बाग में और इधर-उधर सभी ही स्वतंत्रता से घूम रहे थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही दीपा की आंख खुल गई। उसने रानी को भी जगा दिया। रानी ने आंखें मलते हुए खीज कर पूछा, "क्या बात है भई ? क्यों नींद खराब कराती हो ?"

"इस समय तालाब पर कोई नहीं है। चलो नहाने चलें। बड़ा मजा आएगा।"

रानी का मन नहीं हो रहा था, लेकिन दीपा के सामने उस की एक न चली। विवश होकर वह सखी के साथ तालाब पर जा पहुंची। तैरने के वस्त्र पहन कर वे तालाब में कूद पड़ीं। वाकई खूब मजा आ रहा था।

आरम्भ में वहां कोई नहीं था, लेकिन थोड़े समय बाद कुछ लोग टहलते हुए वहां आ गए। दोनों सखियों ने इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उनसे साहस पाकर दो-चार लड़कियां और भी नहाने चली आईं। लड़कों ने इतनी शराफत दिखाई कि वे तालाब में नहीं कूदे। बस दूर से ही नहाती हुई लड़कियों की चुहलें देखते रहे।

दीपा शेखी में आकर बोली कि वह तालाब को एक सिरे से दूसरे सिरे तक तैर कर पार करेगी। रानी ने मना करना चाहा परन्तु यह सोच कर चुप रह गई कि दीपा ने अपनी सामर्थ्य का अनुमान लगा ही लिया होगा।

वही हुआ जिसका रानी को भय था। तीन-चौथाई तालाब पार कर जाने के बाद दीपा का दम टूट गया। वह डुबकियां खाने लगी। बेचारी रानी ने शोर मचाना आरम्भ कर दिया।

डूबती हुई दीपा की आंखों के सामने मौत नाचने लगी। पांच गज परे किनारा था। वह वहां तक नहीं पहुंच सकती थी, और मौत उसे तेजी से अपने अंक में दबोचने चली आ रही थी।

एकाएक ही उसे आभास हुआ जैसे किसी शक्तिशाली हाथ ने उसके गिरवान वालों को पीछे से पकड़ कर उसके डूबे हुए सिर को पानी से बाहर निकाल दिया है। उसका शरीर अब भी पानी में डूबा हुआ था। इसी दौरान वह मूर्च्छित हो गई।

जब उसको होश आया तो उसने अपने-आपको पेट के बल लेटे पाया। जो पानी उसके भीतर चला गया था उसे निकाला जा रहा था। आखिर उसे चित्त लिटा दिया गया। ईश्वर की दया से वह बच गई थी। परन्तु डूबते समय उसे बचाने के लिए तालाब में कौन कूदा? पकड़ किसी पुरुष की ही थी।

रानी ने उंगली के संकेत से बताया कि 'उस' युवक ने तालाब में छलांग लगाकर, अपने प्राण खतरे में डालकर, उसका जीवन बचाया था।

उस समय तक रानी ने उसके शरीर को एक बड़े तौलिए में लपेट दिया था। दीपा ने एक नजर उस युवक पर डाली और आखें नीची कर ली। धीरे से बोली, "आपने मुझे दूसरा जन्म दिया है। समझ में नहीं आता कि मैं कैसे आपको धन्यवाद दूं।"

आसपास कई व्यक्ति खड़े हो गए थे लेकिन अब वे पीछे हटकर इधर-उधर बिखरने लगे थे।

युवक बोला, "ऐसी कोई विशेष बात तो है नहीं—मैं इधर आ निकला, आपका दम टूट गया था। ऐसा हो ही जाता है।"

दीपा को लगा कि युवक अपनी जगह कुछ घबराया-घबराया-सा था। वह फिर बोला, "अब आप ठीक हैं। कमरे में जाकर कोई गर्म चीज पी लीजिएगा। अच्छा, मैं जाने की इजाजत चाहता हूं।"

दीपा ने हाथ उठा कर कहा, "रुकिए न! इतनी जल्दी भी क्या है! क्या मैं आपका नाम जान सकती हूं?"

"नाम की बात छोड़िए। मैंने कौन ऐसा तीर मार दिया है!"

"तो हमारे साथ थोड़ी देर के लिए हमारे कमरे में ही चलिए।"

युवक मुस्करा दिया और सहज स्वर में बोला, "यह सब फिल्मों में होता है। मैंने आपकी थोड़ी-सी सहायता कर दी—बस और क्या?"

इतना कह कर वह चल दिया।

कुछ खा-पी कर दीपा की तबियत ठीक हो गई। वह प्रतियोगिता का प्रथम दिवस था। बड़े हॉल में सब छात्र-छात्राएं एकत्र हुए तो दीपा और

रानी ने उन्हीं में उस युवक को बैठे देखा जिसने सुबह दीपा की जान बचाई थी। दीपा का भाषण बहुत पसन्द किया गया। जब मंच पर कमलजीत का नाम पुकारा गया तो वही युवक सीट से उठकर वहां गया। उसका भाषण भी बड़ा ज़ोरदार रहा। रानी ने दीपा की पसलियों में कोहनी का टहोका देते हुए फ़ुसफ़ुसा कर कहा, "यह हज़रत तो बड़े गुरू निकले। देखने में कितने बुद्धू नज़र आते हैं।"

"बात तो ठीक कहती हो।"

दो दिन में कार्यक्रम समाप्त हो गया। दूसरे दिन संध्या को प्रतियोगिता का परिणाम सुनाया गया। लड़कियों में दीपा और लड़कों में कमलजीत सर्वश्रेष्ठ रहे। उन्हें खूब बधाइयां मिलीं। दीपा ने सोचा कि जब सब लोग हॉल से बाहर जाने लगेंगे तो वह भी स्वयं कमलजीत को बधाई देगी। परन्तु भीड़भाड़ में कमलजीत का कुछ पता ही नहीं चला। न जाने वह कहां चला गया। दीपा को लगा जैसे वह जानबूझकर वहां से खिसक गया था।

दीपा का मन उदास हो गया। उसी रात ग्यारह बजे की गाड़ी से वह दिल्ली लौट रही थी। क्या जाने से पूर्व वह ऐसे अच्छे इन्सान से एक बार मिल भी नहीं सकेगी?

उसकी यह दशा देख कर रानी ने कहा, "मेरे ख्याल में या तो वह शहर में किसी सम्बन्धी से मिलने गया होगा, या फिर यहीं कहीं होगा। क्यों न उसे बाग में तलाश किया जाए? मौजी आदमी लगता है, सम्भव है कि वह इतने बड़े बाग के किसी कोने में बेंच पर बैठा हो।"

यह सोचकर दोनों सखियां बाग में घुस पड़ीं। इधर-उधर घूमती रहीं। दीपा लगभग निराश हो चुकी थी। रानी ने भी उसे कोहनी मार कर उंगली से एक ओर को संकेत करते हुए कहा, "वह रहा तुम्हारा कमलजीत।"

दीपा का हृदय खिल उठा। वह अपनी सखी का हाथ थाम कर बोली, "रानी!' तू चुपके से खिसक जा। देख कोई शरारत न करना। तुझे मेरी कसम!'

रानी वहां से खिसक गई और दीपा चुपचाप पीछे से कमलजीत के निकट पहुंच गई। एकदम चौंक कमलजीत ने दीपा की ओर घूम कर देखा। उसे अकेली पाकर बोला, "अरे! आप अकेली?"

"तो क्या हुआ। आप हौआ तो नहीं हैं जो मुझे खा जाएंगे।"

"नहीं नहीं, ऐसी बात नहीं। मेरा मतलब यह था कि आपकी सखी रहा है।"

"उनसे मिलने को बहुत मन चाहता हो तो बुलाऊं उसे…"

"जी नहीं……आप में भी भला किस बात की कमी है।"

"कुछ कमी तो होगी वरना…"

"वरना क्या…"

"वरना आप इस कदर दूर-दूर क्यों भागते ?"

"मैं आपसे दूर क्यों भागने लगा ?"

"इसकी वजह तो आपको ही मालूम होगी। मैं तो केवल यह जानती हूं कि कल सुबह आपका नाम पूछा तो आप गोल कर गए। आपको अपने कमरे में बुलाया तो भी आप टाल गए। कुछ देर पहले सोचा कि आपको बधाई दूं तो आंख बचाकर चलते बने। इसका मतलब यही हुआ न कि आपको मुझमें जरूर कोई कमी नजर आती है।"

"मैं इसके लिए क्षमा चाहता हू। वास्तव में अपने विचारों में खोए रहने की मेरी पुरानी आदत है—भूल जाइए इन बातों को और मेरी ओर से अपनी सफलता के लिए बधाई स्वीकार कीजिए। आप तो बड़े जोरदार अन्दाज से बोलीं। मुझे आशा नहीं थी कि आप…"

दीपा बात काट कर बोली, "आप समझे होंगे कि मैं केवल डूबना ही जानती हूं।"

इस पर वे दोनों हंसने लगे।

बात आगे बढ़ाते हुए दीपा ने कहना आरम्भ किया, "आप लखनऊ से आए हैं न ?"

"जी हां ! आपको कैसे पता चला ?"

"अजी ताड़नेवाले कयामत की नजर रखते हैं।"

"आपकी नजर की जितनी भी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है, लेकिन फिर भी बताइए तो सही कि आपको इस बात का पता कैसे चला ?"

"आपके रंग-ढंग से।"

"आप टाल रही हैं। खैर ! इतना मैं भी बता सकता हू कि आप दिल्ली से आई हैं।"

दीपा कहकहा लगा कर हंसते हुए बोली, "आपका भी जवाब नहीं है। च्छा अब तो हम अटे-पटे हो गए। मैं आपसे फिर पूछती हूं कि आप मुझसे दूर-दूर क्यों भाग रहे थे। यह कहना व्यर्थ है कि आप ऐसा नहीं र रहे थे। अब ज़रा गम्भीर होकर मेरी बात का उत्तर दीजिएगा।"

कमलजीत चुप होकर रह गया। दीपा ने फिर सवाल उठाया, "आप ख़ामोश क्यों हो गए ?"

"मैं गम्भीर होने की कोशिश कर रहा था।"

दीपा खिलखिलाकर हंसने लगी। हंसी थमी तो बोली,"अच्छा, मज़ाक काफी हो चुका। अब मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए।"

"मैं हड़बड़ा गया था।"

"हड़बड़ा गए थे?"

"मैं वास्तव में डर गया था।"

"कभी हड़बड़ा गए, कभी डर गए···वास्तव में हुआ क्या था ?··· और ऐसा क्यों हुआ ?"

कमलजीत हाथ उठा कर बोला, "अब आप भी ज़रा गम्भीर हो जाइए—मेरे हड़बड़ाने का कारण यह था कि जिस लड़की को मैंने डूबने से बचाया वह वही लड़की थी जो मेरे सपनों में बसी हुई थी···"

यह सुनकर दीपा अवाक् हो गई।

कमलजीत ने अपने होंठों पर उंगली रखते हुए कहा, "आप कुछ मत बोलिएगा। अब मुझको ही बोलने दीजिए—हां तो, मेरे डर जाने का कारण यह था कि जब मैं आपको तालाब से बाहर लाया और मैंने आपको पहचान लिया तो अनायास ही मेरे मन में ख्याल उठा कि हे ईश्वर! यदि मैं आपको न बचा पाता तो क्या होता। मैं किसके सहारे जीवित रहता···"

यह सब सुनकर दीपा अपने विचारों में खो-सी गई। कमलजीत बोलता चला गया, "जो बातें मैं नहीं कहना चाहता था वे आपने मेरे मुंह से कहलवा लीं। आपने मुझे यह सब कहने पर विवश कर दिया।"

दीपा की आंखें डबडबा आईं। वह मन्द स्वर में बोली, "जहां तक मुझे याद पड़ता है हम दोनों पहले कभी नहीं मिले। या फिर मेरी स्मृति मुझे धोखा दे रही है।"

"जी नहीं, आपकी स्मृति धोखा नहीं दे रही···क्योंकि केवल मैंने ही आपको देखा था—आपने नहीं।"

"कहां देखा था आपने मुझे ?"

"लखनऊ में—आप वहां अपनी एक सखी के पास कुछ दिनों के लिए आई थीं। आपकी उस सखी का नाम पुष्पा है। ठीक कह रहा हूं न ?"

"क्या आप पुष्पा को जानते थे ?"

"उस समय तो नहीं, लेकिन अब जानता हूं। उनके द्वारा आपको पाने के लिए मैंने उन्हें अपनी बहन बनाया। यह कहानी अपने आप में बड़ी दिलचस्प है।"

कमलजीत ने पूरा किस्सा कह सुनाया। यह सब सुनकर दीपा सिसकियां भरने लगी। कमलजीत ने उसके कांपते हुए कंधे पर हाथ रखकर घबराए हुए स्वर में कहा, "अरे ! आप रोने क्यों लगीं ?"

दीपा ने उसके गले में बाहें डालकर कहा, "वचन दीजिए कि अब आप मुझे कभी नहीं छोड़ेंगे।"

"इसमें वचन देने की क्या बात है ! मैं आपको छोड़ना भी चाहूं तो नहीं छोड़ पाऊंगा। आपके बिना मेरा जीवन अर्थहीन होकर रह जाएगा।"

विदा होने की घड़ी आ पहुंची थी। दोनों एक-दूसरे को टकटकी बांधकर काफी देर तक देखते रहे। आखिर ठंडी सांस भरकर विदा हुए।

अपने कमरे में पहुंचकर दीपा ने रानी को सब कुछ बता दिया। और फिर अन्त में बोली, "यह बात समझ में नहीं आई कि जिस लड़की को कमलजीत ने बहन बनाया उसी ने मुझे उससे बचकर रहने को क्यों लिखा ? मैं पुष्पा को ऐसी लड़की तो नहीं समझती थी।"

"पुष्पा को पत्र लिखकर यह बात पूछ लो न !"

"नहीं ! पत्र में ऐसी बात लिखना उचित नहीं होगा। और फिर पूछने की ज़रूरत भी क्या है। असलियत अपने आप एक दिन खुलकर रहेगी।"

गाड़ी बम्बई के स्टेशन पर पहुंचने वाली थी। मगर कमलजीत अब भी दीपा के ख्यालों में खोया हुआ था। जब गाड़ी की गति धीमी पड़ गई तो वह चौंका। जल्दी से सामान समेटा। फिर उसने दरवाज़े में से झांककर देखा तो प्लेटफार्म पर भीड़ में गीता खड़ी दिखाई दी। उसने हाथ हिलाया तो गीता की दृष्टि उस पर पड़ी। वह भी ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाने लगी।

गाड़ी के रुकते ही कमलजीत छलांग लगाकर नीचे उतरा। उधर से गीता लपकी। दोनों एक-दूसरे से लिपट गए। कुछ देर तक तो उनके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका। अन्त में भाई ने पूछा, "कहो गीता! अच्छी तो हो न?"

"बहुत अच्छी हूं, भइया! आप अपनी कहिए न।"

"मैं तो तुम्हारी आंखों के सामने खड़ा हूं। 'वन पीस'!"

"घर में सब लोग अच्छी तरह से हैं न?"

"हां, सब बिल्कुल ठीक-ठाक हैं।"

इतने में कमलजीत ने देखा कि उसकी बहन के साथ एक लम्बे कद का सुन्दर युवक भी था। गीता उसके मन की बात को भांप गई। युवक का परिचय देते हुए बोली, "भइया इनसे मिलिए। यह हैं हमारी फर्म के मालिक के सुपुत्र, सुनील।"

सुनील ने हाथ आगे बढ़ाकर हंसते हुए कहा, "आपके विषय में मैं पहले से सब कुछ जानता हूं। आप से मिलकर बहुत खुशी हुई।"

"मुझे भी!" यह कहते हुए कमलजीत ने सुनील से हाथ मिलाया और मन ही मन सोचने लगा कि गीता ने पहले से ही सुनील के विषय में उसे विस्तार से क्यों नहीं लिख दिया। इस प्रकार अचानक ही आश्चर्य का एहसास न होता। जिस अन्दाज़ से वे एक-दूसरे की ओर मीठी-मीठी नज़रों से देखते थे उससे कमलजीत को यह समझने में देर नहीं लगी कि वे दोनों एक-दूसरे के काफी निकट हो चुके थे।

इसी बीच सुनील ने कुली को बुलाया। सामान उठवाकर वे तीनों स्टेशन से बाहर निकले।

कमलजीत की आंखें टैक्सी की तलाश में इधर-उधर दौड़ने लगीं। इतने में एक वर्दीधारी ड्राइवर सामने खड़ी लम्बी इम्पाला कार में से उतरा और उसका सामान डिक्की में रखवाने लगा।

सुनील कार चलाने बैठ गया और ड्राइवर भी अगली सीट पर मालिक की बगल में बैठ गया। कार चली तो गीता ने पिछली सीट पर अपने निकट बैठे भाई के कान में फुसफुसाकर कहा, "कहिए भइया! कुछ रौब पड़ा आप पर?"

कमलजीत मुस्कराया और उसने भी फुसफुसाकर उत्तर दिया, "हां भई, रौब तो खूब पड़ा। लेकिन यह क्या गड़बड़ घोटाला है?"

गीता ने होंठों पर उंगली रखते हुए कहा, "अभी चुप रहिए—पीछे ही आपको सब कुछ पूरे विस्तार से समझा दूंगी।"

एक शानदार बिल्डिंग के सामने पहुंचकर कार रुक गई। गीता ने बताया कि इसी बिल्डिंग के फ्लैट में वह रहती है। ऊपर पहुंचकर कमलजीत ने फ्लैट की सज-धज देखी तो वह चकित रह गया। गीता की बोल-चाल तथा उसके चलने-फिरने के अन्दाज से ऐसा लगता था जैसे वह बचपन से ही रईसी जीवन व्यतीत करती आ रही हो।

गीता ने कहा, "हां तो अब बताइए भइया, क्या पियेंगे ?"

"पहले मैं नहा लूं ''सच पूछो तो अब लंच का समय होने को है। क्यों न भोजन किया जाए ?"

"यह भी ठीक है। आप नहा लें तो मैं भी नहा लूं।"

"वैरी गुड !" कहकर कमलजीत नहाने चला गया। उसने गुसलखाने से ही उच्च स्वर में पूछा, "यह क्या गड़बड़ घोटाला है ?"

"आपका मतलब सुनील से है ?"

"हां !"

"पहले तो आप अपने दिल्लीवाले गड़बड़ घोटाले वाली बात सुनाइए।"

कमलजीत ज़ोर से हंसकर बोला, "गीता ! वह तो बड़े मजे की कहानी है। उसे सुनाने में समय लगेगा।"

गीता चहककर बोली, "यह बात तो मैं जरूर सुनूंगी।"

"जरूर सुनना। भई, तुमसे मुझे सलाह भी करनी है, तुम अपनी सुनाओ।"

"मेरी कहानी लम्बी नहीं है। बस, सुनील मुझ में गहरी दिलचस्पी ले रहा है।"

"कितनी गहरी ?"

"जितनी गहरी हो सकती है—क्यों, आपको कोई आपत्ति तो नहीं है ? आप मेरे बड़े भाई हैं। मैं आपकी आज्ञा के बिना तो इस सिलसिले में एक कदम भी उठाना पसन्द नहीं करूंगी।"

"वाह ! भला मैं क्यों अड़चन बनने लगा ? भाई के नाते केवल इतना ही कहूंगा कि लड़कियां पढ़ी-लिखी होने पर भी आवश्यकता से अधिक भावुक होती हैं। औरत या लड़की जब ऐसे मामले में पड़ती है तो अपने-

आपको पूर्णरूपेण मर्द को सौंप देती है। लेकिन मर्द के मामले में ऐसा होना आवश्यक नहीं है। यानि मर्द सच्चे मन से भी प्यार कर सकता है, और यह भी सम्भव है कि वह किसी लड़की के रूप और यौवन को लूटने के लिए झूठा प्यार जताता रहे।"

"इसका मतलब है कि मेरे भैया को सुनील पर कुछ शक हो रहा है।"

"नहीं, मैं सुनील के विषय में कुछ नहीं कह रहा हूं। उसे तुम मुझसे बेहतर समझ सकती हो। मैंने तो एक साधारण बात की ओर संकेत किया है। किसी भी लड़की के लिए मर्द की 'नेचर' समझना बहुत ज़रूरी है।"

"मैं इतना बता देना चाहती हूं कि मैं सुनील या किसी और के झांसे में आकर अपनेआपको बर्बाद करने वाली नहीं हूं···"

"बस ! बस ! मेरा यही मतलब था। हमारे समाज में मर्द किसी तरह भी बर्बाद नहीं होता, बेचारी औरत ही तबाह होती है।"

"मैं अच्छी तरह जानती हूं कि मेरे भाई से अधिक मेरा भला कोई और नहीं सोच सकता। अब आप दो-चार दिन तो यहां रहेंगे ही···आप भी इस बात का अनुमान लगाने की कोशिश करिएगा कि सुनील वास्तव में कैसा आदमी है।"

"हां ! तुम्हारा यह सुझाव अच्छा है।"

कमलजीत केवल चार दिन वहां रहा। सुनील से मिलने-जुलने, हंसने-बोलने और उसे समझने के अवसर भी मिलते रहे। वहां से चलते समय कमलजीत ने बहन से कहा, "सुनील अच्छा लड़का मालूम होता है। बातों में उसने इशारा किया है कि शादी-विवाह के मामले में वह रुपये-पैसे को महत्त्व नहीं देता। यह तो उसने गोया एक तरह से अपना विचार प्रकट किया है। लेकिन उसने अभी तक मुझसे या तुमसे यह बात नहीं कही कि वह तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता है। शायद वह तुम्हें अभी और भी गहराई से समझने की कोशिश कर रहा है। अगर यही बात है तो भी मैं उसकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। वे लोग सचमुच छिछोरे होते हैं जो एकाध मुलाकात में ही लड़की के सामने शादी का प्रस्ताव पेश

कर देते हैं। यदि वे यह हरकत छिछोरेपन से न करें तो समझ लेना चाहिए कि वे शादी का प्रस्ताव लड़की को बेवकूफ बनाने के लिए पेश कर रहे हैं। मैं तो यही सलाह दूंगा कि शादी से पहले सुनील को या किसी भी लड़के को बहुत अधिक निकट न आने दो। दूसरी बात यह कि यह जानने तक प्रतीक्षा अवश्य करना कि सुनील के मां-बाप किस विचारधारा के हैं। ऐसा न हो कि सुनील उनके सामने झुक जाए और तुम निराशा के महासागर में डूब जाओ।"

"आपकी राय से मैं सहमत हूं। मैं खूब सावधान रहूंगी। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि अधिक भावुक होने से कोई भी इन्सान निराशा का सामना नहीं कर सकता। मेरा मन महसूस करता है कि किसी न किसी दिन सुनील शादी का प्रस्ताव अवश्य रखेगा। उसी समय मैं उसके मां-बाप का ज़िक्र भी कर दूंगी। जो कुछ वह कहेगा उसकी सूचना मैं आपको पत्र द्वारा भेज दूंगी।"

"बहुत अच्छा।"

ये बातें करते समय वे दोनों गाड़ी के डिब्बे में बैठे थे। इतने में गार्ड ने सीटी बजाई और गाड़ी चल पड़ी। गीता जल्दी से गाड़ी से उतर गई।

वह अपने ही विचारों में खोया हुआ था, लेकिन उसे एकाएक ही एहसास हुआ कि कुछ दूरी पर सामने वाली सीट पर बैठी एक लड़की एकटक उसकी ओर देखे जा रही थी। अब उसे याद आया कि जब गीता भीतर बैठी थी तो भी वह उन दोनों को टकटकी बांधकर देख रही थी। जब उसकी नज़र लड़की के चेहरे पर पड़ी तो उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया।

समस्या यह थी कि बातचीत कैसे आरम्भ हो। सम्भवतः लड़की शर्म के कारण पहल नहीं करेगी। वह स्वयं पहल कर सकता था। परन्तु इसके लिए कोई उचित बहाना होना चाहिए।

इतने में उसे याद आया कि गीता ने उसके थर्मस में गर्म-गर्म कॉफी भर दी थी। यद्यपि इस समय कॉफी पीने का कोई खास मूड नहीं हो रहा था, परन्तु बातचीत करने के लिए तो कॉफी का बहाना चल सकता था। क्यों न 'ट्राई' करके देखा जाए?

यह निश्चय करके कमलजीत सीट से उठा और लड़की के निकट पहुंचकर फुसफुसाते हुए बोला, "मेरे पास थर्मस में गर्मागर्म कॉफी भी है

आपको पूर्णरूपेण मर्द को सौंप देती है। लेकिन मर्द के मामले में ऐसा होना आवश्यक नहीं है। यानि मर्द सच्चे मन से भी प्यार कर सकता है, और यह भी सम्भव है कि वह किसी लड़की के रूप और यौवन को लूटने के लिए झूठा प्यार जताता रहे।"

"इसका मतलब है कि मेरे भैया को सुनील पर कुछ शक हो रहा है।"

"नहीं, मैं सुनील के विषय में कुछ नहीं कह रहा हूं। उसे तुम मुझसे बेहतर समझ सकती हो। मैंने तो एक साधारण बात की ओर संकेत किया है। किसी भी लड़की के लिए मर्द की 'नेचर' समझना बहुत जरूरी है।"

"मैं इतना बता देना चाहती हूं कि मैं सुनील या किसी और के झांसे में आकर अपनेआपको बर्बाद करने वाली नहीं हूं···"

"बस! बस! मेरा यही मतलब था। हमारे समाज में मर्द किसी तरह भी बर्बाद नहीं होता, बेचारी औरत ही तबाह होती है।"

"मैं अच्छी तरह जानती हूं कि मेरे भाई से अधिक मेरा भला कोई और नहीं सोच सकता। अब आप दो-चार दिन तो यहां रहेंगे ही···आप भी इस बात का अनुमान लगाने की कोशिश करिएगा कि सुनील वास्तव में कैसा आदमी है।"

"हां! तुम्हारा यह सुझाव अच्छा है।"

कमलजीत केवल चार दिन वहां रहा। सुनील से मिलने-जुलने, हंसने-बोलने और उसे समझने के अवसर भी मिलते रहे। वहां से चलते समय कमलजीत ने बहन से कहा, "सुनील अच्छा लड़का मालूम होता है। बातों में उसने इशारा किया है कि शादी-विवाह के मामले में वह रुपये-पैसे को महत्त्व नहीं देता। यह तो उसने गोया एक तरह से अपना विचार प्रकट किया है। लेकिन उसने अभी तक मुझसे या तुमसे यह बात नहीं कही कि वह तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता है। शायद वह तुम्हें अभी और भी गहराई से समझने की कोशिश कर रहा है। अगर यही बात है तो भी मैं उसकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। वे लोग सचमुच छिछोरे होते हैं जो एकाध मुलाकात में ही लड़की के सामने शादी का प्रस्ताव पेश

कर देते हैं। यदि वे यह हरकत छिछोरेपन से न करें तो समझ लेना चाहिए कि वे शादी का प्रस्ताव लड़की को बेवकूफ बनाने के लिए पेश कर रहे हैं। मैं तो यही सलाह दूंगा कि शादी से पहले सुनील को या किसी भी लड़के को बहुत अधिक निकट न आने दो। दूसरी बात यह कि यह जानने तक प्रतीक्षा अवश्य करना कि सुनील के मां-बाप किस विचारधारा के हैं। ऐसा न हो कि सुनील उनके सामने झुक जाए और तुम निराशा के महासागर में डूब जाओ।"

"आपकी राय से मैं सहमत हूं। मैं खूब सावधान रहूंगी। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि अधिक भावुक होने से कोई भी इन्सान निराशा का सामना नहीं कर सकता। मेरा मन महसूस करता है कि किसी न किसी दिन सुनील शादी का प्रस्ताव अवश्य रखेगा। उसी समय मैं उसके मां-बाप का जिक्र भी कर दूंगी। जो कुछ वह कहेगा उसकी सूचना मैं आपको पत्र द्वारा भेज दूंगी।"

"बहुत अच्छा।"

ये बातें करते समय वे दोनों गाड़ी के डिब्बे में बैठे थे। इतने में गार्ड ने सीटी बजाई और गाड़ी चल पड़ी। गीता जल्दी से गाड़ी से उतर गई।

वह अपने ही विचारों में खोया हुआ था, लेकिन उसे एकाएक ही एहसास हुआ कि कुछ दूरी पर सामने वाली सीट पर बैठी एक लड़की एकटक उसकी ओर देखे जा रही थी। अब उसे याद आया कि जब गीता भीतर बैठी थी तो भी वह उन दोनों को टकटकी बांधकर देख रही थी। जब उसकी नज़र लड़की के चेहरे पर पड़ी तो उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया।

समस्या यह थी कि बातचीत कैसे आरम्भ हो। सम्भवतः लड़की शर्म के कारण पहल नहीं करेगी। वह स्वयं पहल कर सकता था। परन्तु इसके लिए कोई उचित बहाना होना चाहिए।

इतने में उसे याद आया कि गीता ने उसके थर्मस में गर्म-गर्म कॉफी भर दी थी। यद्यपि इस समय कॉफी पीने का कोई खास मूड नहीं हो रहा था, परन्तु बातचीत करने के लिए तो कॉफी का बहाना चल सकता था। क्यों न 'ट्राई' करके देखा जाए?

यह निश्चय करके कमलजीत सीट से उठा और लड़की के निकट पहुंचकर फुसफुसाते हुए बोला, "मेरे पास थर्मस में गर्मागर्म कॉफी भी है

और पीने का मूड भी है। परन्तु अकेले में कुछ मजा नहीं आएगा। क्या आप मेरा साथ दे सकेंगी ? मुझे विश्वास है कि आप मेरी बात का बुरा नहीं मानेंगी।"

लड़की ने झुकी हुई पलकें क्षण-भर को उठाकर कमलजीत की ओर देखा और फिर नजर नीची करके धीरे से बोली, "पी लेंगे।"

"क्या आप अकेली हैं ?"

"जी···।"

कॉफी के छोटे-छोटे मग दोनों के हाथ में थे। लड़की ने एक चुस्की लेकर कहा, "आपको आश्चर्य हो रहा होगा···?"

"किस बात पर ?"

"मेरी बेतकल्लुफी पर।"

"वह क्यों ?"

"इसलिए कि कोई भी हिन्दुस्तानी लड़की किसी अनजाने मर्द के साथ इतनी जल्दी बेतकल्कुफ नहीं होती।"

"ऐसी कोई बात नहीं। ज़माना बदल गया है। आप भी पढ़ी-लिखी हैं, मैं भी पढ़ा-लिखा हूं···और···"

बात काटते हुए लड़की बोली, "इसीलिए कहती हूं कि मुझे ऐसे झांसे मत दीजिए। किसी भी पढ़ी-लिखी समझदार लड़की को किसी भी पढ़े-लिखे समझदार लड़के का इस तरह मक्खन लगाना अच्छा नहीं लगता।"

"अरे आप···आप मुझे ग···ग···गलत···"

"मैं आपको गलत नहीं समझ रही हूं। मैं केवल इतना कहना चाहती हूं कि यदि मैं आपको पहचानती न होती तो फिर हम दोनों में यह बेतकल्लुफी नहीं हो सकती थी।"

कमलजीत पलकें फड़फड़ाते हुए पल-भर को लड़की की ओर देखता रहा और बोला, "इसका मतलब यह है कि हम दोनों एक-दूसरे से परिचित हैं।"

"जी नहीं···आप मुझसे परिचित नहीं हैं, लेकिन मैं हूं।"

"भई कमाल है ! असलियत जो कुछ भी हो, यह तो मेरा सौभाग्य है कि आप मुझे जानती हैं।"

"कुछ दिन पहले आप नागपुर में थे। वहां वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई थी। मैं वक्ताओं में से नहीं, श्रोताओं में से एक थी। आप इसलिए याद

रह गए कि पुरुषों में प्रथम पुरस्कार आप ही को मिला···और लड़कियों में—उसका नाम भूल रही हूं। बाद में मैंने देखा कि आप दोनों एकसाथ बाग में···"

कमलजीत ने हड़बड़ा कर बात काटते हुए कहा, "जी हां, जी हां, आप ठीक समझीं। उनका नाम दीपा था।"

"वह कहां रहती हैं?"

"दिल्ली में।"

"और अब आप दिल्ली ही जा रहे हैं!"

कमलजीत ने चौंककर लड़की की ओर देखा। वह शरारत से हंस दी और बोली, "मैं मानती हूं कि आप अपने नगर को लौट जाना चाहते थे, लेकिन फिर आपने इरादा बदल दिया—दरअसल मैं भी दिल्ली ही जा रही हूं।"

"क्या आप दिल्ली में ही रहती हैं?"

"जी नहीं, वहां मेरे एक रिश्तेदार हैं जिनसे मिलने के लिए जा रही हूं। बम्बई में भी यूं ही घूमने के लिए चली आई थी। दिल्ली में कुछ दिन रहकर लखनऊ लौट जाने का इरादा है। क्योंकि लखनऊ में ही मेरे मां-बाप रहते हैं।"

"लखनऊ?—मैं भी वहीं रहता हूं।"

लड़की ने कहा, "मेरे ख्याल में अब हम दोनों का परिचय हो जाना चाहिए—मेरा नाम अंजू है।"

इस प्रकार उनकी बेतकल्लुफी बढ़ गई और यात्रा के दौरान उनका समय बहुत अच्छी तरह कट गया। दिल्ली पहुंचने से पहले अंजू ने कहा, "मेरा एक सुझाव है, यदि आप स्वीकार करें तो?"

"कहिए।"

"क्यों न हम लखनऊ भी एक साथ ही चलें। बता दीजिए कि आप दिल्ली में कितने दिन टिकेंगे। मैं भी उतने ही दिन रुकूंगी। बल्कि हम दो 'बर्थ' भी 'रिज़र्व' करा सकते हैं।"

पल-भर कुछ सोचने के बाद कमलजीत ने कहा, "इतना [illegible] कि उस रोज सम्भवतः दीपा मुझे 'सी-ऑफ' करने आएगी।"

"बेशक। मैं इस बात का भी ध्यान रखूंगी कि [illegible] करने के लिए दिल्ली के स्टेशन पर मौजूद होगी।"

"शुक्रिया।"

"आपने उसे सूचना दे दी होगी कि आप किस दिन किस गाड़ी से दिल्ली पहुंच रहे हैं।"

"जी हां।"

अंजू आंखें नचाकर चंचलता से मुसकराने लगी।

जब गाड़ी ने दिल्ली के स्टेशन में प्रवेश किया तो सचमुच दीपा प्लेटफार्म पर उपस्थित थी। अंजू ने देखा कि वे दोनों एक दूसरे से आंखें मिलते ही बड़े जोश से हाथ हिलाने लगे।

गाड़ी रुकी, कमलजीत नीचे उतरा तो दीपा बहुत तेज़ी से उसकी ओर बढ़ी और निकट पहुंचकर उसने अपने दोनों हाथ उसके हाथों में दे दिए। उसकी इस हरकत से मानो कमलजीत का शरीर सिर से पांव तक सनसना उठा।

इतने में ही उसकी दृष्टि दीपा के समीप खड़े एक 'अपटुडेट' नवयुवक पर पड़ी जो उन दोनों को घूर-घूरकर देख रहा था। उसका इस प्रकार घूरना कमलजीत को भला नहीं लगा, अतः उसने युवक से पूछा, "आपका परिचय ?"

एकाएक दीपा ने पलटकर देखा और बोली, "यह मेरे साथ हैं। इनका नाम मिस्टर रमेश कुमार है।"

कमलजीत ने फौरन ही रमेश कुमार से हाथ मिलाते हुए कहा, "आप से मिलकर बड़ी खुशी हुई।"

कुली ने सामान उठाया और वे तीनों प्लेटफार्म से बाहर निकले। अंजू पीछे-पीछे थी। फाटक में से गुज़रते समय कमलजीत ने देखा कि अंजू ने दीपा की आंख बचाकर एक तह किया हुआ कागज़ उसकी जेब में डाल दिया और फिर आगे बढ़ गई। अंजू की इस हरकत को रमेश कुमार भी नहीं देख रहा था।

दीपा ने कमलजीत का हाथ दबाकर कहा, "हमारी कार उधर 'स्टैण्ड' पर खड़ी है।"

रमेश कुमार आगे-आगे जा रहा था। कमलजीत ने फुसफुसा कर दीपा से पूछा, "आप इस भूत को साथ क्यों ले आईं ?"

दीपा शरारत से आंखें मटकाकर बोली, "आप उसे भूत कहते हैं ! जी नहीं, वह आपकी धर्म-बहन पुष्पा के मामा का लड़का है।"

यह सुनकर कमलजीत को यूं लगा मानो उसके पेट पर किसी ने ज़ोर का घूंसा मार दिया हो। वह सब कुछ समझ गया।

"यह महोदय बहुत गहरी तमन्ना लेकर आए हैं। बल्कि उन्हें यहां भेजा गया है। वह किस उद्देश्य से आए हैं, यह समझने में आपको कोई कठिनाई नहीं हो सकती। यह हमारे यहां ही ठहरे हुए हैं।"

इतने में वे कार के निकट पहुंच गए। सामान डिक्की में रख दिया गया। दीपा बोली, "रमेशजी ! कार आप चलाइए। 'यू आर एन एक्सीलेन्ट ड्राइवर'।"

यह सुनकर रमेश फूला नहीं समाया। परन्तु कमलजीत और दीपा को पिछली सीट पर एक साथ सटकर बैठते हुए देखकर उसका जी खराब हो गया।

दिल्ली के बाहरी इलाके में दीपा की शानदार कोठी पर पहुंचकर कार रुकी तो वे तीनों बाहर निकल आए। दीपा ने नौकर को आवाज़ देकर कहा, "बहादुर, साहब का सामान उस कमरे में रख दो जो आज सुबह इनके लिए तैयार किया गया है।"

"बहुत अच्छा जी।"

फिर दीपा ने रमेश कुमार की ओर देखते हुए कहा, "मुझे थोड़ी देर के लिए क्षमा कीजिए ताकि मैं कमलजीत को इनके कमरे तक पहुंचा आऊं।"

"बेशक, आप इन्हें पहुंचा आइए। मैं भी अपने कमरे में जा रहा हूं। आप जब चाहें मुझे बुला लीजिएगा।"

रमेश कुमार अपने कमरे को चल दिया, और दीपा बड़े ड्राइंग रूम से होकर कमलजीत की उंगलियों में उंगलियां फंसाए चौड़ी चक्करदार सीढ़ियों की ओर बढ़ी। एकाएक ही सीढ़ियों के ऊपर अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति दिखाई दिया।

दीपा ने तुरन्त ही कमलजीत का हाथ छोड़ दिया और धीरे से बोली, "वह मेरे पापा हैं।"

वे दोनों सीढ़ियों पर चढ़ने लगे तो पापा नीचे को आते दिखाई दिए। रास्ते में ही उनका आमना-सामना हो गया। पापा ने पूछा, "तुम कहां गई थीं, बेटी ?"

दीपा आश्चर्य से बोली, "आप भूल गए पापा ? मैं ...

करने गई थी।"

दीपा ने अपने साथी की ओर संकेत किया। उसे महसूस हुआ कि उसके पापा अब भी चक्कर में थे। उसने फिर कहना आरम्भ किया, "पापा ! यही मिस्टर कमलजीत हैं। पिछले दिनों नागपुर में जो प्रतियोगिता हुई थी उसमें इन्होंने भी भाग लिया था। लड़कियों में मैं प्रथम रही और लड़कों में यही प्रथम रहे थे।"

इस पर पापा ने अपना हाथ कमलजीत की ओर बढ़ाते हुए कहा, "वैरी प्लीज़्ड टू मीट यू। कांग्रेच्यूलेशन्स।"

"थैंक्यू !" कमलजीत ने हाथ मिलाते हुए उत्तर दिया।

पापा ने पूछा, "आप रहते कहां हैं ?"

"जी, लखनऊ में।"

इतनी बातचीत के बाद पापा नीचे उतर गए, और ये दोनों ऊपर पहुंच गए। दीपा एक कमरे के आगे रुक गई। दरवाज़ा खुला हुआ था। बहादुर कमलजीत का सामान भीतर रखकर दरवाज़े से बाहर आ रहा था।

भीतर पहुंचकर कमलजीत की आंखें चौंधिया गईं। ऐसा कमरा तो उसने कभी स्वप्न में भी नहीं देखा था।

दीपा ने कहा, "लाइए मैं आपका कोट उतार दूं।"

कमलजीत रोकता ही रहा, परन्तु दीपा ने पीछे से दोनों हाथ बढ़ा कर उसका कोट उतार दिया। कोट उतारते समय उसकी ऊपर की जेब में से कागज़ का तह किया हुआ टुकड़ा नीचे गलीचे पर गिर पड़ा।

कमलजीत को एहसास हो गया कि यह तह किया हुआ कागज़ वही था जो अंजू ने चुपके से उसकी जेब में डाला था। इस ख्याल के आते ही उसका कलेजा धक् से होकर रह गया। उसने महसूस किया कि यह कागज़ दीपा के हाथ में नहीं पड़ना चाहिए। न जाने उसमें क्या लिखा हो। अगर वह उसे उठाने के लिए जल्दी से हाथ बढ़ाता तो दीपा के मन में कोई सन्देह सिर उठा सकता था। विशेषतः जबकि स्वयं दीपा की नज़र भी उस कागज़ पर पड़ चुकी थी।

कमलजीत ने कागज़ उठाने की कोशिश नहीं की तो दीपा ने ही झुककर उसे उठा लिया। उठाते समय कागज़ की तह खुल गई। सम्भवतः न चाहते हुए भी दीपा की नज़र कागज़ पर लिखे शब्दों पर पड़ गई—क्षण-

दीपा उठी। कमलजीत ने सोचा कि अब वह नीचे जाकर नौकर को ाय का आर्डर देगी। मगर वह घंटी के बटन वाली बात तो भूल ही गया ा। दीपा ने दरवाज़े के निकट बटन को दबाया और वापस चली आई।

कमलजीत ज्यों का त्यों उलझन में फंसा रहा।

इतने में ही खुले दरवाज़े में दीपा के पापा और रमेश कुमार खड़े दिखाई दिए। पापा ने दरवाज़े पर हाथ से खट्-खट् करते हुए पूछा, "बेटी, हम अन्दर आ सकते हैं?"

दीपा और कमलजीत को पापा की इस हरकत पर हंसी आ गई, क्योंकि दरवाज़ा तो खुला ही था। वे दोनों उठ खड़े हुए। पापा ने भीतर कदम रखा और रमेश कुमार भी पीछे-पीछे आया।

दीपा उन सबको बातें करते छोड़ कर कमरे से बाहर निकली। नौकर उसे ऊपर आता दिखाई दिया। दीपा ने उससे कहा, "घंटी मैंने ही बजाई थी। ऐसा करो कि चाय की ट्रे लगाकर कमलजीत जी के कमरे में पहुंचा दो। पापा भी वहीं पर हैं।"

यह सुनकर नौकर लौट गया और दीपा ज़ीने से उतरकर टेलीफोन के पास पहुंची। उसने जल्दी-जल्दी टेलीफोन का एक नम्बर मिलाया और बोली, "हलो! हलो!"

दूसरी ओर से एक ज़नाना आवाज़ सुनाई दी, "हलो!"

ज़नाना आवाज़ सुनकर दीपा चौंकी, उसने पूछा, "क्या सुरेशजी यहीं रहते हैं?"

"सुरेश जी? जी हां, वह यहीं रहते हैं।"

"क्या मैं जान सकती हूं कि आप कौन हैं?"

"मेरा नाम अंजू है।"

"क्या आप श्री कमलजीत जी को जानती हैं?"

"कमलजीत? माफ कीजिए, मैं उन्हें नहीं जानती—परन्तु आप यह सब क्यों पूछ रही हैं? आप तो सुरेशजी से बात करना चाहती थीं।"

"जी हां, क्षमा कीजिए। उन्हें बुला दीजिए, मैं उन्हीं से बात करना चाहती हूं।"

"आप 'होल्ड' कीजिए, मैं उन्हें बुलाकर लाती हूं।"

"थैंक्यू!"

दीपा ने लगभग एक मिनट तक प्रतीक्षा की। फिर दूसरी ओर से

वही आवाज सुनाई दी, "आई ऐम सॉरी, सुरेश जी इस समय घर पर नहीं हैं।"

"कोई बात नहीं, मैं उनसे फिर बात कर लूंगी।"

"कोई खास काम हो तो बता दीजिए, मैं उन तक आपका संदेश पहुंचा दूंगी।"

"जी कोई खास बात नहीं है।"

"कम से कम अपना नाम तो बता दीजिए। सुरेशजी जरूर पूछेंगे कि टेलीफोन करने वाले का नाम क्या था।"

दीपा ने हड़बड़ा कर बिना उत्तर दिए टेलीफोन बन्द कर दिया। फिर साड़ी का आंचल सम्भालती हुई ऊपर चली गई।

पापा अब भी कमलजीत से गप्पें हांक रहे थे।

दीपा पहुंची तो पापा बोले, "तुम आ गई। अब हम चलते हैं।"

वे दरवाजे की ओर बढ़े तो यूं लगा जैसे रमेश कुमार वहां से जाना नहीं चाहता था, परन्तु पापा ने उसका हाथ छूते हुए कहा, "कम ऑन, बॉय !"

कमलजीत ने उन दोनों को जाते देखकर सुख की सांस ली। फिर दीपा से पूछा, "आप कहां गई थीं ?"

"मैं नीचे आपके मित्र को टेलीफोन करने गई थी।"

"मेरा मित्र ?"

"सुरेश जी !"

"सुरेश ?—कौन सुरेश ?"

"वाह जी वाह ! अपने जिगरी दोस्त को भी भूल गए। आपको यह भी याद नहीं होगा कि उसने क्या लिखकर आपकी जेब में डाल रखा है।"

कमलजीत का सिर चकरा गया। वह कुर्सी से गिरते-गिरते बचा। फिर सूखी हंसी हंसते हुए बोला, "अरे ! वह सुरेश ? आप सुरेश का जिक्र कर रही हैं…आ-हा-हा…शैतान कहीं का…"

कमलजीत यूं ही बके जा रहा था। उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि असली मामला क्या था।

इतने में नौकर चाय की ट्रे लेकर आ गया। बातचीत का सिलसिला बन्द करते हुए दीपा चुपचाप चाय बनाने लगी। कमलजीत ने अपना प्याला ऊपर उठाया तो दीपा ने फिर कहना आरम्भ किया, "टेलीफोन पर

अंजू बोली थी।"

अंजू का नाम सुनते ही कमलजीत के मुंह में भरी चाय पेट में जाने की बजाय बाहर को निकल पड़ी, "अंजू ?"

दीपा की आंखें आश्चर्य से कुछ फैल गईं, "हां-हां, अंजू। अब आप कहेंगे कि आप अंजू को भी नहीं जानते। आप इतने बौखलाए हुए क्यों हैं ?"

"नहीं तो—वह अंजू ?···मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। सुरेश की छोटी बहन होने के नाते कभी-कभी उससे नमस्ते हो जाती है।"

दीपा गम्भीरता से बोली, "हां तो अंजू ने बताया कि सुरेशजी घर पर नहीं थे।"

कमलजीत अब भी बौखलाया हुआ था ? वह उल्लू की तरह आंखें झपकाते हुए दीपा की ओर देखे जा रहा था।

दीपा बोली, "परेशान होने की क्या बात है। कुछ देर में फिर फोन करके मिलने का समय निश्चित कर लेंगे।"

"जी ··जी हां।"

ज्यों-त्यों करके चाय समाप्त हुई। दीपा कुर्सी से उठते हुए बोली, "अब आप आराम से नहा-धोकर कपड़े बदल लीजिए। फिर मिलेंगे।"

कमलजीत को अब कोई संदेह नहीं रहा था कि वह कागज देखकर के मन में कोई शक उभरा था, इसीलिए तो उसने स्वयं ही टेलीफोन कर डाला।

वह दरवाज़े तक दीपा के साथ गया। वह बाहर निकली। उसने दरवाज़ा बन्द करके सिटकनी चढ़ाई और एकदम अपने कोट की ओर लपका। जेब में से कागज़ निकाल कर जल्दी से उसकी तह खोली। लिखा था :

"यार, तुम जब भी दिल्ली आते हो मुझे गच्चा देकर चले जाते हो। मिलते नहीं। अगर अब के भी न मिले तो फिर सारी उम्र तुमसे नहीं बोलूंगा। नीचे लिखे फोन नम्बर पर मिलने का समय तय कर लेना। नो गच्चाबाज़ी !

तुम्हारा,
सुरेश"

यह पढ़ कर कमलजीत के दम में दम आया। उसने रुमाल से अपने

माथे का पसीना पोंछा। जब घबराहट दूर हो गई तो उसे अंजू की शरारत का ख्याल आया। सचमुच वह बड़ी चतुर थी।

जब कमलजीत नहा धोकर कपड़े बदल चुका तो दीपा उसके पास आई। पूछने लगी, "कहिए, आज आपका प्रोग्राम क्या है?"

"प्रोग्राम? अब तो मैं आपके काबू में हूं। जो प्रोग्राम आप तय करेंगी, मुझे वही मानना पड़ेगा।"

"नहीं नहीं, ऐसी कोई विवशता नहीं है।"

"यह न समझिए कि मैं इस विवशता को कोई बन्धन समझता हूं। यह तो मेरा सौभाग्य है कि मैं आज आपके चंगुल में हूं।"

दीपा मुस्करा दी, "धन्यवाद—मुझे भी आपको अपने चंगुल में पाकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है। फिर भी मैं यह नहीं चाहती कि आप सुरेश जैसे मित्र को परेशान करें। आप फोन पर उससे मिलने का समय निश्चित कर लें। मेरी ओर से अनुमति है।"

"ठीक है, यदि आपका यही ख्याल है तो मैं कभी-न-कभी सुरेश से मिलने का प्रोग्राम बनाऊंगा।"

"कभी-न-कभी का अर्थ यह है कि आप उसे फिर टालना चाहते हैं। मैं ऐसा हरगिज नहीं होने दूंगी। आप अभी नीचे चलकर उसे फोन कीजिए।"

कमलजीत को आश्चर्य हो रहा था कि दीपा इस बात पर इतना बल क्यों दे रही थी। सम्भवतः उसे कुछ सन्देह हो रहा था, या शायद वह 'सुरेश' के रुक्के से बहुत प्रभावित हुई थी।

जब कमलजीत ने फोन उठाया तो दीपा बोली, "अच्छा तो आप सुरेश से कुछ बातचीत कीजिए, मैं जरा किचन में जाकर देखती हूं कि रसोइए ने क्या-क्या पकाया है।"

दीपा चली गई।

कमलजीत को सन्देह हुआ कि इसी फोन से सम्बन्धित किसी अन्य कमरे के फोन द्वारा दीपा उसकी बातें सुनने की कोशिश न करे।

टेलीफोन पर फिर अंजू का स्वर सुनाई दिया। कमलजीत ने कांपते हुए स्वर में हलो कहा। दूसरी ओर से अंजू बोली, "हलो, आप कौन बोल रहे हैं?"

कमलजीत अंजू की चतुराई की प्रशंसा किए बिना न रह सका।

कहा, "मैं कमलजीत बोल रहा हूं। मुझे सुरेश से कुछ बात करनी थी।"

"भैया ?...वह आए थे, फिर बाहर चले गए। वैसे मुझसे कह गए थे कि यदि कमलजीत साहब का फोन आए तो उन्हें यह संदेश दे दूं कि आज शाम छः बजे इण्डिया गेट के निकट मिलें।"

"ठीक है, मैं उस समय पहुंचने की कोशिश करूंगा।"

"भैया यह भी कह गए थे कि वह वहां पन्द्रह-बीस मिनट तक आपकी प्रतीक्षा करेंगे। यदि आप न आए तो वह समझ लेंगे कि आप समय नहीं निकाल सके। तब मुलाकात का कोई और वक्त तय कर लिया जाएगा।"

"थैंक्यू।"

उस दिन खाना बहुत स्वादिष्ट था। भोजन के बाद गपशप होती रही। खाने की मेज़ पर घर के अन्य सदस्यों के अतिरिक्त रमेश कुमार भी उपस्थित था। सब लोग खूब हंसते-बोलते रहे, परन्तु रमेश कुमार कुछ घुटा-घुटा ही बैठा रहा।

भोजन के पश्चात् वे ड्राइंगरूम के गलीचे पर बैठकर ताश खेलते रहे। आधे-पौन घंटे के बाद कमलजीत ने कहा, "मुझे तो ऊंघ आ रही है। थोड़ी देर सो लूं अच्छा रहेगा।"

दीपा बोली, "अरे! भोजन के बाद क्या आप सोते भी हैं? पहले ही क्यों नहीं बता दिया?"

"नहीं तो, मेरी आदत नहीं, परन्तु लगता है कि भोजन स्वादिष्ट होने के कारण मैं आज आवश्यकता से अधिक ही खा गया। इसीलिए नींद आने लगी।"

रमेश कुमार खुश था। दीपा से कहने लगा, "कमलजीत जी को नींद का मज़ा लेने दीजिए। हम दोनों कोई दूसरा प्रोग्राम बना लेंगे। वैसे तो किसी भी पिक्चर का साढ़े तीन बजे का शो देखा जा सकता है..."

रमेश कुमार ने सोचा था कि इस प्रकार उसे दीपा से घुल-मिलकर बातें करने का अवसर मिल जाएगा। परन्तु दीपा नहीं मानी। तब रमेश ने कहा, "मैंने अपने टेप पर कुछ नए गाने रिकार्ड किए हैं। आइए वही सुना दूं आपको।"

आखिर दीपा भी उसे कहां तक टालती। वह दूसरे कमरे में चली गई।

साढ़े पांच तक कमलजीत कपड़े पहनकर तैयार हो गया।

दीपा ने सिर से पांव तक उस पर दृष्टि डाली और कहा, "वाह ! अब तो आप खूब बांके लग रहे हैं।"

कमलजीत मुस्करा कर रह गया। फिर उसने पूछा, "दीपा जी ! अब मैं इण्डिया गेट तक कैसे पहुंचूंगा।"

"भला यह भी कोई समस्या है। अपनी कार है। ड्राइवर आपको वहां छोड़ आएगा, और जिस समय आप उसे कहेंगे, वह आपको ले आएगा।"

कमलजीत जानता था कि इण्डियागेट पर उसे अंजू मिलेगी। वहां जाते समय वह इण्डिया गेट से कुछ इधर ही उतरकर कार वापस भेज सकता था। परन्तु इस बात का भय था कि जब ड्राइवर उसे लेने के लिए आए तो कहीं उन दोनों को एक साथ न देख ले। अतः उसने सुझाव दिया, "धन्यवाद ! बेशक आपका ड्राइवर मुझे वहां तक छोड़ आए, परन्तु लौटते समय मैं स्वयं वापस आ जाऊंगा।"

पूरे छः बजे कमलजीत इण्डिया गेट के निकट पहुंचा तो अन्य सैलानियों में उसे अंजू भी दिखाई दी। उसने तुरन्त ही गाड़ी रुकवा ली और नीचे उतरकर ड्राईवर से कहा, "मेरे मित्र कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं। उन्हें ढूंढना पड़ेगा।"

जब कार बहुत दूर चली गई तो वह अंजू की ओर बढ़ा। अंजू ने उस समय सलवार-कमीज पहन रखी था। हल्के धानी रंग का दुपट्टा दोनों कन्धों पर लटक रहा था। मामूली से मेकअप के बावजूद वह बड़ी आकर्षक लग रही थी। दोनों की नजरें मिलीं तो वह चिड़िया की तरह फुदकी और दौड़कर उसके निकट चली आई।

कमलजीत के होठों पर फीकी-सी मुस्कराहट फैल गई। अंजू दांत निकालकर बोली, "अरे, आपका मुंह लटका हुआ क्यों है ?"

कमलजीत ने अपने बालों पर धीरे-से हाथ फेरते हुए उत्तर दिया, "अंजू जी, मैं जानता हूं कि आप मन की अच्छी हैं लेकिन '"

"लेकिन क्या ?"

"अब क्या बताऊं।"

"तो मैं बताती हूं। आप डरते हैं कि कहीं मेरी वजह से आपका दीपा वाला मामला खटाई में न पड़ जाए।"

कमलजीत की दोनों भवें ऊपर को उठ गईं और वह बोला, "यह सब जानते हुए भी…"

"मैं आपसे मिलने की कोशिश क्यों कर रही हूं ?"

कमलजीत चुप रहा।

अंजू आंखें नचाकर बोली, "इसमें घबराहट की क्या बात है ? दीपा हमें एक साथ देख भी ले तो आप कह दीजिएगा कि यह मेरे मित्र की बहन है।"

"जी—लेकिन वह यह तो पूछ सकती है कि मित्र गायब और उसकी बहन हाजिर—यह कैसे ?"

"आप ठीक कहते हैं। लड़कियों की आदत ही कुछ ऐसी होती है।"

"फिर भी आप मेरा बुरा क्यों करना चाहती हैं ?"

"आपका नहीं, दीपा का।"

"क्या आप समझती हैं कि दीपा का बुरा हो जाएगा तो मैं आपकी ओर झुक जाऊंगा।"

"लेकिन मैं भी 'कैंडिडेट' बनी रहूं तो क्या हर्ज है ?"

"आपका मतलब ?"

"मान लीजिए कि मेरे कारण नहीं, किसी और ही वजह से आप दोनों में खटपट हो जाती है···तो उसके बाद मैं 'ट्राई' कर सकती हूं।"

कमलजीत बेअख्तियार हंस दिया, बोला, "यह 'ट्राई' करने की बात भूल जाइए। मैंने निश्चय कर रखा है कि या तो दीपा मिले, या मैं कुंवारा ही जीवन गुजार दूंगा।"

"वाह ! आप तो फिल्मी बातें करने लगे।"

"आप इसे जो भी समझें, मैंने मन की बात कह दी।"

"यह बात है तो हम केवल मित्र बनकर रहेंगे।"

"देखिए ! इस प्रकार की मित्रता हम लखनऊ में निभा लेंगे। कम-से-कम यहां तो आप कोई गड़बड़ न कीजिए।"

"मान गए। मगर मैंने आपसे दो-चार जरूरी बातें करने के लिए आपको बुलाया है।"

"कहिए !"

"एक तो हो चुकी।"

"क्या ?"

"यही दीपाजी वाली बात। कम-से-कम इतना तो पता चल गया कि फिलहाल दीपाजी के साथ आपकी कितनी गहरी छन रही है। मुझे इस पर

कोई आपत्ति नहीं है, न मुझे आपत्ति उठाने का कोई अधिकार है। देखिए न ! अब मैं दीपा को दीपाजी कहने लगी हूं।"

"आप बड़ी समझदार लड़की हैं।"

"चलिए यह बात तय हो गई। अब यह बताइए कि आपने कब तक वापस जाने का निश्चय किया है ?"

"इस सिलसिले में दीपा से मशवरा करना पड़ेगा।"

"ठीक है, आप मशवरा करके मुझे सूचित कर दीजिएगा। जब दोनों को लखनऊ जाना है तो एक साथ ही क्यों न चलें। यह भी अच्छी तरह समझ लीजिए कि यदि आपने इस बात पर भी कोई आपत्ति उठाई तो फिर मैं भी आपका मामला कुछ-न-कुछ गड़बड़ा दूंगी।"

यह कहते-कहते अंजू खिलखिलाकर हंस पड़ी, और फिर बोली, "अच्छी तरह समझ लीजिए कि आपकी गर्दन कुछ-न-कुछ तो मेरे चंगुल में है।"

कमलजीत अंजू के बात करने के अंदाज़ से समझ गया कि यह चपल तबियत की लड़की थी। उसे यह भी आभास था कि इस प्रकार के व्यक्ति दिल के बुरे नहीं हुआ करते। आखिर सारी बात हंसी-मज़ाक में ही तो हो रही थी। यदि लखनऊ तक वह उसका साथ चाहती थी तो इसमें आपत्ति-जनक कोई बात नहीं थी।

कमलजीत मुस्कराकर रह गया। अंजू ने इधर-उधर नज़र दौड़ाकर कहा, "जी चाहता है कि कहीं बैठकर एक कप चाय या कॉफी पी जाए। तब कुछ नए विषयों पर बातचीत हो सकेगी।"

कमलजीत ने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखते हुए कहा, "देखिए, मेरे पास अधिक समय नहीं है।"

"यूं कहिए कि समय तो बहुत है, परन्तु मेरे लिए नहीं है। आप यह न समझिएगा कि मैं इस बात पर बिगड़ जाऊंगी।"

"शुक्रिया !"

"फोकट का शुक्रिया नहीं चलेगा। यदि आपके पास अधिक समय नहीं है तो किसी छोटे-से रेस्टोरेण्ट में थोड़े ही समय के लिए बात-चीत करें।"

कमलजीत फिर बोला, "मुझे खेद है कि मैं आपको आपके [illegible] स्थान तक छोड़ने नहीं जा सकूंगा। लेकिन मैं आपके लिए कोई टैक्सी या स्कूटर रिक्शा तय कर ही सकता हूं।"

"इस बात की चिन्ता न कीजिए। अभी मेरा घर लौटने का प्रोग्राम नहीं है। अभी तो मैं घूमूंगी।"

"तो फिर मुझे जाने की आज्ञा दीजिए।"

इतने में उनके निकट से एक कार गुज़री जिसकी ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। ज़रा आगे पहुंचकर वह कार रुक गई। कार का चालक रमेश कुमार था। उसके साथ दीपा के पापा बैठे थे। उन्होंने पूछा, "क्यों भई, कार क्यों रोक दी?"

"कुछ सन्देह हुआ तो मैंने कार रोक दी।"

"सन्देह कैसा?"

"ज़रा आप खुद ही देख लीजिए।"

सेठ चन्द्रमोहन ने खिड़की से गर्दन बाहर निकालकर पीछे की ओर देखा, बोले, "तुम्हारा इशारा उस युवक की ओर है जो किसी लड़की का हाथ थामे खड़ा है।"

"जी हां, अगर आपने उसे पहचाना।"

सेठजी ने आंखों के चश्मे को ज़रा हिला-डुलाकर ठीक करते हुए कहा, "कहीं यह वही युवक तो नहीं है जो हमारे यहां ठहरा हुआ है?"

"अब आप ही पहचानिए।"

"वही तो है···क्या नाम है उसका! ···कमलजीत।"

"मैंने सोचा शायद मेरी आंखों ने धोखा खाया है।"

"नहीं तो!"

"समझ में नहीं आता कि वह लड़की कौन है जिसके साथ वह सब लोगों के सामने इतना बेतकल्लुफ हो रहा है।"

"बढ़ चलो बेटा! ···हम तुमको क्या लेना। आजकल स्वतंत्रता का ज़माना है। जो भी हो जाए सो कम है।"

"परन्तु आपके यहां ठहरा हुआ तो है।"

"इससे क्या होता है। दो-चार दिन रुकेगा, फिर चला जाएगा।"

रमेश कुमार ने पहले तो इससे आगे कुछ कहना चाहा, परन्तु फिर यह सोचकर कि उसका उद्देश्य तो पूरा हो ही चुका है। वह कुछ नहीं बोला। एक बार फिर कार चल दी।

अंजू से विदा होकर कमलजीत भी एक स्कूटर रिक्शा में बैठा और सेठ चन्द्रमोहन के शानदार बंगले में जा पहुंचा।

दीपा बरामदे में खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। स्कूटर रिक्शा के चालक को पैसे देते हुए कमलजीत ने दीपा की ओर दृष्टि डाली और कहा, "मैं अधिक लेट तो नहीं हुआ ?"

"केवल चार मिनट ?"

"बाप रे !"

अंजू से मुलाकात के बाद कमलजीत कुछ दिनों तक दीपा के घर टिका रहा। दीपा को न उसके पापा ने और न रमेश कुमार ने बताया कि कमलजीत कनाट-प्लेस में एक लड़की का हाथ अपने हाथ में लिए खड़ा था। सेठजी ने इसकी कोई आवश्यकता नहीं समझी, और रमेश इस भय से नहीं बोला कि कहीं दीपा स्वयं उसी से न बिगड़ जाए। उसे यह इत्मीनान तो था ही कि सेठजी स्वयं अपनी आंखों से वह दृश्य देख चुके थे। निस्सन्देह इस समय उन्होंने उस घटना को कोई महत्त्व नहीं दिया था, परन्तु जब कभी दीपा से कमलजीत के विवाह का प्रश्न उठेगा तो सेठजी निश्चय ही इस पर आपत्ति करेंगे।

इस दौरान अवसर पाकर कमलजीत ने अंजू को फोन भी किया। बातचीत हुई। हंसी-हंसी में अंजू ने धमकी दी कि यदि उसे अक्सर टेलीफोन नहीं किया तो बाद में पछताना पड़ेगा।

कमलजीत ने भी हंसते हुए उत्तर दिया कि वह तो उस घड़ी पर ही पछता रहा था जब उससे उसकी पहली मुलाकात हुई थी।

जब लखनऊ जाने का दिन निश्चित हो गया तो अंजू ने फोन पर कमलजीत को बताया कि वह स्वयं ही दो सीटें रिजर्व करवा लेगी। अतः जब दीपा विदाई के दिन कमलजीत के साथ स्टेशन पर पहुंची तो उस डिब्बे में अंजू पहले से ही उपस्थित थी। दीपा उसे पहचानती नहीं थी। इसलिए उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

दोनों प्रेमी प्लेटफार्म पर खड़े घुल-मिलकर बातें करते रहे। कमलजीत ने दीपा को पहले से ही बता दिया था कि उसने बर्थ रिजर्व करवा ली है।

आखिर जब गाड़ी चली तो कमलजीत ने देखा कि प्लेटफार्म के

जगमगाते प्रकाश में दीपा के आंसू भी दमक रहे थे। जाते-जाते दीपा ने उसे पुनः याद दिलाया कि वह उसे सदा पत्र लिखता रहे। और पत्र-व्यवहार का सिलसिला टूटना नहीं चाहिए।

जब तक गाड़ी प्लेटफार्म से आगे नहीं निकल गई तब तक कमलजीत अपनी बांह खिड़की से बाहर निकालकर हाथ हिलाता रहा। आखिर जब उसने हाथ भीतर खींचा तो अंजू बोली, "वाह, वाह ! कैसा दिल को पिघला देने वाला दृश्य था। बिल्कुल किसी फिल्म का 'सीन' नज़र आता था।"

मन तो कमलजीत का भी भारी हो रहा था, लेकिन अंजू की शरारत भरी शक्ल देखकर बोला, "जब आपके जीवन में ऐसा कोई फिल्मी 'सीन' आएगा तो आपको इसकी पीड़ा का अनुभव होगा।"

"अब महात्माओं वाली बातें छोड़िए, कोई और बात कीजिए।"

"खूब याद दिलाया। मेरा थर्मस कॉफी से भरा हुआ है। क्यों न गर्मा-गर्म कॉफी पी जाए। आपको मालूम है कि गर्म-गर्म कॉफी से इश्क की अग्नि कुछ ठण्डी हो जाया करती है ?"

"मालूम तो नहीं, परन्तु अभी 'ट्राई' कर लेते हैं।"

अंजू ने मुस्कराते हुए एक मग में कॉफी डाली और उसे कमलजीत की ओर बढ़ा दिया।

कमलजीत ने देखा कि मग में कॉफी बहुत कम थी। बोला, "बड़ी कंजूस हैं आप।"

"इसमें कंजूसी की क्या बात है। थोड़ी देर में खाना भी तो खाना है। कॉफी से पेट भर लेंगे तो भोजन कैसे कर पाएंगे ?"

"अच्छा तो आप खाना भी साथ लाई हैं ?"

"जी हां, एक के लिए नहीं तीनों के लिए।"

"तीन ? यह तीसरा कौन है ?"

"अरे साहब, मैं तो उतना ही खाऊंगी जितना कोई भला व्यक्ति खाता है, लेकिन आप जैसे पेटू आदमी को जब तक दोगुना खाना न मिलेगा उसका पेट कैसे भरेगा। डिनर के बाद स्वाभाविक है हम दोनों को कॉफी की तलब होगी।"

हल्की-फुल्की बातचीत के साथ कॉफी भी चलती रही।

नौ बजे के लगभग उन्होंने खाना खाया। अंजू ने अपने हाथों से उसका

विस्तर लगाया। कमलजीत कुछ शरारत से "बोला, आप मेरी बड़ी सेवा कर रही हैं। क्या इस सेवा का मेवा मिलने की उम्मीद है।"

"आपसे कोई आशा नहीं रखी जा सकती, लेकिन जोगी का कर्तव्य है कि प्रत्येक द्वार पर पुकार अवश्य लगाए। यदि घर वाला उदार होगा तो कुछ-न-कुछ देगा ही, और यदि वह आप जैसा हुआ तो फिर···"

अपनी बात स्वयं ही काटकर अंजू ने दांत दिखा दिए।

रात-भर वे आराम से सोए। सुबह बैरे से कहकर उन्होंने चाय मंगवाई। उसके साथ कुछ नाश्ता भी किया।

जब गाड़ी लखनऊ के निकट पहुंची तो कमलजीत बोला, "अंजू जी, मैं महसूस करता हूं कि आपके साथ यात्रा करने में मुझे काफी सुविधा रही और मन भी बहला रहा।"

"धन्यवाद ! मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप कुछ 'महसूस' भी करते हैं।"

"आप इस प्रकार की चोट प्रायः करती रहती हैं। क्या आप समझती हैं कि मेरा दिल पत्थर का बना हुआ है।"

"मेरे समझने या न समझने से क्या होता है। आप स्वयं ही इसका कोई प्रमाण दीजिए।"

"मैं क्या प्रमाण दे सकता हूं ? दीपा से जो मेरा सम्बन्ध है सो आप अच्छी तरह जानती हैं। इसके अतिरिक्त यदि मैं आपका कोई काम कर सकूं तो मुझे बड़ा हर्ष होगा।"

"काम है, परन्तु···"

"कठिन है ?"

"नहीं, बहुत सरल है।"

"कठिन भी हो तो आप निस्संकोच मुझे बता सकती हैं।"

"अभी मुझे निस्संकोच केवल इतना ही कहना है कि क्या गाड़ी से उतरकर आप मुझे मेरे घर तक छोड़ने का कष्ट करेंगे ?"

"लीजिए ! भला यह भी कोई बात हुई। आप इस विषय में कुछ भी न कहती तो भी मैं आपको घर तक छोड़ने अवश्य जाता।"

"धन्यवाद !"

इतने में गाड़ी ने लखनऊ स्टेशन में प्रवेश किया। ज्यों ही गाड़ी रुकी तो एक सुन्दर-सा युवक बढ़िया कपड़े पहने उनके डिब्बे के सामने आ

पहुंचा। अंजू दरवाज़े में खड़ी हुई तो युवक ने उसके दोनों हाथ थामकर उसे बड़ी सावधानी से नीचे उतरा।

यद्यपि कमलजीत को अंजू से ऐसी-वैसी कोई दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी न जाने क्यों उसके मन पर हल्की-सी चोट लगी।

कुली ने उनका सामान प्लेटफार्म पर उतारा। स्टेशन के बाहर एक कार उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। युवक ने स्टेयरिंग के आगे बैठते हुए अंजू को अगली सीट पर बैठने का संकेत किया।

अंजू झट से उस युवक की बगल में बैठ गई और कमलजीत को पिछली सीट पर बैठने का इशारा किया। वह बैठ गया, कार चल दी तो अंजू ने अगली सीट से मुड़कर पल-दो-पल कमलजीत की ओर टकटकी बांधकर देखने के बाद कहा, "आशा है कि आपको पिछली सीट पर बैठना बुरा नहीं लगा होगा।"

कमलजीत को महसूस हुआ कि स्वयं उसी का मुंह थोड़ा लटक गया था, सम्भवतः इसी कारण अंजू ने यह बात कही थी। वह झट से सम्भलकर बोला, "आप चिन्ता मत कीजिए। मुझे तो आपका अगली सीट पर बैठना भी बुरा नहीं लगा।"

अंजू ने एक उंगली ऊपर उठाकर कहा, "लगना भी नहीं चाहिए···"

क्यों ? क्यों नहीं ?—इन दोनों प्रश्नों का उत्तर न मांगा गया, न दिया गया।

कार अंजू के मकान के आगे रुकी। वह उतर पड़ी और उस युवक से कहने लगी, "पहले इन्हें इनके घर तक पहुंचा आइए।"

कमलजीत जल्दी से बोला, "कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। मैं यहां से कोई रिक्शा ले लूंगा।"

अंजू बोली, "रिक्शा की क्या ज़रूरत है ? घर की कार है, टैक्सी नहीं है। आपको आपके निवास स्थान तक छोड़ आएगी।"

जब कार कमलजीत के मकान के सामने पहुंची तो उसने रुकने को कहा।

किशोर ने कार रोक दी। फिर उसने डिक्की में से कमलजीत का बिस्तर लेकर हाथ में लटका लिया, और दूसरे हाथ में सूटकेस थामकर बोला, "चलिए, मैं आपको भीतर तक छोड़ आऊं।"

"अरे-अरे ! आपको मेरा सामान उठाने की ज़रूरत नहीं। मैं स्वयं

ही ले जाऊंगा।"

"अजी यह मेरा-तेरा क्या लगा रखा है। चलिए!"

किशोर ने सामान बरामदे में रखते ही कहा, "शायद आप डरते होंगे कि मैं भीतर आ गया तो कहीं इसी जगह पसरकर बैठ न जाऊं। जी नहीं, मेरे पास इतना समय नहीं है।"

"नहीं—नहीं, आपको गलतफहमी हुई। यह भी आप ही का घर है।"

"बातें कम, काम ज्यादा, मैं चला।"

जाते-जाते युवक फिर बोला, "भूलिएगा नहीं, मेरा नाम किशोर है।"

"नहीं भूलूंगा—लेकिन अंजू को आप कब से जानते हैं।"

"जबसे वह पैदा हुई थी···मेरा मतलब है कि हमारी मम्मी ने मेरे जन्म के ढाई वर्ष बाद अंजू को जन्म दिया।"

किशोर की कार आंखों से ओझल हो गई तो कमलजीत के मुंह से बेअख्तियार ही निकल गया, "बाप रे!"

दिल्ली से लौटने के बाद चौथे दिन कमलजीत को दीपा का पत्र मिला। लिखा था :

डियर कमल

आखिर डुबकी लगा गए न! मुझे आपसे इस बात की आशा नहीं थी। या, यूं कहना चाहिए कि मुझे इसी बात की आशा थी। प्रश्न यह उठता है कि क्या आपको ऐसा करना शोभा देता है। मुझे अच्छा नहीं लगा। आपको वहां पहुंचते ही मुझे सूचित करना चाहिए था। शायद मैं भी आपको पत्र न लिखती···लेकिन···

यह लेकिन कोई साधारण लेकिन नहीं है। मुझे आपके विषय में एक बात का पता चला है। सुनते ही मेरा कलेजा धक् से होकर रह गया।

यह न बताकर कि वह बात क्या थी, मैं आपको यह बताना चाहूंगी कि मुझे उस बात का पता कैसे चला।

लंच-टाइम पर हम खाना खा चुके तो पापा अपनी आदत के अनुसार

कुछ देर लेटने के लिए अपने सोने वाले कमरे की ओर चले गए। लेकिन जाते-जाते उन्होंने चुपके से मुझे आने का इशारा किया। मैं भी उनके साथ स्लीपिंग रूम में पहुंच गई। वह बिस्तर पर अधलेटे हो गए और मैं पलंग के निकट पड़े स्टूल पर बैठ गई।

मैं उनके चेहरे का अध्ययन करने की कोशिश कर रही थी। क्रोध के चिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे। चेहरे की कैफियत लगभग सामान्य थी परन्तु वह सामान्य से कुछ अधिक गम्भीर अवश्य दिखाई दे रहे थे। इस गम्भीरता का कारण पूछने की बजाय मैं उन्हीं के बात आरम्भ करने की प्रतीक्षा में रही।

सम्भवतः पापा भी इसी उलझन में थे कि बातचीत का आरम्भ कैसे करें। अन्त में सिर के बालों पर धीरे-धीरे हाथ फेरते हुए उन्होंने पूछा, "यह जो कमलजीत हमारे यहां कुछ दिन रुका था, उसके विषय में तुम कितना जानती हो ?"

"कुछ अधिक नहीं, और जो मैं जानती हूं सो आपको बता दिया था।"

"उसने तुम्हें डूबने से बचाया !"

"जी—लेकिन यह बहुत बड़ी बात है। यदि उसने हिम्मत से काम न लिया होता तो आज मैं आपके सामने बैठी बातें न कर रही होती।"

"निश्चय ही केवल तुम पर नहीं, मुझ पर उसका बड़ा एहसान है। अच्छा किया जो तुमने उसे अपने घर बुलाया। कुछ दिन हमारे साथ रह गया।"

"लगता है कि शायद आपके मन में कोई सन्देह है।"

"नहीं-नहीं, सन्देह की कोई बात नहीं। तुम पढ़ी-लिखी लड़की हो और जिन्दगी का ऊंच-नीच भली-भांति समझती हो। भला मुझे किस बात की चिन्ता है !"

उनके मुंह से जिन्दगी का ऊंच-नीच समझने वाली बात सुनकर मेरे कान खड़े हो गए। महसूस किया कि चाहते हुए भी वह कुछ कह नहीं पा रहे। मैंने ही कुरेद की, "आपने मुझे यही कहने के लिए यहां बुलाया है न ?"

पापा चौंके, और फिर कान के पीछे खुजाते हुए बोले, "बाप होने के नाते से मैं यह जानना चाहता था कि तुम्हारे मन में कमलजीत के प्रति

केवल आभार की ही भावना है न ?"

"और क्या हो सकता है ?" मैंने उल्टा उन्हीं से प्रश्न कर डाला।

वह जल्दी से बोले, "कुछ भी नहीं हो सकता। इतनी सयानी और समझदार लड़की से ऐसी ही आशा रखी जा सकती है।"

यह सयानी और समझदार लड़की वाली बात में मैं कुछ और चौकन्नी हो गई। बोली, "पापा यह बात तो स्पष्ट है कि आप हम दोनों के विषय में कुछ जानना चाहते हैं। मैं कुछ-कुछ समझ भी गई हूं कि आप क्या जानना चाहते हैं।"

पापा के होंठों पर झेंप की बनावटी हंसी फैल गई। बोले, "मैं चाहता हूं कि उससे तुम सामान्य मेल-जोल से अधिक सम्बन्ध न ही स्थापित करो तो अच्छा रहेगा।"

"मेरा ऐसा कोई इरादा तो नहीं है।" मैंने सफेद झूठ बोलते हुए कहना आरम्भ किया, "परन्तु मैं यह अवश्य जानना चाहूंगी कि आपको यह चेतावनी देने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई ?"

"चेतावनी नहीं बेटी ! यह तो केवल मेरी राय है।"

"चलिए राय ही सही। आपने मुझे यह राय देने के लिए विशेष रूप से यहां बुलाया। इसका भी अवश्य कोई कारण होगा।"

छोटे तौलिए से पापा ने अपने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा, "तुमने ठीक अनुमान लगाया। बेशक इसका भी कारण है।"

कुछ देर तक कमरे में मौन छाया रहा। मुझे बोलने की आवश्यकता ही नहीं थी। स्वयं उन्हीं को इस रहस्य पर से पर्दा उठाना पड़ा, "उन दिनों कमलजीत यहीं पर था। मैं कार में बैठा कनाट प्लेस से गुजर रहा था तो एक रेस्टोरेण्ट के सामने मैंने कमलजीत को खड़े देखा। उसके साथ एक नवयुवती भी थी···"

"तो क्या हुआ ?"

"इसमें आपत्ति की कोई बात नहीं है। लेकिन कमलजीत लड़की का हाथ अपने हाथ में लिए हुए था।"

पापा की यह बात सुनी तो मेरे तन-मन में आग लग गई। मुझे आप पर बड़ा क्रोध आया, परन्तु मैंने अपनी शक्ल और स्वर से पापा को कुछ पता नहीं चलने दिया, कहा, "पापा ! आपकी तो नजर भी बड़ी कमजोर है। बुरा न मानिएगा, यदि मैं कहूं कि आप बहुत ही ध्यानपूर्वक न देखें तो

गधा घोड़ा दिखाई देता है और घोड़ा गधा दिखाई देता है।"

क्रोध में आने की बजाय पापा केवल हंस दिए, कहने लगे, "आ गई न ताव में। यह मैं स्वीकार करता हूं कि मैंने उन दोनों को निकट से नहीं देखा। कार कई गज आगे बढ़ गई थी..."

"ओ पापा! आपने भी बस वही बात की..."

"मैं यह भी कहना चाहूंगा कि यदि रमेश उस ओर मेरा ध्यान न दिलाता तो शायद मुझे कुछ पता ही न चलता।"

"रमेश ?" मैं थोड़ी गर्म हो गई।

"हां—हां, अपना रमेश कुमार—। कार तो वही चला रहा था।"

अब मैंने उत्तेजित होना अपना अधिकार समझकर क्रोध भरे स्वर में कहा, "इसका मतलब तो यह हुआ कि आपकी केवल दृष्टि ही कमज़ोर नहीं, वरन् आप कानों के भी कच्चे हैं। किसी ने जो दिखा दिया सो देख लिया, और किसी ने जो समझा दिया सो समझ गए। आप अच्छी तरह जानते हैं कि रमेश कुमार के मन में मेरे प्रति क्या विचार हैं। शायद आपको उसके इन विचारों पर कोई आपत्ति भी नहीं है। परन्तु आपको कम-से-कम यह तो समझना चाहिए कि रमेश में अमीर होने के अतिरिक्त और कोई विशेष गुण नहीं है। न वह सही अर्थ में पढ़ा-लिखा है और न सही अर्थ में सभ्य है। सूटेड-बूटेड हो जाने और बड़े-बड़े रेस्टोरेण्टों में बैठने से कोई भी व्यक्ति सभ्य नहीं हो सकता।"

"तुम रमेश पर इतना गुस्सा क्यों झाड़ने लगीं। उसने कमलजीत के विरुद्ध एक शब्द तक नहीं कहा।"

"परन्तु उसने कमलजीत को आपकी नज़र से गिराने की कोशिश तो की। उसका कमलजीत से कोई पुराना परिचय तो है नहीं। सम्भव है कि इतनी दूर से रमेश स्वयं भी उसे न पहचान पाया हो। बिना ठीक से देखे किसी भले आदमी पर आरोप लगाना उचित नहीं माना जाएगा।"

"बिटिया रानी! तू तो खामखाह हवा के घोड़े पर सवार हो गई। मैं तुमसे कह रहा हूं कि उसने कमलजीत पर कोई आरोप नहीं लगाया और न उसके विरुद्ध कुछ कहा। हम जा रहे थे, इत्तफाक से उसकी नज़र पड़ गई, उसने सहज ही इस बात का ज़िक्र कर दिया। मैं तो यह भी स्वीकार करता हूं कि वह लड़की भी कोई ऐसी-वैसी नहीं दिखाई देती थी। वह निश्चय ही किसी भले घर की लड़की थी।"

मैंने और भी तीव्र लहजे में कहा, "आखिर मुझे यह सब बताने में आपका लक्ष्य क्या है?"

"लक्ष्य कुछ भी नहीं है। जो मैंने देखा था सो तुमको बता दिया। तुमको इसलिए बताया कि कमलजीत तुम्हारा 'फ्रेण्ड' है।"

पापा की इस बात पर मैंने अपना मुंह और भी अधिक फुला लिया। फौरन उठ खड़ी हुई, पांव फर्श पर जोर-जोर से पटकते हुए और मुंह-ही-मुंह में बड़बड़ाते हुए मैं अपने कमरे में चली आई।

अच्छा महोदय! यह सब कुछ तो हुआ। अब मैं आपसे पूछती हूं कि आखिर यह लैला-मजनूं का किस्सा क्या है। पापा की नजर कमजोर सही—परन्तु रमेश की नजर तो कमजोर नहीं हो सकती। क्या आप इस पर कुछ प्रकाश डालेंगे।

आपकी दीपा

यह पत्र पढ़कर एक बार तो कमलजीत को यूं महसूस हुआ कि जैसे बड़े ज़ोर की आंधी चल रही है और वह उसमें घिर गया है।

उस दिन तो वह किसी निष्कर्ष पर पहुंच ही नहीं सका। रात-भर इसी चिन्ता में डूबा रहा। सुबह उठते ही उसने मुंह-हाथ धोकर कुल्ला किया और खाली पेट केवल एक प्याला चाय पीकर वह अंजू के घर जा पहुंचा।

अभी अंजू नाइट-गाउन पहने हुए थी। उसके अस्त-व्यस्त बाल उसके कन्धों पर फैले हुए थे। कमलजीत ने उसका बाजू थामा और उसे उनके बाग में बने फव्वारे की ओर ले गया। फव्वारा आजकल सूखा पड़ा रहता था। कमलजीत ने फव्वारे की गोल दीवार पर एक पांव रखते हुए कहा, "आखिर वही हुआ जिसका मुझे भय था।"

"गोया आपको मुझसे इश्क हो ही गया।" यह कहते-कहते अंजू ने शरारत से दांत दिखा दिए।

"मज़ाक छोड़ो अंजू! मैं रात-भर सो नहीं सका।"

"अभी से घबरा गए। यह तो आरम्भ है। आगे देखिए होता है क्या!"

कमलजीत ने जेब में से पत्र निकालकर अंजू की हथेली पर रखते हुए कहा, "आगे जो कुछ होगा, वह तो बाद की बात है। अभी तो यह देखो कि पीछे क्या हो चुका है।"

अंजू ने उस लम्बे पत्र के तह किए हुए कागज़ों को हाथ में तौलते हुए पूछा, "क्या कोई प्रेम कहानी लिख डाली?"

"कहानी ?—यह पत्र है।"

"आपकी घबराहट भी गलत नहीं है। इस भारी-भरकम पत्र को देख-कर ही दिल बैठ जाता है..."

"जब पढ़ोगी कि इसमें क्या लिखा है—तो फिर पता चलेगा कि मुझ बेचारे पर क्या गुजरी।"

"अजी वाह ! आपकी जगह कोई और होता तो अपनी प्रेमिका का इतना भारी-भरकम पत्र पाकर फूला न समाता। आप हैं कि..."

अंजू केवल मुस्करा दी, फिर चुपचाप पत्र पढ़ने लगी। ज्यों-ज्यों वह पत्र पढ़ती जा रही थी त्यों-त्यों उसकी आंखों में शरारत की चमक बढ़ती जा रही थी। पढ़ चुकी तो चहककर बोली, "वाह ! मजा आ गया।"

"मैंने यह पत्र तुम्हारे मजे के लिए नहीं पढ़वाया है, बल्कि मैं जानना चाहता हूं कि अब इसका उपाय क्या है ?"

"सचमुच आप बड़े बुद्धू हैं। क्या आप समझते हैं कि मैं आपको इसका उपाय बताऊंगी ?"

"क्यों नहीं ?"

"अजी, दीपा से आपकी कटी और मेरी दाल गली। भला मैं अपने पांव पर कुल्हाड़ी क्यों मारने लगी ?"

तब कमलजीत ने बहुत ही गम्भीर होकर कहा, "यह बात मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यदि दीपा से मेरा सम्बन्ध टूट गया तो यह न समझना कि मैं तुम्हारे चरणों में गिर पड़ूंगा..."

"बस ! बस !" अंजू ने हाथ ऊपर को उठाकर कहना आरम्भ किया, "अब मैं समझ गई कि आप मजनू की असली संतान हैं। अब तो कोई समाधान निकालना ही पड़ेगा।"

अंजू अपने दोनों हाथ पीठ पर बांधकर इस अंदाज से इधर-उधर टहलने लगी जैसे वह गहरी सोच में डूबी है। आखिर चुटकी बजाकर बोली, "समझ गई—लिखिए।"

आश्चर्यचकित कमलजीत ने पूछा, "क्या लिखूं।"

"इसी पत्र का उत्तर ! और क्या ?"

"मैं इसका उत्तर नहीं लिख सकता।"

"यदि आप लिख नहीं सकते तो सिर पर पांव रखकर मेरे पास क्यों आए ?"

"मैं केवल यह जतलाने आया हूं कि तुम्हारी हरकतों से मुझे कितनी बड़ी हानि हुई है।"

"हानि तो और भी होगी।"

"क्यों, तुम मेरा बुरा क्यों मना रही हो?"

"मैं नहीं, स्वयं आप अपना बुरा चाह रहे हैं।"

"तुम्हारा मतलब···"

"मेरा मतलब यह है कि आप स्त्रियों की मनोवृत्ति बिल्कुल नहीं समझते। अब आप पत्र लिखेंगे तो उसमें क्षमा चाहेंगे, इधर-उधर के बहाने बनाएंगे, अपनी सफाई पेश करेंगे—इनका दीपा पर उल्टा प्रभाव पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आपको यह भी मालूम होना चाहिए कि इस समय आपकी मानसिक स्थिति ऐसी नहीं है कि आप इस पत्र का सही उत्तर दे सकें।"

अनजाने में ही कमलजीत ने अंजू का हाथ थाम लिया और नम्र स्वर में बोला, "यदि तुमको कोई बात सूझी हो तो तुम्हीं पत्र लिखवा दो।"

अंजू चंचलता से हंस दी, परन्तु कमलजीत का मुंह लटका रहा। इस पर वह बोली, "अब तो भई 'सीरियस' हो जाना चाहिए। आइए मैं आपको पत्र लिखवा दूं—लेकिन इससे पहले कम-से-कम मैं कुल्ला कर लूं। इस कार्य के साथ-साथ चाय की चुस्की चलती रहे तो नए-नए विचार सूझेंगे।"

थोड़ी ही देर बाद वे एक तिपाई के निकट कुर्सियां डालकर बैठ गए। निकट ही गर्मागर्म चाय के दो प्याले रखे थे जिनमें से हल्की हल्की भाप ऊपर को उठ रही थी। 'राइटिंग पैड' सामने रखे, उंगलियों में कलम थामे कमलजीत तैयार बैठा था।

अंजू ने जो पत्र लिखवाया वह यूं था :

मेरी प्यारी, मेरी स्वीटी दीपा जी,

आपका पत्र पाकर मेरे मन को गहरा धक्का लगा। इसलिए नहीं कि मैंने कोई ऐसी-वैसी हरकत कर दी थी जिसका रहस्य खुल जाने पर मुझे धक्का लगा हो। बल्कि इसलिए कि मैं आपको बहुत पढ़ी-लिखी 'बुद्धिमती सहज स्वभाव वाली लड़की समझता था। लेकिन···

खैर इस बात को छोड़िए, अब मैं असली समस्या पर आता हूं। परन्तु इससे भी पहले मैं कम-से-कम इस बात की क्षमा जरूर चाहूंगा कि कारण-वश मैं आपको यहां पहुंचने की सूचना नहीं भेज सका। हां तो अब असल मामले पर आते हैं। मैं स्वीकार करता हूं कि आपके रमेश कुमार साहब

ने जो कुछ देखा वह ठीक था। आपके इन साहब बहादुर ने आपके पापा को जो कुछ दिखाया, वह भी ठीक था प्रश्न केवल यह रह जाता है कि आपके रमेश बाबू ने क्या देखा, क्या दिखाया ?

केवल यह कि एक लड़की मेरा हाथ पकड़े खड़ी थी। यहां पर मैं इस बात पर विशेष बल देना चाहूंगा कि मैंने उसका हाथ नहीं पकड़ रखा था, वरन् उसने मेरा हाथ पकड़ रखा था।

इसके बाद ये प्रश्न उठते हैं कि वह लड़की कौन थी, और उसने मेरा हाथ क्यों पकड़ रखा था।

संक्षेप में मैं यह बताना चाहूंगा कि वह लड़की लखनऊ की ही रहने वाली है। उसका नाम अंजू है। बचपन ही से एक साथ खेल-कूद कर हम बड़े हुए। यह तो हुआ लड़की का परिचय। अब मैं यह बताना चाहता हूं कि किसी का हाथ पकड़ कर खड़े रहना उसकी आदत है। वह बचपन से ही ऐसा करती आई है। वह अपने भाई के साथ खड़ी हो तो उसका हाथ थामे रहती है।

अब मैं आपसे पूछता हूं कि कि यदि आप उसे अपने पापा के साथ अपने पापा का हाथ पकड़े हुए देख लें तो क्या आप अपने पापा के विषय में भी वही कुछ सोचने लगेंगी जो मेरे बारे में सोच रही हैं ?

निस्सन्देह उसका मुझसे और मेरा उससे मोह का रिश्ता है। यह प्यार ऐसा नहीं हैं जैसा मुझे आपसे है, या आपको मुझसे है······या था।

आप स्वयं ही सोचिए कि यदि मुझे अंजू से इस प्रकार का प्यार होता जैसा मुझे आपसे है तो मैं उसी का होकर रहता, आपकी ओर हाथ कभी न बढ़ाता।

अब मैं पत्र समाप्त करता हूं। आप इस बात का अनुमान भी नहीं लगा सकतीं कि ऐसा पत्र पाकर मेरे हृदय को कितना गहरा आघात पहुंचा है। उफ ! मैंने आपको क्या समझा था, और आप क्या निकलीं !

आपका शुभचिंतक,
कमलजीत

पत्र लिखवाने के बाद अंजू ने बड़े गौरव से कमलजीत की ओर देखा और पूछा, "कहिए, कुछ जमा ?"

कमलजीत ने स्वीकार किया कि पत्र अच्छा लिखा गया था।

कमलजीत कुर्सी से उठते हुए बोला,

"तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मुझे जाने की इजाजत दो।"

"आपको जाने की इजाजत है···"

बात काट कर कमलजीत ने मुस्कराते हुए पूछा, "लेकिन क्या कोई शर्त भी है?"

"है। इसलिए कि अंजू बिना शर्त के आपको कभी यहां से जाने नहीं देगी।"

"वह शर्त क्या है?"

"दीपा का प्रेमपूर्ण उत्तर आने पर आप मुझे एक फर्स्ट क्लास पार्टी देंगे।"

"मंजूर।"

इस घटना के पांच दिन के भीतर कमलजीत को दीपा का उत्तर मिल गया। वह पत्र निस्सन्देह बड़े प्रेमपूर्ण अंदाज से लिखा गया था।

"माई डार्लिंग! मेरे जीवनसाथी!

मैं आपको शब्दों में नहीं बता पाऊंगी कि आपका पत्र पढ़ कर मेरे मन पर क्या प्रभाव पड़ा। बस इतना समझ लीजिए कि मैं बहुत देर तक रोती रही। वे आंसू खुशी और पश्चाताप के थे। मैंने कुछ सोचे-समझे बिना ही आप पर एक भद्दा-सा आरोप लगा दिया। लेकिन इसके साथ ही मैं आपको इस बात का श्रेय दिए बिना नहीं रह सकती कि आपने क्रुद्ध होने की बजाय मुझे हर बात स्पष्ट रूप से लिख दी। आपने कोई बहाना नहीं बनाया। आप चाहते तो लिख देते कि उस रोज आप कनाट-प्लेस में किसी लड़की के साथ नहीं थे। अपितु आप कनाट प्लेस गए ही नहीं थे। मैं आपके इस बयान को भी स्वीकार कर लेती, क्योंकि मुझे इस बात का विश्वास था कि रमेश कुमार जानबूझ कर भी पापा को आपके विरुद्ध भड़काने की कोशिश कर सकता है। परन्तु नहीं, आपने कुछ भी छिपाने की कोशिश नहीं की। इससे आपके उच्च व्यक्तित्व का अनुमान हुआ और मुझे यह भी मालूम हो गया है कि मेरा कमल कैसे ईमानदार और सच्चे गुण से भरा है। जी हां, इस प्रकार का पत्र लिखने के लिए बड़ा साहस चाहिए। इस प्रकार का साहस किसी ऐसे ही व्यक्ति में हो सकता है। ——

सिद्धांत हों और आदर्शवादी हो तथा किसी सिद्धान्त में विश्वास रखता हो।

इस विषय में और कुछ लिखने की आवश्यकता महसूस नहीं करती। केवल इतना जानती हूं कि मुझे आपसे क्षमा मांगनी चाहिए। यदि आपने मुझे क्षमा नहीं किया तो मुझे स्वयं लखनऊ आकर आपको मनाना पड़ेगा।

इस छोटी-सी घटना का एक लाभ भी हुआ है। वह यह कि अनायास ही मैंने ये महसूस किया कि आप मेरे लिए हैं और मैं आपके लिए। वैसे तो इस निष्कर्ष तक पहुंचने में समय लगता, परन्तु अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं रही।

यह तो है मेरे मन का विचार अब मैं आपके विचार जानना चाहूंगी। यदि आप लिख दें कि आप भी मुझसे सहमत हैं तो मैं सुख की नींद सो सकूंगी।

सम्भव है कि आप यह प्रश्न उठाएं कि क्या हम दोनों के सहमत हो जाने से हम सफलता भी प्राप्त कर सकेंगे ? मेरे पास इसका केवल एक ही उत्तर है। वह यह कि चाहे ज़माना हमें कुछ भी कहे और हमारे रास्ते में कैसी भी अड़चनें डाले, हम एक-दूसरे के होकर ही रहेंगे। यदि दो प्राणी किसी भी बात का दृढ़ निश्चय कर लें तो फिर उन्हें संसार की कोई शक्ति उनके मार्ग से हटा नहीं सकती।

कृपया लौटती डाक से मुझे सूचित कीजिए कि आप मुझसे सहमत हैं।

अन्त में एक बार फिर क्षमा प्रार्थिनी हूं।

सदा आपकी
दीपा।"

यह पत्र पढ़ कर मानो कमलजीत को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने उसे दो-तीन बार पढ़ा। उसका रोम-रोम खुशी से नाच उठा। वह रुका नहीं रह सका। तुरन्त ही रिक्शे में बैठ कर सीधा अंजू के घर पहुंचा।

अंजू दोपहर का भोजन करने के बाद अपने कमरे में बैठी थी। उसने कमलजीत को वहीं बुला लिया। न अंजू कुछ कह पाई और न कमलजीत बोल पाया—उसने केवल वह पत्र आगे बढ़ा दिया।

अंजू फौरन ही समझ गई कि यह पत्र कहां से आया था। उसने उसे चुप पढ़ डाला। जब वह पढ़ रही थी, उस दौरान कमलजीत बड़े गौर से

उनके चेहरे की ओर देखता रहा। उसे कोई भी विशेष प्रतिक्रिया नजर नहीं आई। आखिर अंजू ने बड़ी गम्भीरता से पत्र का कागज तह करके कमलजीत की ओर बढ़ा दिया।

"अब यह बताइए कि पार्टी किस दिन हो रही है?"

"अब तुम कहो, आज, कल, परसों…"

अंजू ने उंगलियों से अपने बालों में कंघी की, फिर दो उंगलियों से अपना माथा धीरे-धीरे बजाती रही, अन्त में चुटकी बजा कर धीरे से बोली, "आलराइट मैन! परसों ठीक रहेगा।"

"लंच या डिनर?"

"लंच! …मैं डिनर में अधिक कुछ खाती नहीं।"

इतवार को बड़े शोर का लंच हुआ। संख्या में वे तीन, थे, यानि कमलजीत, अंजू और किशोर।

पार्टी के तीनों सदस्य बहुत खुश थे। सबसे अधिक प्रसन्न तो मेजबान था। लंच समाप्त होने के बाद वे होटल में से बाहर निकले। कार मौजूद थी। वापस लौटते समय मेहमान अपने मेजबान को उसके घर के सामने उतार कर आगे बढ़ गए।

कमलजीत ने बढ़ कर अपने मकान का छोटा-सा फाटक खोला तो बरामदे में उसे ममता दिखाई दी। दोनों की नजरें मिलीं तो ममता तुरन्त ही बरामदे से उतर कर उनकी ओर लपकी। कमलजीत को लगा कि वह उसी की प्रतीक्षा में वहां खड़ी थी। निकट पहुंच कर बोली, "कोई आपसे मिलने आया है।"

"कौन?"

"मैं उसे नहीं पहचानती। उसने बताया कि वह दिल्ली से आया है तो मैंने उसे बैठक में बैठा दिया। जब मैंने उससे कहा कि आप घर में नहीं हैं तो वह बोला कि दिल्ली से खास तौर पर मिलने के लिए आया हूं। इस पर मैंने प्रतीक्षा करने को कह दिया।"

कमलजीत अजीब-सी उलझन में पड़ गया। बैठक की ओर बढ़ते-बढ़ते उसने फुसफुसा कर पूछा, "क्या उम्र होगी उसकी?"

सिद्धांत हों और आदर्शवादी हो तथा किसी सिद्धान्त में विश्वास रखता हो।

इस विषय में और कुछ लिखने की आवश्यकता महसूस नहीं करती। केवल इतना जानती हूं कि मुझे आपसे क्षमा मांगनी चाहिए। यदि आपने मुझे क्षमा नहीं किया तो मुझे स्वयं लखनऊ आकर आपको मनाना पड़ेगा।

इस छोटी-सी घटना का एक लाभ भी हुआ है। वह यह कि अनायास ही मैंने ये महसूस किया कि आप मेरे लिए हैं और मैं आपके लिए। वैसे तो इस निष्कर्ष तक पहुंचने में समय लगता, परन्तु अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं रही।

यह तो है मेरे मन का विचार अब मैं आपके विचार जानना चाहूंगी। यदि आप लिख दें कि आप भी मुझसे सहमत हैं तो मैं सुख की नींद सो सकूंगी।

सम्भव है कि आप यह प्रश्न उठाएं कि क्या हम दोनों के सहमत हो जाने से हम सफलता भी प्राप्त कर सकेंगे ? मेरे पास इसका केवल एक ही उत्तर है। वह यह कि चाहे ज़माना हमें कुछ भी कहे और हमारे रास्ते में कैसी भी अड़चनें डाले, हम एक-दूसरे के होकर ही रहेंगे। यदि दो प्राणी किसी भी बात का दृढ़ निश्चय कर लें तो फिर उन्हें संसार की कोई शक्ति उनके मार्ग से हटा नहीं सकती।

कृपया लौटती डाक से मुझे सूचित कीजिए कि आप मुझसे सहमत हैं।

अन्त में एक बार फिर क्षमा प्रार्थिनी हूं।

सदा आपकी

दीपा।"

यह पत्र पढ़ कर मानो कमलजीत को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने उसे दो-तीन बार पढ़ा। उसका रोम-रोम खुशी से नाच उठा। वह रुका नहीं रह सका। तुरन्त ही रिक्शे में बैठ कर सीधा अंजू के घर पहुंचा।

अंजू दोपहर का भोजन करने के बाद अपने कमरे में बैठी थी। उसने कमलजीत को वहीं बुला लिया। न अंजू कुछ कह पाई और न कमलजीत बोल पाया—उसने केवल वह पत्र आगे बढ़ा दिया।

अंजू फौरन ही समझ गई कि यह पत्र कहां से आया था। उसने उसे चुप पढ़ डाला। जब वह पढ़ रही थी, उस दौरान कमलजीत बड़े गौर से

उसके चेहरे की ओर देखता रहा। उसे कोई भी विशेष प्रतिक्रिया नज़र नहीं आई। आखिर अंजू ने बड़ी गम्भीरता से पत्र का कागज़ तह करके कमलजीत की ओर बढ़ा दिया।

"अब यह बताइए कि पार्टी किस दिन हो रही है?"

"जब तुम कहो, आज, कल, परसों…"

अंजू ने उंगलियों से अपने बालों में कंघी की, फिर दो उंगलियों से अपना माथा धीरे-धीरे बजाती रही, अन्त में चुटकी बजा कर धीरे से बोली, "आलराइट मैन! परसों ठीक रहेगा।"

"लंच या डिनर?"

"लंच!…मैं डिनर में अधिक कुछ खाती नहीं।"

इतवार को बड़े ज़ोर का लंच हुआ। संख्या में वे तीन थे, यानि कमलजीत, अंजू और किशोर।

पार्टी के तीनों सदस्य बहुत खुश थे। सबसे अधिक प्रसन्न तो मेज़बान था। लंच समाप्त होने के बाद वे होटल में से बाहर निकले। कार मौजूद थी। वापस लौटते समय मेहमान अपने मेज़बान को उसके घर के सामने उतार कर आगे बढ़ गए।

कमलजीत ने बढ़ कर अपने मकान का छोटा-सा फाटक खोला तो बरामदे में उसे ममता दिखाई दी। दोनों की नज़रें मिली तो ममता तुरन्त ही बरामदे से उतर कर उसकी ओर लपकी। कमलजीत को लगा कि वह उसी की प्रतीक्षा में वहां खड़ी थी। निकट पहुंच कर बोली, "कोई आपसे मिलने आया है।"

"कौन?"

"मैं उसे नहीं पहचानती। उसने बताया कि वह दिल्ली से आया है तो मैंने उसे बैठक में बैठा दिया। जब मैंने उससे कहा कि आप घर में नहीं हैं तो वह बोला कि दिल्ली से खास तौर पर मिलने के लिए आया है। इस पर मैंने प्रतीक्षा करने को कह दिया।"

कमलजीत अजीब-सी उलझन में पड़ गया। बैठक की ओर बढ़ते-बढ़ते उसने फुसफुसा कर पूछा, "क्या उम्र होगी उसकी?"

"पचास से कम क्या होगी ?"

आश्चर्य ! भला ऐसा व्यक्ति कौन हो सकता था ?

जब कमलजीत ने बैठक के दरवाज़े का पर्दा उठाया तो उसने बेंत के सोफे पर बहुत बढ़िया सूट और कीमती चमकदार बूट पहने एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति को बैठे देखा। दूसरे ही क्षण वह उसे पहचान गया। दीपा के पापा !

कमलजीत ने तुरन्त दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार कहा।

सेठ चन्द्रमोहन ने केवल हाथ ऊपर उठा दिया।

कमलजीत का हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था और वह पहले अपने दोनों हाथों को एक कुर्सी के बाजुओं पर टिका कर बहुत धीरे से उस पर बैठ गया। एकदम ही उसे सेठजी का शानदार ड्राइंग-रूम याद आ गया। कहां उनकी यह दस फुट चौड़ी और बारह फुट लम्बी बैठक और कहां वह सेठजी का हालनुमा ड्राइंग-रूम। उस ड्राइंग-रूम की दीवारों पर दुनिया के बड़े-बड़े चित्रकारों की पेंटिंग्स लटकी हुई थीं और यहां उसकी बैठक में एक ओर हनुमानजी संजीवनी बूटी वाला पहाड़ उठाए लिए जा रहे थे, दूसरी ओर अप्सरा मेनका महर्षि की तपस्या भंग करने हेतु उसके सम्मुख नृत्य कर रही थी। इस प्रकार कुछ अन्य तस्वीरें भी थीं जो उनके दादा ने किसी मेले से चार-चार आने में खरीदी थीं। बैठक का फर्श केवल ईंटों का था, और उस पर पलस्तर भी नहीं हुआ था।

कमलजीत यूं घबरा और सटपटा रहा था जैसे सेठजी ने उसे बिल्कुल नग्न दशा में आ पकड़ा है। वह अपने दोनों हाथों की उंगलियां एक-दूसरे में उलझाते हुए टकटकी बांधे सेठजी की ओर देख रहा था। वह उनके चेहरे से अनुमान लगाने का प्रयास कर रहा था कि वह किस उद्देश्य से उसे मिलने आए थे। उनके चेहरे पर न क्रोध था, न निराशा, न आशा और न हर्ष······

सम्भवतः सेठजी उसके मन की उलझन को भांप गए। बिना किसी लम्बी-चौड़ी भूमिका के वह बोले, "मैं दीपा के सम्बन्ध में तुमसे मिलने आया हूं।"

यह सुनते ही मानो कमलजीत का हृदय उछल कर उसके कण्ठ में जा फंसा, होंठ सूख गए। पहले उसका जी चाहा कि वह उठ कर एकदम बैठक से बाहर भाग जाए। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि सेठजी एका-

एक दीपा के विषय में बातचीत करने स्वयं उसके घर में आ धमकेंगे। उसका जी इतना घबरा रहा था कि फिलहाल वह इस विषय को टाल देना चाहता था। वह ठीक से बोल भी नहीं पाया। उसके कण्ठ से घत्तख की 'कैं' जैसा स्वर निकला, और उसने पूछा, "आप क्या पियेंगे, ठण्डा या गर्म ?"

सेठजी ने अपने हाथ को हवा में एक-दो बार इस अंदाज से झटका जैसे वह ठण्डे-गर्म की बात तक न सुनना चाहते हों। उन्होंने उसी स्वर में बोलना आरम्भ किया, "हां तो मैं कह रहा था कि दीपा के विषय में बात करने आया हूं।"

कमलजीत के सारे शरीर पर पसीना फूट निकला, और वह लगभग कांपते हुए स्वर में बोला, "दीपा···भला दीपा के विषय में क्या बातचीत हो सकती है ?"

सेठजी बोले, "तुमने कुछ दिन पहले दीपा को जो पत्र लिखा था, वह मैंने पढ़ लिया है। उसे पढ़कर तो शायद मैं यहां न आता, परन्तु दीपा ने जो उसका उत्तर दिया है। पढ़कर मुझे यहां आना ही पड़ा।"

कमलजीत सोचने लगा कि क्या दीपा ने अपना और मेरा प्रत्येक पत्र पापा को दिखा दिया था।

"मुझको पहले कुछ सन्देह हुआ। फिर मुझे वह फाइल मिल गई जिसमें दीपा अपने सारे पत्र रखा करती है।"

अब तक वह कुछ सम्भल चुका था, सहज स्वर में बोला, "आप यही कहने आए हैं कि यह शादी नहीं हो सकती ?"

"नहीं, मैं यह कहने नहीं आया हूं क्योंकि यह शादी हो सकती है।"

कमलजीत का हृदय उछल पड़ा, बोला, "तो गोया आपको इस पर कोई आपत्ति नहीं है ?"

"आपत्ति तो है। मैं नहीं चाहूंगा कि तुम दोनों शादी करो।"

"इस विषय में आप क्या कदम उठाने जा रहे हैं ? मेरा तात्पर्य यह है कि आप इस शादी को रोकने के लिए क्या करना चाहते हैं, या सीधे-सादे शब्दों में मैं जानना चाहता हूं कि आप यह शादी कैसे रोकेंगे।"

"मैं शादी रोकने की कोशिश नहीं करूंगा। परन्तु मैं तुमसे यह कहने आया हूं कि मैं इस शादी को पसन्द नहीं करता।"

"यदि मैं आपका कहना न मानूं तो ?"

"तो तुमको बड़ी परेशानी होगी।"

"आपका मतलब है कि आप मुझे परेशान करेंगे ?"

"नहीं, जिससे तुम शादी करोगे, वह तुम्हें परेशान करेगी।"

"दीपा ?"

"हां, दीपा।"

"मुझे विश्वास नहीं होता।"

"इसका भी कारण है।"

"क्या कारण है ?"

"तुम उसे नहीं जानते।"

"मेरा ख्याल है कि मैं उसे काफी हद तक समझता हूं।"

"काफी हद तक—लेकिन पूरे तौर पर नहीं। कारण यह है कि तुम उसे केवल कुछ दिनों से जानते हो···और मैं उसे उसके जन्म से जानता हूं।"

कमलजीत सोच में डूब गया। शायद कोई ऐसा रहस्य था जो उसे नहीं ज्ञात था, परन्तु दीपा के पिता को ज्ञात था। पूछा, "क्या आपने दीपा से इस विषय में कोई बात की है ?"

"नहीं।"

"क्या यह बेहतर नहीं था आप उससे बातचीत करके इस विषय में उसकी राय मालूम कर लेते और उसके विचारों को समझ लेते ?"

"मैं उसकी राय भी जानता हूं और उसके विचारों को भी भला-भांति समझता हूं।"

"मेरे ख्याल में जो मैं कहना चाहता हूं, या जो मेरे विचार हैं सो तो आप जानते ही हैं। मैं दीपा से प्रेम करता हूं, और करता रहूंगा।"

"मुझे प्रेम करने पर कोई आपत्ति नहीं है।"

"तो ?" कमलजीत ने आश्चर्य से पूछा।

"मुझे विवाह पर आपत्ति है।"

"आपकी इस बात पर मेरे मन को थोड़ा-सा धक्का लगा है। यह अनोखी बात है कि मैं दीपा से प्रेम करूं तो पापा को कोई परेशानी नहीं है, और यदि मैं उससे विवाह करूं तो पापा को परेशानी है।"

"बात अनोखी है, परन्तु तुम ठीक समझे। तुम उससे प्रेम करते रहो। उसके प्रेम में दीवार से सिर टकराओ, नदी में कूद जाओ, जंगलों को निकल जाओ—मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन भगवान के लिए उससे

शादी न करो।"

"दूसरे शब्दों में मैं आपकी नजर में इतना छोटा आदमी हूं कि···"

"पैसा होने या न होने से इन्सान बड़ा या छोटा नहीं होता। मैं तुम्हें किसी प्रकार भी अपने से कम कोटि का इन्सान नहीं समझता। पैसा पैदा करना एक अलग क्रिया है। कोई इसे करता है, कोई नहीं करता। या कोई करता है और सफल होता है।"

"एक ओर तो आपके विचार इतने ऊंचे हैं, और दूसरी ओर—"

"और दूसरी ओर इतने सही हैं।"

"मैं आपका तात्पर्य समझा नहीं।"

"अब जबकि हम समस्या के मूल रूप तक पहुंच चुके हैं, तुम कहते हो कि मेरा मतलब ही तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा है। कोई बात नहीं। मैं जरा और विस्तार से इस समस्या पर प्रकाश डालने का प्रयास करूंगा।"

इतना कहकर सेठजी शान्त हो गए। कमलजीत भी यह सोचकर चुप रहा कि सम्भवतः सेठजी जो कुछ कहना चाहते हैं, उसके लिए उचित शब्दों की तलाश में हैं। आखिर सेठजी ने कहना आरम्भ किया, "मान लो कि दीपा, सेठ चन्द्रमोहन की बेटी, करोड़पति सेठ चन्द्रमोहन की बेटी दीपा, दुल्हन बनकर यहां पहुंच गई।"

सेठजी ने शब्द 'यहां' पर खूब बल दिया, और फिर सारे कमरे पर नजर दौड़ाकर उसका जायजा लेने लगे।

कमलजीत बड़ा समझदार युवक था। अनायास ही उसे लगा जैसे सेठजी ने उसके सिर पर हथौड़ा मार दिया हो।

सेठजी ने फौरन एक हाथ ऊपर उठाकर कहा, "मैं व्यंग्य नहीं कर रहा हूं। यह ऐसी वास्तविकता है जिससे तुम भी इन्कार नहीं कर सकते। आखिर दीपा तुम्हारी दुल्हन बनने के बाद यहां नहीं आएगी तो कहां जाएगी? माना कि धनी न होने के कारण तुम किसी प्रकार भी मुझसे कम श्रेणी के इन्सान नहीं हो, लेकिन बात फिर वहीं पहुंचती है कि क्या दीपा, जो राजमहल में रहने की अभ्यस्त है, यहां रह सकेगी? क्या तुम्हें अच्छा लगेगा? क्या तुम्हारा स्वाभिमान इस बात को सह सकेगा? वह जहां रहती है, जैसा उसका अपना कमरा है, जैसा उसका ड्राइंग रूम है ··उन सब को सम्मुख रखते हुए तुम मेरी बात पर जरा विचार करो।"

सोच-विचार तो उनकी बातों के साथ होता रहा था। उसे बोलने का

अवसर दिए बिना ही सेठजी कहने लगे, "यहां आकर यदि उसे किसी जगह जाना है तो तुम रिक्शा ढूंढ़ते फिरोगे। परन्तु जानते हो कि कई वर्षों से वह अपनी कार का प्रयोग कर रही है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि बाज़ार में जाकर किसी भी समय खड़े-खड़े डेढ़-दो हज़ार रुपये की वस्तुएं खरीद लेना उसके लिए आम बात है।—मेरे ख्याल में आजकल महीने भर का जितना उसका व्यक्तिगत खर्चा है, उतना रुपया तुम साल-दो-साल में भी नहीं कमाते होंगे। मैं पूछता हूं कि क्या यह सब तुमसे चलेगा ? संक्षेप में मैं यह कहना चाहूंगा कि यह समस्या मेरी नहीं तुम्हारी है।"

सेठजी के शब्दों में कोई कटुता नहीं थी, न ही उनके लहजे में व्यंग्य था। बोले, "यदि मैं तुम्हारा बाप भी होता तो तुम्हें यही राय देता कि दीपा से शादी न करो। गोया दीपा के बाप के नाते भी मेरी यही राय है और यदि मैं तुम्हारा बाप होता तो भी यही राय देता—इसका एक पक्ष और भी है।"

सेठजी ने पुनः कहना आरम्भ किया, "यह भी हो सकता है कि तुम्हारी आर्थिक दशा इतनी खराब देखकर दीपा यहां पर कोई बंगला खरीद ले जहां वह अपने साथ तुम लोगों को भी आराम से रख सके। घूमने-फिरने के लिए अपनी कार ले आए। उसके रिश्तेदार मिलने के लिए आते ही रहेंगे। तुम लोगों का रहन-सहन का स्तर ऊंचा करने के लिए सम्भवतः उसे ढाई-तीन हज़ार रुपया महीना अलग से खर्च करना पड़े। यहां पर फिर वही स्वाभिमान वाली बात आ जाती है। क्या तुम यह सब सह सकोगे ? क्या यह सम्भव नहीं कि तुम्हारे लिए यह सब कुछ करके तुम्हारी पत्नी के विचार तुम्हारे विषय में बदल जाएं। दो-तीन वर्ष बाद इश्क का भूत उतर जाने पर तुम उसकी नज़र से ही गिर जाओ—यह बात तो खैर मैं सोच भी नहीं सकता कि तुमने कोई ऐसी योजना बना रखी हो कि जब तुम दीपा को फंसाकर उससे शादी कर लोगे तो उसका बाप अपनी नाक रखने के लिए तुम्हें किसी ऐसे धन्धे में लगा देगा जिससे तुम्हें भी लाखों की आय होने लगेगी। यदि ऐसा हो तो फिर यह इश्क प्रेम तो केवल एक धोखा ही सिद्ध होगा। इस प्रकार दीपा को फंसाने की बजाय क्यों न तुम सीधे मुझ ही से कुछ सहायता मांग लो—लेकिन नहीं, ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। मैं भी घिसा हुआ आदमी हूं। मुझे भी बुरे-भले की पहचान करनी

माती है। मैं सच्चे दिल से महसूस करता हूं कि तुम ऐसे युवक नहीं हो सकते।"

एक बार पुनः उस छोटे से कमरे में मौन छा गया। तब सेठजी बोले, "मुझे जो कुछ कहना था सो कह चुका। मैं तुम्हारा आभार मानता हूं कि तुमने नवयुवकों वाला कोई बेतुका जोश नहीं दिखाया, उत्तेजित नहीं हुए। मैं इसकी कद्र करता हूं। अब तुम्हें इस बात का मौका देता हूं कि यदि तुम्हें कोई भाषण देना है तो मैं उसे सुनने के लिए तैयार हूं।"

कमलजीत का चेहरा उतर चुका था। उसे सेठजी पर ज़रा भी क्रोध नहीं आया। उसे उनकी कोई भी बात गलत नहीं लगी। वह बूढ़ों की तरह अपने दोनों घुटनों पर हाथ रखकर कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और बुझे-बुझे स्वर में बोला, "सेठजी, मैं भी आपका बहुत आभारी हूं, क्योंकि आपने मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया। बेशक मेरे पिताजी भी मुझे यही राय देंगे—अब मैं केवल आपसे इतना जानना चाहता हूं कि मुझे क्या करना होगा।"

सेठजी भी उठ खड़े हुए और उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए बोले, "मैं केवल इतना चाहता हूं कि तुम स्वयं ही दीपा को सूचित कर दो कि तुम इस शादी से इन्कार कर रहे हो। इससे मेरे मन का बोझ हल्का हो जाएगा। और तुम एक बहुत बड़ी मुसीबत से बच जाओगे।"

दीपा को कमलजीत का पत्र संध्या की डाक से मिला। उस समय वह क्लब जाने के लिए तैयार हो रही थी। बन्द लिफाफे को देखकर ही उसका मन नाच उठा। उसे मालूम हो गया कि यह कमलजीत का पत्र था, क्योंकि वह उसके हाथ की लिखावट को पहचानती थी। लेकिन जब लिफाफा फाड़कर पत्र पढ़ा तो एकदम ही उसका चेहरा उतर गया। जो कुछ उसमें लिखा था दीपा ने वह बात स्वप्न में भी नहीं सोची थी। बार-बार पढ़ा, हस्ताक्षर देखे। आखिर विश्वास करना ही पड़ा कि यह कमलजीत के हाथ का ही लिखा हुआ था।

वह तुरन्त ही अपने पिता के कमरे की ओर चल दी। सेठजी भी कहीं जाने के लिए तैयार हो चुके थे। बेटी को देखा तो पूछा, "अभी तक तुम क्लब नहीं गईं ?"

"नहीं ! मगर आप यह बताइए कि मुझे थोड़ा समय दे सकेंगे ?"

"बिल्कुल ! बिल्कुल ! अभी तो मेरे जाने में पन्द्रह मिनट हैं—क्यों, कमलजीत का पत्र आया है क्या ?"

पत्र दीपा के हाथ में था। वह तीव्र स्वर में बोली, "आपको कैसे मालूम ?"

"तुम्हारी शक्ल देखकर।"

"फिर तो आपको यह भी मालूम होगा कि यह सब आप ही का किया कराया है।"

"नहीं बेटी, किया-कराया तो कमलजीत का ही है। हां, मैं इस बात से इन्कार नहीं करूंगा कि मैं उससे मिलने के लिए गया था।"

"पहले आप मुझसे तो बात कर लेते।"

"वह बेकार था, क्योंकि मैं जानता था कि तुम क्या कहोगी।"

"पापा ! मुझे आपसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। अब जरा इस पत्र को पढ़िए।"

सेठजी ने जरा उच्च स्वर में पत्र पढ़ना आरम्भ किया :

"डियर दीपा'

मेरा यह पत्र पाकर तुम्हें आश्चर्य तो होगा, परन्तु मुझे विश्वास है कि तुम बुरा नहीं मानोगी। बात केवल इतनी है कि हम दोनों ने अपने सम्बन्ध बढ़ाने में कुछ जल्दबाजी से काम लिया है। हम एकदम ही शादी की बातें करने लगे। अब मैं यह कहना चाहता हूं कि मैंने शादी का विचार छोड़ दिया है। इसलिए नहीं कि तुममें कोई कमी है, बल्कि इसलिए कि मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूं।

यहां मैं इतना अवश्य कहूंगा कि हमें बहुत अधिक भावुकता से काम नहीं लेना चाहिए। यह बड़ा गम्भीर विषय है। बिना सोचे-समझे कदम उठाने का परिणाम जीवन भर का दुःख और पश्चात्ताप भी हो सकता है। हमारी परिस्थितियां ऐसी हैं कि सिवाय दुःख के और कोई परिणाम निकल ही नहीं सकता।

निश्चय ही तुम यह जानना चाहोगी कि एकाएक ही मुझमें ऐसा परिवर्तन कैसे आया। वास्तव में तुम्हारे पापा मुझसे मिलने यहां आए थे। उन्होंने हम दोनों में जो आर्थिक अन्तर है, उसको इतने स्पष्ट रूप में मेरे सम्मुख रखा कि मुझे विश्वास हो गया कि हम-तुम शादी के बन्धन में न

ही बंधें तो अच्छा रहेगा। मैं तुम्हारे पापा पर कोई दोष नही धरूँगा। उन्हें दुनिया के ऊंच-नीच का अनुभव है, और मैं उनसे सहमत हूं।

मुझे और अधिक कुछ नही कहना है। केवल इतना आश्वासन दूंगा कि तुम्हारे प्रति मेरी शुभकामनाएं सदा बनी रहेंगी। जहां तक शादी का मामला है उस पर अब सोचना भी बेकार है।

तुम्हारा,
कमलजीत।

पत्र पढ़ना समाप्त करके सेठजी बोले, "इसे पढ़कर मुझे बड़ी खुशी हुई है।"

"क्यों न होगी ! इस खुशी को प्राप्त करने के लिए आप विशेष तौर पर दिल्ली से लखनऊ गए थे।"

"नही, मुझे खुशी इस बात की हो रही है कि कमलजीत कितना समझदार युवक निकला। काश ! उसकी आर्थिक दशा इतनी खराब न होती तो मैं निश्चय ही तुमसे उसकी शादी कर देता। भला उससे अच्छा दामाद मुझे कहां मिलेगा ?"

दीपा का दिमाग गर्म होता जा रहा था। सेठजी यह सब पहले से ही जानते थे और वह बड़े धैर्य से इस स्थिति का सामना करने के लिए तैयार थे।

दीपा और भी तीव्र स्वर में बोली, "पापा ! मगरमच्छ के आंसू बहाना इसी को कहते हैं।"

"दीपा, क्या तुमने कमलजीत का घर देखा है ? जिस कमरे मे तुम्हारी कार का ड्राइवर रहता है, वह उनकी बैठक से बड़ा भी है व सुन्दर भी है।"

"जरूर होगा। मैं जानती हूं। मुश्किल तो यह है कि आप जैसे मनुष्यों की मनोवृत्ति इतनी बदल जाती है कि आप हर इन्सान को और जीवन के हर पहलू और समस्या को केवल रुपये की कसौटी पर तौलते हैं।"

"बिटिया ! ऐसे डायलॉग मैंने फिल्मों मे काफी सुने हैं। कोई नई बात हो तो कहो।"

"तो पापा, क्या आप समझते हैं कि आपने जो बात कही वह बहुत नई थी ?"

"बात नई नही थी। यह मैं मानता हू, लेकिन मेरी बात वास्तविकता पर आधारित अवश्य थी।"

"और मेरी बात का वास्तविकता से कोई सम्बन्ध ही नहीं था ?"

"तुम बिल्कुल ठीक समझीं।"

"वह कैसे ?"

"कभी तुमने उस स्तर पर···मेरा मतलब है, उस आर्थिक स्तर पर जीवन व्यतीत किया है जिस पर आज कमलजीत और उसका खानदान व्यतीत कर रहा है ?"

"नहीं, लेकिन जिस आदमी को मैं पसन्द करती हूं, मैं उसके साथ—"

"बस-बस।" सेठजी ने बीच में ही टोकते हुए कहना आरम्भ किया, "अब मैं इश्क पर भाषण नहीं सुनना चाहता। वैसे यदि तुम्हें अपने मन का गुबार निकालना हो तो मैं सुन लूंगा। परन्तु ऐसे भाषण भी बहुत घिसी-पिटी चीज़ होकर रह गए हैं।"

"अच्छा छोड़िए इस भाषण की बात को। आप ही के कथनानुसार आपको कमलजीत जैसा दामाद कहीं नहीं मिल सकता, गड़बड़ केवल आर्थिक दशा की है। मैं पूछती हूं कि क्या आप उसकी आर्थिक दशा सुधारने में सहायता नहीं दे सकते ?"

"क्यों नहीं, निश्चय ही मैं उसे सहायता दे सकता हूं।"

"बस तो फिर यह समस्या ही हल हो गई।"

"समस्या हल नहीं हुई। तभी तो मैं कहता हूं कि तुम अभी बच्ची हो, अक्ल की कच्ची हो।"

"इस समस्या का इससे अच्छा समाधान क्या हो सकता है ?"

"बेशक ! इस समस्या का इससे बेहतर और कोई समाधान नहीं हो सकता। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या कमलजीत मेरा सहयोग लेना पसन्द करेगा ?"

"क्या आपने उससे पूछा ?"

"क्या तुम सोचती हो कि वह इसके लिए तैयार हो जाएगा ? मेरे विचार में वह ऐसा हरगिज़ नहीं करेगा।"

पल-भर कुछ सोचने के बाद दीपा बोली, "आप ठीक कहते हैं। वह बड़ा आदर्शवादी है। वह अपने ससुर की सहायता लेना हरगिज़ पसन्द नहीं करेगा—लेकिन पापा, इससे तो मेरे मन में उसका सम्मान और अधिक बढ़ गया है।"

"मेरी प्यारी बेटी, मेरे मन में उसके प्रति तुमसे भी अधिक सम्मान

है।"

"लेकिन शादी नहीं हो सकती !"

"हां, शादी नहीं हो सकती।"

"आखिर क्यों ?"

"फिर वही मुर्गे की एक टांग ! वह तुम्हारे स्तर तक आना नहीं चाहता, तुम्हें उसके स्तर पर जीवन व्यतीत करने की आदत नहीं है।"

"आदत हो जाएगी।"

"मगर अब कमलजीत तुम्हें अपने स्तर पर रखने के लिए तैयार ही नहीं है।"

"क्यों ?"

"कैसी मूर्खों वाली बात कहती हो !"

"गोया वह समझता है, या उसे आपने विश्वास दिलाया है कि मैं सुख और ऐश का जीवन व्यतीत करने की इतनी आदी हो चुकी हूं कि मैं उसके स्तर पर नहीं रह सकूंगी ?"

"तुम ठीक समझीं।"

कुछ देर सोचकर दीपा पुनः बोली, "क्या आप जानते हैं कि आपने जो स्थिति बनाकर रख दी है उसका परिणाम क्या होगा ?"

"लेकिन शादी के बाद जो समस्याएं उठेंगी और जो दुःख-तकलीफ तुम्हें भोगनी पड़ेगी उसकी कल्पना से ही मेरा मन डूब जाता है।"

"पापा ! चाहे आप इसे मेरी मूर्खता समझिए, परन्तु मैं यह कहे बिना नहीं रह सकती कि इतने धनी बाप की बेटी होते हुए भी मेरी मनोवृत्ति आदर्श हिन्दू स्त्री वाली ही है। हिन्दू स्त्री जिस पुरुष को एक बार पति मान लेती है, उसे सदा ही अपना पति मानती है। मुझसे जो कुछ होना था सो हो गया। बात सिद्धान्त की है, उसूल की है, अपने-अपने व्यक्तित्व की है। मेरा यह आदर्श भले ही आपकी मान्यताओं पर पूरा न उतरे, परन्तु मैं अपने विश्वास पर अटल रहूंगी।"

इतना कहकर दीपा आवेश से भरी जल्दी-जल्दी कदम उठाती हुई बाप के कमरे से बाहर निकल गई।

सेठजी ने उसे रोका नहीं। वह इस स्थिति के लिए पहले से तैयार थे। वह जानते थे कि एक बार तो बेटी से उनकी झिक-झिक अवश्य होगी। इसके साथ ही उन्हें विश्वास था कि धीरे-धीरे दीपा शान्त हो जाएगी।

दीपा के सिलसिले में कमलजीत को जो निराशा प्राप्त हुई थी उसका ज्ञान उसकी मां को भी हो गया। उनसे इस बात को लम्बे समय के लिए छिपाए रखना अनुचित समझकर ममता ने स्वयं ही उन्हें सब-कुछ बता दिया। मां को जो दुःख था वह केवल बेटे के कारण ही था। यदि बेटा दीपा को भूल जाए और उसकी जगह किसी अन्य लड़की से शादी करने को तैयार हो जाए तो मां का हृदय भी इसी पर सन्तुष्ट हो सकता था।

इत्तफाक से एक दोपहर को जबकि घर में और कोई नहीं था तो मोहल्ले-भर की चाची उससे मिलने चली आई। बातों-बातों में कमलजीत की मां से न रहा गया और उसने अपने मन का यह दुःख चाची को भी बता दिया।

मन-ही-मन चाची गद्गद हो उठी। परन्तु मुंह से वह कमलजीत की मां को सान्त्वना देती रही। बोली, "बहन, अपना मन बुरा न करो। भगवान एक द्वार बन्द करता है तो कई द्वार खोल देता है।"

"क्या कहूं, मुझे तो पहले ही यह बात खटक गई थी कि लखपति लड़की से रिश्ता हो नहीं सकेगा। परन्तु मैंने कोई आपत्ति नहीं उठाई। सोचा कि कमलजीत पढ़ा-लिखा है और उसे सलाह-मशवरा देने वाली ममता जैसी बहन मौजूद है, आखिर मैं क्यों खामखाह बीच में टांग अड़ाऊं। अब वे दोनों ही परेशान हैं। मैं तो केवल इतना ही चाहती हूं कि कमलजीत की शादी हो जाए। लड़की चाहे उसे जो भी पसन्द हो, मुझे इससे मतलब नहीं।"

चाची ने उसके हाथ पर हाथ रखकर कहा, "भगवान पर भरोसा रखना चाहिए। मेरा मन तो कहता है कि कमलजीत की दीपा से ही शादी होगी।"

"दीपा का तो विचार ही मैंने मन से निकाल दिया है।"

"ऐसा न कहो, बहन! जब दोनों का प्यार सच्चा है तो भगवान का आशीर्वाद भी अवश्य मिलेगा। ऐसा मेरा विश्वास है।"

कुछ समय और बातों में गुज़र गया। चाची विदा लेने के लिए उत्सुक हो रही थी। उनके घर से निकली तो सीधी पुरी साहब के यहां पहुंची।

पुरी साहब भी घर पर मौजूद थे। चाची ने संकेत किया तो वह उठे और वे दोनों अलग कमरे में चले गए। चाची को इतना आपे से बाहर होते देखकर पुरी साहब ने पूछा, "आज तो आप फूली नहीं समातीं। कोई खास

बात है क्या ?"

चाची के मुंह में कुछ बचे-खुचे दांत ही रह गए थे। वह हंसी तो कोई दांत इधर कोई उधर अलग-अलग खूंटों की तरह दिखाई देने लगे। बोली, "खुशी का विशेष कारण है। उसका सम्बन्ध तुम ही से है।"

"मैं भी तो सुनूं।"

"बस समझो तुम्हारा काम बन गया।"

पुरी साहब कुछ नहीं समझे। चाची ने फिर कहना शुरू किया, "जब तुम्हें बेटा कहा है तो इस शब्द की लाज भी तो रखनी होगी।"

"अब पहेलियां न बुझाइए। जल्दी से कह डालिए।"

चाची ने आरम्भ से अन्त तक सारी कथा सुना डाली। पुरी साहब को निराशा हुई, बोले "यह तो सचमुच बड़े दुःख की बात है, लेकिन यह समझ में नहीं आया कि इससे मेरा भला कैसे हो जाएगा।"

"अरे बेटा, यदि तुम इतने पढ़े-लिखे न होते तो निश्चय ही सब कुछ समझ जाते।"

"लेकिन आप तो अधिक पढ़ी नहीं हैं।"

"इसीलिए तो मैंने एक योजना बनाई है।"

इसके बाद चाची ने अपनी अपनी योजना बड़े विस्तार से पुरी साहब के सामने रख दी। सब कुछ सुन लेने के बाद पुरी साहब बोले, "चाची, अनपढ़ होते हुए भी आपकी बुद्धि बहुत दूर तक पहुंचती है। मैं आज ही से इसका प्रयत्न आरम्भ कर दूंगा। मुझे आशा है कि कोई विशेष कठिनाई नहीं होगी।"

चाची से इस बातचीत के कुछ ही दिनों बाद ममता सदा की तरह उनके पास आई। पड़ोसी होने के नाते हर दूसरे-तीसरे दिन वह उनके घर जाती रहती थी और वह भी उनके यहां आते रहते थे।

उस रोज़ पुरी साहब बोले, "ममता जी, आज आप ज़रा मेरे साथ चलिए।"

पहले भी एक-दो मौकों पर ममता को पुरी साहब के साथ जाने का इत्तफाक हुआ था। इसमें आपत्तिजनक कोई बात नहीं थी, फिर ममता ने पूछा, "कोई खास बात है क्या ?"

"मेरी दृष्टि से देखिए तो खास बात ही है।"

ममता ने अपनी कलाई से बंधी घड़ी पर नज़र डालते हुए कहा, "घर-

...से तो मेरा ऐसा कोई ज़िक्र हुआ नहीं। वे तो यही समझेंगे कि मैं ...के घर में हूं।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है? चाहे हमारे घर में रहें या थोड़ी देर के ...मेरे साथ चली चलें।"

ममता केवल इतना जानती थी कि पुरी साहब बहुत ही भले आदमी ...। उनके साथ आने जाने पर उसके घर के किसी व्यक्ति को आपत्ति नहीं ... सकती थी। अगर इस समय वह उसे अपने साथ चलने को कह रहे थे ...इसका भी कोई उचित कारण होगा।

पुरी साहब फिर बोले, "यदि आपको अधिक संकोच हो रहा है तो घर वालों को पहले से ही सूचित कर दें।"

यह सोचकर कि यह एक प्रकार से पुरी साहब का अपमान करने वाली बात थी, ममता जल्दी से बोली, "नहीं भला इसकी क्या जरूरत है! न मुझे कोई संकोच है न घर वालों को कोई आपत्ति हो सकती है।"

"तो चलिए। कार पर चलेंगे, अधिक से अधिक पच्चीस तीस मिनट तक लौट आयेंगे।"

वे दोनों कार में तीव्र गति से चले जा रहे थे। ममता ने मुस्कराकर पूछा, "क्या यह नहीं बतायेंगे कि आप मुझे कहां ले जा रहे हैं?"

"मैं आपको दूर बहुत दूर ले जा रहा हूं। उस क्षितिज की रेखा के भी उस पार..."

ममता मुस्कराने लगी।

पुरी साहब फिर बोले, "पहले बंगाली फिल्मों में ऐसी बात अक्सर सुनने में आती थी। एक पात्र के पूछने पर दूसरा पात्र कहता या कहती थी मुझे जाना है...दूर जाना है...बहुत दूर।"

पुरी साहब के अभिनय पर ममता को बेअख्तियार ही ज़ोर की हंसी आ गई।

आखिर नगर के बाहर वाले खुले इलाके में एक बंगले के सामने पहुंच कर कार रुक गयी। पुरी साहब ने ममता के उतरने के लिए कार का दरवाज़ा खोल दिया। गेट के पास पहुंचकर बंगले के सामने फैली हुई फुलवारी पर नज़र दौड़ाते हुए ममता ने पूछा, "हम किसके यहां जा रहे हैं?"

स-4

"आप मेरे यहां ही आ रही हैं।"

"लगता है कि आप आज मजाक के मूड में हैं। आखिर कब तक मजाक करते चले जायेंगे?"

अब वे गेट के भीतर घुस चुके थे और बंगले की ओर बढ़ रहे थे। पुरी साहब कह रहे थे, "मैं मजाक के मूड में नहीं हूं। अब भी जो कुछ कह रहा हूं, पूरी गम्भीरता से कह रहा हूं।"

वे बरामदे तक पहुंच गए। पहले कमरे के भीतर झांकने पर ममता को लगा कि बंगला खाली पड़ा था।

पुरी साहब बोले, "पुराना होने पर भी यह बंगला बुरा नहीं है। आपका क्या ख्याल है?"

"आप ठीक कहते हैं। लेकिन क्या आप यह बंगला खरीदने जा रहे हैं?"

"मैं तो इसे खरीद भी चुका। कुछ ही दिनों में अन्दर-बाहर से इसकी सफाई हो जाएगी।"

"तब तो मेरी बधाई स्वीकार कीजिए। गोया आप मुझे अपना बंगला दिखाने लाए हैं?"

"जी—लेकिन केवल इतनी-सी बात नहीं है।"

पुरी साहब के मुंह से ये शब्द ममता को कुछ अजीब-से लगे। भला मकान दिखाने के अतिरिक्त उनका और क्या उद्देश्य हो सकता था। मगर ममता ने इस विषय पर कुछ और अधिक बातचीत करना उचित नहीं समझा। बोली, "कुल कितने कमरे होंगे इसमें?"

"चार बेडरूम हैं। ड्राइंग-रूम, डाइनिंग रूम के अलावा किचन, स्टोर रूम आदि भी हैं। फुलवारी के उस पार बंगले से अलग नौकरों के रहने के लिए कुछ कोठरियां भी बनी हुई हैं।"

पुरी साहब ने घूम-फिरकर ममता को पूरा बंगला दिखाया। इस दौरान ममता के मन में कहीं यह बात भी चलती रही कि पुरी साहब के कहे हुए उन शब्दों का वास्तव में अर्थ क्या था? बंगला दिखाने के अतिरिक्त और क्या रहस्य था? यह कोई ऐसी बात भी हो सकती थी जो उसे बिल्कुल पसन्द न हो। घूमते-फिरते समय पुरी साहब ने कोई ऐसी हरकत नहीं की जिससे उन पर किसी प्रकार का सन्देह किया जा सकता।

वे लौटकर वापस बंगले के सामने वाली फुलवारी में पहुंच गए तो

ममता को इत्मीनान हो गया कि पुरी साहब के मन में कोई ऐसी-वैसी बात नहीं थी। वे अब वापस लौट रहे थे। कार के निकट पहुंचकर पुरी साहब ने उसके बैठने के लिए दरवाज़ा खोल दिया। ममता एक कदम अन्दर रखकर रुक गई। और उसने मुड़कर पुरी साहब पर नजर डालते हुए पूछा, "अच्छा तो आप कब तक इस बंगले में आ रहे हैं ?"

"मैं नहीं, आप आ रही हैं। मेरा मतलब है कि आपके घर के सभी व्यक्ति यहां आ जायेंगे।"

ममता साड़ी समेटते हुए सीट पर बैठ गई और बोली, "अभी-अभी आपने कहा था कि आप मज़ाक के मूड में नहीं हैं, लेकिन यह मज़ाक नहीं तो और क्या है ?"

"आप मुझे गलत न समझिए। मुझे मौका दीजिए कि मैं आपको यह बता सकूं कि मैं यह सुझाव पूरी गम्भीरता से पेश कर रहा हूं।"

स्टेयरिंग वाली साईड को जाने की बजाय पुरी साहब खिड़की के चौखटे पर हाथ रखकर जहां-के-तहां रुक गए और गम्भीर स्वर में बोले, "आप बुरा न मानें तो मैं इस सुझाव की पृष्ठभूमि भी समझा दूं।"

ममता ने एक भरपूर नज़र पुरी साहब पर डाली। उसके दिमाग की हालत धुआं-धुआं-सी हो रही थी। उसने मुंह से कुछ नहीं कहा।

तब पुरी साहब ने बताया कि उन्हें मालूम हो चुका है कि कमलजीत का दीपा से रिश्ता कैसे खटाई में पड़ गया। इसीलिए उन्होंने बंगला खरीदा। वह चाहते थे कि कमलजीत अपने पूरे खानदान सहित इस बंगले में आकर रहने लगे। बेशक यह बंगला किसी लखपति के बंगले का मुकाबला नहीं कर सकता, परन्तु यह ऐसा भी नहीं है कि जहां सेठ जी की बेटी को रहने में शर्म महसूस हो, या जहां स्वयं सेठजी या उनके रिश्तेदारों को आने-जाने में संकोच हो। इस बंगले में रहने वाला लखपति न सही, परन्तु गरीब भी नहीं हो सकता।

ममता ने ये सब बातें बड़े ध्यान से सुनीं। उसकी नज़र में पुरी साहब का सम्मान कहीं अधिक बढ़ गया। परन्तु वह यह भी जानती थी कि पुरी साहब एक अनहोनी बात कह रहे थे। बोली, "पुरी साहब ! आपके स्नेह और शराफत की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है, परन्तु यह सब कैसे हो सकेगा। हमारे घर के लोग आपके इस बंगले में आकर रहने को तैयार भी होंगे ?"

तब पुरी साहब ने फिर एक लम्बा-चौड़ा बयान देकर ममता को समझाया कि इस समय छोटी-मोटी बातों को सोचना उचित नहीं होगा। दीपा और कमलजीत दो प्रेमियों की जिन्दगी और मौत का सवाल था। रही बंगले की बात तो उसका सीधा-सादा उपाय यह है कि कमलजीत इस बंगले का किराया दे दिया करे। अभी यह किराया उतना ही होगा जितना कि कमलजीत दे सकता है। उसके बाद जैसी स्थिति होगी, वैसा किया जाएगा।

जिस गम्भीरता और सच्चाई से पुरी साहब ये सब बातें समझा रहे थे, उसको सम्मुख रखते हुए ममता को कोई ऐसी बात कहने का साहस नहीं हो पाया जिससे पुरी साहब के हृदय को ठेस लगे। उसने केवल इतना कहा "आपको यह बात भैया से ही कहनी चाहिए थी। क्यों, मेरा यह विचार गलत तो नहीं ?"

"आपने बिल्कुल ठीक कहा। पहले मेरा यही इरादा था कि सीधे उन्हीं से बात करूं। फिर मैंने सोचा कि मर्द होने के नाते शायद उनके स्वाभिमान को चोट लगे तो वह इस बात पर सहमत ही न हों। आपसे मैं इसलिए कह रहा हूं कि आप बहन के नाते अपने भाई को यह सब समझा कर इस बात पर राजी कर सकती हैं। वचन दीजिए कि आप ऐसा जरूर करेंगी।"

ममता क्षण-भर कुछ सोचने के बाद बोली, "अच्छा ! मैं भैया से इस बात का जिक्र जरूर करूंगी।"

तब वे घर को लौट पड़े। रास्ते-भर पुरी साहब ममता को समझाते रहे कि कमलजीत और दीपा की शादी किसी-न-किसी तरह से अवश्य हो जानी चाहिए, अन्यथा इस उम्र में उनके हृदय पर लगा यह घाव कभी नहीं भर सकेगा।

अपने घर पहुंचकर ममता को पता चला कि कमलजीत अभी बाहर से नहीं लौटा। लगभग डेढ़ घंटे बाद वह लौटा तो उस समय तक ममता के मन में कुछ परिवर्तन आ चुका था। वह इसी समस्या पर सोचती रही थी। बार-बार उसे यही महसूस होता था कि कमलजीत पुरी साहब के बंगले में

रहने के लिए तैयार नहीं होगा। यदि एक बार उसने न कर दी तो समस्या और भी टेढ़ी हो जाएगी। सोचते-सोचते ममता इस परिणाम पर पहुंची कि क्यों न अंजू के भाई किशोर से मशवरा लिया जाए। किशोर प्रतिदिन क्लब में बैडमिंटन खेलने जाया करता था। कभी-कभी, सप्ताह में दो-एक बार उसके बुलाने पर ममता वहां बैडमिंटन खेलने चली जाती थी। उसे याद आया कि आज भी उसे वहां जाना है। सोचा कि क्यों न पहले उसी से इस विषय पर बातचीत की जाए। उन दोनों की आपस में काफी बेतकल्लुफी हो गई थी। देखने वालों को यह सन्देह भी होने लगता कि सम्भवतः वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। वास्तव में नौबत यहां तक नहीं पहुंची थी, परन्तु वे दोनों अच्छे मित्र बन चुके थे।

संध्या के समय रैकेट लेकर वह तैयार खड़ी थी कि किशोर स्कूटर लेकर आ पहुंचा। ममता ने साड़ी की बजाय खेलने के लिए शार्ट्स पहन रखे थे। पांव में सफेद रंग के मौजे और रबड़ सोल के जूते थे। किशोर भी लगभग इन्हीं कपड़ों में आया, वह उसके पीछे बैठी और वे फर्राटे भरते हुए क्लब की ओर चल दिए।

रास्ते में किशोर ने पूछा, "क्या कोई खास बात है?"

पीछे बैठी ममता को किशोर का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था, केवल उसके हवा में उड़ते हुए काले बाल नजर आ रहे थे। कुछ आश्चर्य भरे स्वर में बोली, "खास बात?"

"हां!"

"क्या बेतुकी बातें कर रहे हो! समझ में नहीं आ रहा कि खास बात से तुम्हारा मतलब क्या है।"

दोनों ही हंसने लगे और इसी तरह हंसते-बोलते वे क्लब में जा घुसे।

स्कूटर को एक ओर खड़ा करके किशोर ने नज़र दौड़ाई और फिर उत्सुकता से बोला, "देखो, अभी एक कोर्ट तो खाली पड़ा है। चलो जल्दी से गेम जमा लें।"

ममता ने उसका बाजू थामकर कहा, "नहीं, अभी कुछ बातें करनी हैं। खेल बाद में होता रहेगा।"

क्लब के दूसरे मेम्बरों से कुछ दूरी पर जाने के बाद ममता एक पेड़ के निकट रुक गई तो किशोर उसका हाथ थामकर बोला, "हां तो कहो कि वह खास बात क्या है।"

"मेरा हाथ तो छोड़ दो, इस प्रकार की कोई खास बात नहीं है।"

"हाथ थाम कर खड़े होना तो मेरी आदत है। खास बात से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?"

"तुम्हें मालूम होना चाहिए कि इस क्लब के सभी सदस्य पढ़े-लिखे और बड़े सभ्य हैं। इनमें से कोई भी व्यक्ति मुंह से कुछ नहीं कहेगा।"

विवश होकर ममता ने अपना हाथ उसके हाथ में ही रहने दिया और फिर उसने पुरी साहब के सुझाव वाली सारी बात कह दी।

सब कुछ सुनने के बाद किशोर बोला "पुरी साहब का सुझाव तो बुरा नहीं है।"

ममता ने इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए कहा, "अब तो मेरा हाथ छोड़ दो ! देखो लान पर बैठे लोग हमारी ओर देख रहे हैं।"

किशोर ने हाथ छोड़ दिया और बोला, "अब तुम्हारी समस्या क्या है ?"

"समस्या केवल यह है कि भैया को कैसे राजी किया जाए। पहले मेरा विचार था कि मैं स्वयं ही भैया से यह बात करूं। परन्तु फिर मैंने सोचा कि यदि वह मेरे कहने पर न माने तो समस्या और भी जटिल हो जाएगी। इसीलिए तुमसे मशवरा करने की सोची। तुमको पुरी साहब का यह सुझाव पसन्द है तो फिर हम दोनों भैया से इस विषय पर बातचीत कर सकते हैं।"

"मैं सहमत हूं और तुम्हारा साथ देने को भी तैयार हूं।"

"अच्छा तो एक-दो गेम खेल कर हमारे घर चलो ताकि भैया से बातचीत हो सके।"

"ठीक।"

उन्होंने दो गेम खेल लिए तो ममता ने वापस चलने का इशारा किया।

वे एक बार फिर स्कूटर पर बैठे और वापस लौट आए। कमलजीत घर पर ही मौजूद था। उसके होंठों पर फीकी-सी मुस्कराहट आई और वह हाथ से एक कुर्सी की ओर संकेत करते हुए बोला, "बैठो।"

किशोर बैठ गया और बोला "एक खास बात कहनी है।"

"तो चलो बैठक में चलते हैं। कॉफी आ जाए तो दरवाजा भेड़ देंगे। वहां कोई नहीं घुस पाएगा।"

बैठक में पहुंच गए तो किशोर ने सोचा कि बात का सिलसिला तो आरम्भ कर ही देना चाहिए। वह गम्भीरता से बोला, "भैया कमलजीत ! न जाने तुम इस विषय पर बात करने का मुझे अधिकार दो या न दो। मगर मैं चाहूंगा कि दीपा से तुम्हारी शादी हो जाए तो बहुत अच्छा है। कारण यह कि ऐसा न होने से जो निराशा और 'फ्रस्ट्रेशन' तुम दोनों को होगी, उसका प्रभाव तुम दोनों के हृदय पर जीवन-भर रहेगा।"

किशोर को भय था कि शायद कमलजीत को यह अच्छा न लगे, या वह उसे टालने की कोशिश करे। लेकिन कमलजीत ने बड़े धैर्य से उत्तर देते हुए कहा, "हमारे-तुम्हारे घर के से सम्बन्ध हो गए हैं। इसलिए मेरी किसी निजी समस्या पर सलाह-मशवरा देने का तुमको पूरा अधिकार प्राप्त है। मित्र ! चाहा तो मैंने भी था और दीपा ने भी कि यह शादी हो जाए। मगर कुछ अड़चनें पहाड़ बन कर हमारे बीच खड़ी हो गई हैं।"

"ममता के साथ इन्हीं अड़चनों के विषय में बात हो रही थी। भई तुम्हारा-हमारा अन्तर यह है कि तुम घोर 'इंटेलेक्चुअल' व्यक्ति हो। जिस कदर मीन-मेख तुम निकालते हो वह हम जैसे आदमी नहीं निकाल सकते ! हम तो हर समस्या के 'प्रैक्टिकल' पहलू को देखते हैं। एक समाधान हमारे सामने है। भय केवल इतना ही है कि तुम अपनी ओर से उसमें कोई अड़चन खड़ी न कर दो।"

"भला मैं ऐसा क्यों करने लगा। आखिर मेरी ही तो गर्दन फंसी हुई है।"

"मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारी गर्दन बाहर निकालने का जो समाधान हमारे सम्मुख है वह सफल रहेगा।"

"मैं भी तो सुनूं।

इतने में ममता छोटी-सी ट्रे में कॉफी के तीन मग और दो प्लेटों में भुने हुए काजू और नमकीन बिस्कुट लेकर पहुंच गई। उसे देख कर किशोर बोला, "इस समाधान के बारे में ममता ही तुमको बताएगी। फिर हम तीनों मिलजुल कर इस पर सोच-विचार करेंगे। सच पूछो तो ममता और मुझ को इस पर अधिक सोच-विचार करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम पहले ही सहमत हो चुके हैं।"

गर्म-गर्म कॉफी की चुस्कियों का हल्का-हल्का शोर वातावरण में उठा और इसके साथ ही ममता ने भाई को सब कुछ बता दिया।

तब किशोर बोला, "जैसा कि मैंने कहा था कि आदर्शवादी होने के कारण शायद तुम्हे पुरी साहब की 'ऑफर' स्वीकार करने में कोई संकोच हो तो फिर कोई बात बन नही सकेगी।"

कमलजीत सोच मे डूब गया। फिर उसने सहज स्वर में कहा, "क्या तुम्हारे विचार मे हमें पुरी साहब के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेना चाहिए। आखिर यह पूरा बंगला खरीद कर हमें दे रहे हैं।"

किशोर ने समझाया, "देखो भई, बंगला तो उन्हें खरीदना ही था। उनकी जेब मे इतने रुपए रहे होंगे कि वह कोई 'प्रापर्टी' खरीद सकें। यह माना जा सकता है कि तुम्हारी कठिनाई दूर करने के लिए उन्होंने यह काम जरा जल्दी से कर डाला। दूसरी बात यह है कि वह तुमको यह बंगला भेंट नही कर रहे हैं केवल रहने के लिए दे रहे हैं। अगर तुम चाहो तो वह उसका किराया भी स्वीकार कर लेंगे।"

"भला हम बंगले का किराया कैसे दे सकते हैं ?"

"बच्चों की-सी बातें न करो। यह बात तो स्पष्ट है कि यह तुम लोगों की सहायता करना चाहते हैं। इसलिए वह इतना भारी किराया तो स्वीकार ही नही करेंगे जो तुम दे न पाओ, या तुम्हारी हैसियत से बाहर हो।"

अब ममता बोली, "हमने यह तय किया है कि जितनी जल्द हो सके हम उस बंगले मे चले जाएं। तब तुम दिल्ली जाकर एक बार फिर दीपा के बाप से मिलो। बाप-बेटी दोनो से सलाह-मशवरा करो। तुम सेठ जी को इतना तो समझा ही सकते हो कि अब हमारा निवास-स्थान ऐसा है जिसमें रह कर उनकी बेटी को बहुत अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। बाकी बातें भी धीरे-धीरे ठीक हो जाएगी।"

कमलजीत अपने आपको बिल्कुल विवश-सा महसूस कर रहा था, बोला "भई जो तुम चाहो, सो करो। मैं किसी प्रकार की अड़चन नहीं डालना चाहता।"

ममता और किशोर दोनो के चेहरे खिल उठे। आखों-ही-आखों में वे दोनो सहमत हो गए कि कमलजीत को फौरन ही पुरी साहब के पास ले चलना चाहिए, और इसी समय बंगले के विषय मे सब-कुछ तय हो जाना चाहिए। जब लोहा गर्म हो तभी उस पर हथौड़े की चोट जमा देनी चाहिए।

पुरी साहब कौन दूर रहते थे ! चन्द मिनटों में वे तीनों उनके घर मे

बैठे थे। उनके चेहरों को देखते ही पुरी साहब समझ गए कि उनकी योजना सफल हो गई थी। बेचारे आवश्यकता से कुछ अधिक ही भले मनुष्य थे। मन-ही-मन सोचने लगे कि इस तरह ममता को अपने जाल में फंसाना उचित नहीं था। परन्तु उन्होंने निश्चय कर लिया कि वह ममता की सहायता तो अवश्य करेंगे, मगर इसका अनुचित लाभ उठाने की कोशिश नहीं करेंगे।

थोड़ी ही देर में यह बात तय हो गई कि दूसरे दिन ही मजदूर लगा बंगले के कमरों को भीतर से बिल्कुल ठीक-ठाक कर दिया जाएगा, ताकि वे बंगले में जा सकें। बंगले के बाहर की मरम्मत और लिपाई-पुताई बाद में होती रहेगी।

इन तीनों ने पुरी साहब को धन्यवाद दिया। वहां से निकले तो किशोर कमलजीत के यहां नहीं रुका। काफी देर हो चुकी थी, इसलिए वह स्कूटर पर बैठ कर विदा हो गया।

दूसरे दिन ही पुरी साहब ने कई मज़दूरों को लगा कर काम आरम्भ करा दिया। परिणाम यह हुआ कि पांच दिन के अन्दर भीतर का काम समाप्त हो गया, तथा कमलजीत का परिवार वहां जा पहुंचा। दीपा के लिए एक कमरा खास तौर पर सजा दिया गया। ताकि जब वह दुल्हन बन कर आए तो उसे अधिक परेशानी का सामना न करना पड़े।

अब यह सलाह-मशवरा होने लगा कि कमलजीत कब दिल्ली जाए और किस ढंग से सारी बातें तय की जाएं।

दिन में चार बजे के करीब सारा परिवार चाय पीने बैठा तो इतने में पुष्पा वहां आ पहुंची। बंगले में वह पहली बार आई थी। लेकिन उसके चेहरे से लगता था कि वह अधिक खुश नहीं थी! फिर भी घरवालों ने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया। माता जी बोलीं, "आओ पुष्पा, बड़े अच्छे समय पर पहुंच गई। आओ! हमारे साथ चाय पिओ!"

पुष्पा एक खाली कुर्सी पर बैठ गई।

चाय चलती रही, और इसके साथ-साथ बातें भी चलती रहीं।

कमलजीत पुष्पा की ओर झुककर उसके कान में फुसफुसाया, "तुम कुछ परेशान-सी लगती हो।"

जवाब में वह भी फुसफुसाई, "हां, ठीक कहते हो भैया!"

"क्या मुझे नहीं बता सकतीं कि तुम्हारी परेशानी का कारण क्या है?"

"बताने के लिए तो आई हूं।"

कमलजीत ने इधर-उधर नजर दौड़ा कर फिर पूछा, "सबके सामने नहीं बताना चाहती ?"

"अभी जरा अकेले में ही बात हो जाए तो ठीक रहेगा।"

"अच्छा तो चलो !"

वे दोनों उठ कर कमरे में चले गए। घरवालों के लिए यह कोई नई बात नहीं थी। कमरे में पहुंचते ही पुष्पा की आंखें डबडबा आईं।

कमलजीत घबरा कर बोला, "कुछ कहो भी न।"

"कैसे कहूं।"

"कहोगी नहीं तो क्या डबडबाती आंखों से आंसू ही गिराती रहोगी ?"

पुष्पा ने रूमाल से अपनी आंखें पोंछीं, नाक पोंछी और सम्भलने की कोशिश करते हुए फिर बोली, "तुमने कुछ नहीं सुना ?"

"किसके विषय में ?"

"दीपा के बारे में।"

कमलजीत घबरा गया, पूछा, "क्या उसने कहीं शादी कर ली है ?"

"नहीं।"

"क्या उसकी मंगनी हो गई है ?"

"नहीं।"

"आखिर उसे हुआ क्या है ?"

"उसने आत्महत्या कर ली है।"

दीपा की आत्महत्या की खबर सुन कर कमलजीत बिल्कुल स्तब्ध-सा रह गया। वह टकटकी बांधे पुष्पा की ओर देखे जा रहा था। पुष्पा नाक पर रूमाल रखे सिसकियां भर रही थी। कमलजीत उसके रोने का कारण ठीक से समझ नहीं पाया। उन दोनों की शादी में पुष्पा ने तो अड़चन डालने की कोशिश की थी, इसलिए उसके रोने का कारण यह तो हो नहीं सकता था कि कमलजीत भैया का जीवन अगाध हो गया। वह बोला, "क्या रमेश कुमार ने दिल्ली से लिखा था ? मेरा मतलब है कि क्या उसने तुम्हें सूचित किया है ?"

"हां।"

"उसकी और दीपा की शादी में तो कोई अड़चन भी नहीं हो सकती थी। उसे सचमुच बड़ा दुःख हुआ होगा।"

"मुझे उससे क्या लेना! मैंने तो भैया तुमको बताया है…"

इतने में ही ममता उधर आ निकली, बोली, "आप दोनों यहां खड़े हैं, चाय की मेज़ से उठकर चले आए। क्या अभी तक आपकी बातें खत्म नहीं हुई?"

कमलजीत ने इशारे से उसे अपने पास बुलाया। उन दोनों की शक्ल निकट से देख कर ममता भी गम्भीर हो गई। कमलजीत ने उसे बताया, "पुष्पा खबर लाई है कि दीपा ने दिल्ली में आत्महत्या कर ली है।"

ममता मानो सुन्न-सी होकर रह गई। बोली, "पुष्पा को कहां से पता चला?"

"दिल्ली से रमेश कुमार ने इसे सूचित किया है।"

अब तो ममता को भी कुछ नहीं सूझ रहा था कि क्या कहे। फिर सम्भल कर उसने इस बात पर बड़ा शोक प्रकट किया और बोली, "चलिए बैठ कर चाय का प्रोग्राम तो खतम कर लीजिए। ये बातें तो बाद में भी होती रहेंगी।"

वे तीनों चाय की मेज पर लौट आए। अब तो ममता की मां ने भी भांप लिया और पुष्पा की ओर देखते हुए बोली "पुष्पा आज कुछ उदास नजर आती है। क्या कोई खास बात है?"

पुष्पा ने इन्कार में सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं तो।"

ममता ने अपनी मां को इशारे से चुप रहने को कहा।

चाय चलती रही। बाद में पुष्पा घर जाने के लिए उठ खड़ी हुई।

वह चली गई तो इन सबने बैठ कर उसकी लाई हुई खबर पर सोच-विचार शुरू कर दिया। मां को भी बड़ा दुख हुआ। लेकिन यह तो केवल ममता ही जानती थी कि कमलजीत के मन की उस समय क्या हालत हो रही थी। वह भाई को साथ लेकर कमरे में चली आई। मां कुछ नहीं बोली, क्योंकि वह जानती थी कि ये भाई-बहन दो मित्रों की भांति इस नई समस्या पर सोच-विचार करेंगे।

अकेले में कमलजीत पलंग पर बैठ गया और अपने सिर को हाथों से पकड़ कर बोला, "ममता, मैं बहुत परेशान हूं।"

ममता हमदर्दी से बोली "मैं भली-भांति जानती हूं कि इस समय आपके मन की क्या दशा हो रही होगी। लेकिन भैया, आपको बेकार में परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है।"

"बेकार में ?" कमलजीत के चेहरे पर पीड़ा के चिह्न उभर आये। "ममता, यह बात तुम कह रही हो जब कि तुम अच्छी तरह जानती हो कि दीपा से मेरा कितना गहरा प्रेम था और है।"

"हां, मैं कह रही हूं।"

"क्यों ?"

"मुझे पुष्पा पर विश्वास नहीं है।"

इतने में खुले दरवाज़े पर खटखट की आवाज सुनाई दी। उन्होंने मुड़ कर देखा तो वहां अंजू खड़ी थी। ममता बोली, "अरे तुम दरवाजे में क्यों खड़ी हो ? ऐसा क्या तकल्लुफ है ?"

अंजू आगे बढ़ आई और गम्भीरता से बोली, "मैं अपने एक रिश्तेदार के घर जा रही थी कि अभी-अभी रास्ते में, पुष्पा मिली। उसकी ज़बानी दीपा के बारे में सुन कर सीधी इधर चली आई।"

"हां अंजू, पुष्पा हमारे ही घर से वापस जा रही होगी। तभी से मैं भैया से इस विषय पर बात कर रही हूं।"

अंजू ने बड़ी सहानुभूति से कमलजीत की ओर देखा और गहरे स्वर में बोली, "मैं तो यह सुन कर परेशान हो उठी। मैंने सोचा कि न जाने कमलजीत को कितना दुख हो रहा होगा।"

ममता ने कहा "दुख तो सभी को है, मगर अंजू, मैं भैया को समझा रही थी कि पुष्पा की जबान पर एतबार नहीं करना चाहिए। तुम तो जानती ही हो कि किस तरह उसने दीपा को भैया से काटने की कोशिश की।"

अंजू की आंखों में एक नई चमक उभर आई, जल्दी से बोली, "हां ममता, इस पहलू पर तो मैंने सोचा ही नहीं था।"

कमलजीत ने कहा "क्या तुम दोनों समझती हो कि पुष्पा इतनी कमीनी हो सकती है कि वह ऐसा गन्दा झूठ बोलने से भी संकोच न करे ?"

अंजू बोले बिना नहीं रह सकी, "यह भी सम्भव है कि पुष्पा ने झूठ न बोला हो। मगर उसको यह खबर पहुंचाने वाला तो रमेश कुमार ही है न।"

और वह बड़ा कमीना आदमी है।" ममता ने कड़ुवे स्वर में कहा।

कमलजीत बोला, "अगर यह एक घिनौनी साज़िश है तो निश्चय ही कुमार बहुत गिरा हुआ इन्सान है। समझ में नहीं आता कि इस र की गलत अफवाह फैलाने से उसको क्या लाभ हो सकता है।"

अंजू ने राय दी, "गन्दे आदमी को लाभ से कोई मतलब नहीं होता। दगी फैलाना तो उनकी आदत होती है।"

कमलजीत ने कहा "यूं तो दीपा से अब मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रह या। हम दोनों के रास्ते अलग-अलग हो गए हैं। लेकिन फिर भी मैं यही चाहता था कि वह ज़िन्दा रहे, और जहां भी रहे खुश रहे।"

अंजू बोली, "यह मजनू-फरहाद जैसी बातें बेकार हैं। अब तो किसी न किसी तरह असलियत का पता लगाना चाहिए।"

ममता ने सलाह दी, "हां भैया, आप दिल्ली क्यों नहीं चले जाते?"

कमलजीत ने बुझे स्वर में जवाब दिया, "भला मुझे दिल्ली की खाक छानने से क्या मिलेगा?"

ममता बोली, "खाक छानने की क्या ज़रूरत है। आप सीधे उसके पापा से मिलिए।"

कमलजीत ने बहन की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए कहा, "अजीब बातें करती हो। मैं उनसे मिल कर करूंगा क्या?"

"यही कि हमको पुष्पा की जबानी यह मनहूस खबर मिली, और मैं असलियत जानने के लिए यहां चला आया।"

अंजू ने हामी भरी, "हां, हां इसमें क्या हर्ज है। वैसे तो आप भले उन न मिलते, परन्तु ऐसी खबर सुन कर उनसे भेंट करने में कोई भी हर्ज न है।"

मां से भी मशवरा किया गया। आख़िर उसी रात कमलजीत दि के लिए गाड़ी पर सवार हो गया।

दूसरे दिन दिल्ली जंक्शन पर उतरकर उसने हल्का नाश्ता कि चाय पी, और फिर प्लेटफार्म के बाहर जा पहुंचा।

सेठजी के सामने जाने से मन कतराने लगा। मगर जब लख दिल्ली पहुंच ही गए तो अब सेठजी से मिले बगैर लौट जाना भारी की बात होगी, यह सब सोचकर वह स्कूटर-रिक्शा में बैठा औ की कोठी की ओर चल दिया।

उसका हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था। मानो वह कोई बड़ी परीक्षा देने जा रहा था।

स्कूटर-रिक्शा अपनी मंजिल तक पहुंचकर रुक गया। सामने वही शानदार कोठी खड़ी थी, जिसमें वह सुख के कई दिन बिता चुका था। आज वही शानदार कोठी उसे कितनी भयकर दिखाई दे रही थी। भीतर घुसने की बजाय वह कोठी से दूर भाग जाना चाहता था।

अपना ब्रीफकेस हाथ में लिए वह फाटक में घुसा। चौकीदार उसे पहचानता था। उसने सलाम किया तो कमलजीत ने पूछा, "क्या सेठजी भीतर है ?"

"जी, हैं।"

कमलजीत आगे बढ गया। वह इधर-उधर नजर दौड़ाता जा रहा था। इतने मे उसे खानसामा दिखाई दिया। इशारा करने पर वह उसके निकट चला आया। कमलजीत ने कागज के एक टुकड़े पर अपना नाम लिखकर उसके हाथ भीतर भेज दिया।

कमलजीत बरामदे मे खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था कि कब सेठजी उसे भीतर बुलायें, लेकिन उसने देखा कि सेठजी स्वयं ही गाउन पहने चले आ रहे है।

कमलजीत ने उनके चेहरे को देखकर उनके मन की कैफियत का अनुमान लगाने का प्रयत्न किया। उनका चेहरा बेशक गम्भीर था, परन्तु उन्होंने एक हाथ बढ़ाकर कमलजीत को सहज से अपने बाजू मे ले लिया और भीतर को चल दिए। बोले, "नाश्ता करने जा रहा था, अकेला था, अच्छा हुआ तुम पहुच गए। आओ, चाय पियो !"

उनके स्वर मे भी पहले वाला उत्साह नही था। कमलजीत चाय वाली तिपाई के निकट सोफे पर बैठते हुए बोला, "मैं चाय तो पी आया हू।"

"इससे क्या फर्क पडता है। एक प्याला और चलेगा।"

थोड़ी देर बाद चाय के प्याले तैयार हो चुके थे, कमरे मे चाय की चुस्किया भरने की आवाज सुनाई दे रही थी, दोनो व्यक्ति खामोश थे। कमलजीत ने महसूस किया कि जरूर कोई बात है, वरना सेठजी इतने खामोश न रहते। वह चिन्ता मे डूबे-से लग रहे थे। आखिर कमलजीत ने खुद ही बात शुरु करते हुए कहा, "मैंने दीपा के बारे मे सुना तो . "

सेठजी ने चौंककर सिर ऊपर उठाया और पूछा, "तुम्हें कैसे पता

चला ?"

"यहां से रमेश कुमार ने अपनी एक रिश्तेदार को यह खबर भेजी, और वह लड़की मेरी धर्म-बहन बनी हुई है। उसी ने कल हमें यह सूचना दी और मैं दिल्ली चला आया।"

"ओह ! तो तुम केवल इसी कारण यहां आए हो ?"

"जी, मेरे लिए यह कोई मामूली घटना नहीं थी। लेकिन यह सब हुआ कैसे। मुझे तो विश्वास नहीं होता।"

"हां कमलजीत, विश्वास तो मुझे भी नहीं होता। वास्तव में वह ऐसी लड़की नहीं थी कि इस बात पर आत्महत्या कर ले। अरे ! वह चाहती तो मेरा कहना न मानती। बगावत कर देती। मेरी इच्छा के बिना तुमसे शादी कर लेती। खुद ही सोचो, क्या अगर वह ऐसा भी करती तो मैं उसे कोई हानि पहुंचा सकता था ? वह मेरी इकलौती बेटी थी जिसे मैंने इतने लाड़-प्यार से पाला था।"

"हां, सेठजी, चूंकि वह इस प्रकार की लड़की नहीं थी, इसीलिए मुझे भी विश्वास नहीं हो रहा।"

"मुझे अगर वह इस बात की धमकी भी दे देती कि तुमसे शादी न होने पर वह आत्महत्या कर लेगी तो मैं ही हथियार डाल देता। ठीक है मैं इस रिश्ते के विरुद्ध था, लेकिन इसका यह अर्थ तो नहीं कि इस बात के लिए मैं अपनी बेटी की बलि देने को भी तैयार था। अब पछता रहा हूं। मैंने तो इसीलिए इस विषय पर उससे बातचीत ही नहीं की। मैं तुम्हारे पास लखनऊ गया, अपने विचार तुम्हारे सामने रखे, और तुम्हीं से इन्कार वाला पत्र लिखने का अनुरोध किया।"

"मगर सेठजी, उसके आत्महत्या करने की पूरी घटना घटी कैसे ?"

"भई, घटना भी कोई ऐसी नहीं कि जिससे यह सिद्ध हो सकता कि उसने वास्तव में आत्महत्या कर ली है।"

यह सुनकर कमलजीत के मन में आशा की किरण फूटी, जल्दी से पूछा, "तो गोया इस बात की गुंजाइश है कि शायद वह अभी तक जीवित हो ?"

कमलजीत के प्रश्न का सीधा उत्तर न देते हुए सेठजी बोले, "हुआ यह कि जमुना के किनारे हमारी कार खड़ी पाई गई। वह रात-भर वहां खड़ी रही तो कुछ देहातियों को शक हुआ। किसी ने थाने में रिपोर्ट कर

दी। पुलिस ने आकर देखा कि कार की पिछली सीट पर कुछ कपड़े तह करके रखे हुए थे। ये वही कपड़े थे जो दीपा ने पहन रखे थे। साड़ी की एक तह में रुक्का मिला—उस रुक्के में लिखा था—रुको! मैं तुम्हें वह रुक्का देता हूं। खुद ही पढ़ लो।"

यह कहकर सेठजी उठे और कमरे के दूसरे सिरे पर रखी छोटी-सी मेज की दराज में से रुक्का निकालकर ले आए और उसे कमलजीत की ओर बढ़ाते हुए बोले, "रुक्का मेरे नाम है।"

कमलजीत ने रुक्के की तहों को खोला तो उस समय उसकी उंगलियां कांप रही थीं। पहले तो अक्षर बिल्कुल धुंधले-से लगे, फिर धीरे-धीरे वे ठीक से दिखाई देने लगे। लिखा था .

माई डियर पापा!

मैं जा रही हूं। ऐसी जगह जा रही हूं, जहां कि अन्त में सभी को जाना पड़ता है। मुझे अधिक कुछ नहीं लिखना है, सिवाय इसके कि आप मुझे तलाश करने की कोशिश न कीजिएगा। यह सब बेकार होगा, क्योंकि मैं आपको कहीं भी नहीं मिल सकती। यह बात जरूर है कि आप सोचेंगे कि मैंने ऐसा भयंकर कदम क्यों उठाया। इस सिलसिले में मैं खामख्वाह आप पर भी आरोप नहीं लगाना चाहती। मगर यह कहे बिना नहीं रह सकती कि आपने ही ऐसी तरकीब लड़ाई जिसके कारण मेरे लिए और कोई रास्ता ही नहीं रह गया।

आपने कमलजीत से पहले मुझसे इस विषय पर बात तक नहीं की। हालांकि बाप होने के नाते आपका कर्तव्य था कि पहले तो आप अपनी लड़की को समझाएं-बुझाएं। मगर आपने सोचा, ठीक ही सोचा कि आपके समझाने-बुझाने का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए आप कमलजीत के पास पहुंच गए। चूंकि आप बातचीत करने में बड़े निपुण हैं, इसलिए आप उसे यह एहसास कराने में सफल हो गए कि यह शादी करके उसे अपने स्वाभिमान से हाथ धोना पड़ेगा। अत. उसने विवश होकर मुझसे शादी का ख्याल ही छोड़ दिया और इस बात की सूचना मुझे भी भेज दी। आखिर मुझमें भी तो स्वाभिमान है। कमलजीत ने भी मुझसे सलाह-मशवरा करने की जरूरत महसूस नहीं की और दो टूक इन्कार का पत्र लिखकर मुझे भेज दिया। मेरे लिए असम्भव हो गया कि मैं उसके पास जाकर उसके आगे नाक रगड़-रगड़कर उससे विनती करूं कि मुझे अपने

ं की दासी वना लीजिए।
तव मैं इस नतीजे पर पहुंची कि जीवन में वाज़ मोड़ ऐसे भी होते हैं
मौत के सिवाय और कोई उपाय नहीं रह जाता।
अच्छा, अव विदा होती हूं। मेरा कहा-सुना माफ़ कीजिएगा।

आपकी वेटी
दीपा

कमलजीत ने पत्र को तीन वार पढ़ा। उसके मन में कई प्रकार की भावनाएं उभर रही थीं, मगर यह सव इतनी तेज़ी से हो रहा था कि उसे कुछ कहने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे। आखिर वह वोला, "लाश तो मिल गई होगी ?"

शब्द 'लाश' कहते समय उसका शरीर कांप गया।

सेठजी सिर हिलाते हुए वोले, "नहीं, लाश को तलाश करने की वहुत कोशिश की गई, और अव भी कोशिश जारी है, लेकिन अभी तक लाश मिली नहीं। लाश मिल जाने से भी क्या होगा, सिवाय इसके कि यह वात जरूर निश्चित हो जाएगी कि मेरी वेटी अव इस दुनिया में नहीं रही।"

कमलजीत के लिए इस विषय में कहने को कुछ नहीं था। यह विषय ही ऐसा था कि कम-से-कम सेठजी और कमलजीत इस पर अधिक कुछ वातचीत नहीं कर सकते थे। कुछ-कुछ समय वाद एकाध टूटी-फूटी वात हो जाती थी।

कमलजीत ने अपनी कलाई से वंधी घड़ी पर नज़र डालकर वक्त दे
और सोफे से उठते हुए वुझे हुए स्वर में वोला, "अच्छा तो मुझे जाने
आज्ञा दीजिए।"

सेठजी चुपचाप उठे और उसके कन्धे पर हाथ रखकर वरामदे
उसके साथ आए।

कमलजीत के कण्ठ से स्वर निकलना कठिन हो रहा था।
उसने कोशिश करके कहा, "सेठजी, यदि मेरे योग्य कोई काम हो
कहने में संकोच न कीजिएगा।"

उस समय कमलजीत ने देखा कि सेठजी की आंखें भीग आ
भर्राई हुई आवाज़ में वोले, "मैं नहीं जानता था कि मुझे ऐसी दे
पड़ेगी। इस दुःख को सहन करने से वेहतर तो यही था कि तु
शादी हो जाती।"

कुछ दिनों के बाद जब ममता [illegible] के बाजार में [illegible] थी तो उसके कानों में आवाज पड़ी, "हे ! ममता !"

ममता ने मुड़कर देखा तो उसे कुछ दूरी पर [illegible] दिखाई दी। उस वक्त अंजू ने [illegible] नहीं थी, और पांव में [illegible] दिखाई दे रहे थे। [illegible] थे।

ममता का चेहरा [illegible] तो तुम्हारी ही [illegible]।"

अंजू निकट आते हुए [illegible] राह होती है। मैं भी [illegible] तो पता चला कि तुम [illegible] उसे भांजा देकर तुम [illegible]"

ममता ने जोर से [illegible] किसी से मिलना था। [illegible] जाएंगे। मुझे भी थोड़ी [illegible] बीस मिनट बाकी हैं, लेकिन [illegible] की धूल फांकना बेकार है, [illegible]। अच्छा हुआ तुम मिल गईं।"

अंजू ने उसके बाजू में हाथ [illegible], "[illegible] !"

[illegible] में मेज के निकट कुर्सियों पर बैठे हुए, उन्होंने [illegible] पहले कोई 'कोल्ड-ड्रिंक' मंगवाया [illegible] चाय या कॉफी का चक्कर चलाया जाएगा।

'कोल्ड-ड्रिंक' के [illegible] नहीं। ममता [illegible] बोली, "अब भी [illegible] मिनट बाकी हैं। सच पूछो तो वह समय के इतने पाबन्द भी नहीं हैं। [illegible] बजाय पन्द्रह-सोलह मिनट [illegible]।"

"तो चिन्ता किस बात की ! मैं तो तुम्हारे साथ बैठी हूं।"

"क्या कहूं, अंजू ! एक चिन्ता भैया के मन को लगी है, और दूसरी मेरे मन को।"

"अरे हां। कमलजीत के दिल्ली से लौटने के बाद हमारी-तुम्हारी तो मुलाकात ही नहीं हो सकी। मैं भी तीन-चार दिनों के लिए बाहर चली गई थी। हां तो वहां की क्या रिपोर्ट है।"

"वहां की रिपोर्ट सुनकर क्या करोगी। बस यही पता चला कि दीपा कार में बैठकर यमुना किनारे पहुंची, पिछली सीट पर अपने कपड़ों में बाप के लिए रुक्का छोड़कर उसने यमुना में छलांग लगा दी। लाश नहीं मिली।"

"भई बात तो दुःख की है। लेकिन जो होना था सो हो चुका। आखिर तुम क्यों चिन्ता में डूबी रहती हो ?"

"मुझे चिन्ता भैया की है। वह मुंह से कुछ नहीं कहते, लेकिन उनके हृदय का दुःख उनकी आंखों में से झांकता रहता है। सम्भवतः उन्हें दीपा से शादी न होने का दुःख नहीं है, परन्तु उसके आत्महत्या करने का दुःख अवश्य है।"

अंजू ने ममता के हाथ पर हाथ रखकर कहा, "यदि मेरे योग्य कोई काम हो तो अवश्य बताना।"

"सच कहती हो अंजू ?"

"हां-हां, तुम्हें इसमें सन्देह क्यों हो रहा है ?"

"सन्देह तो नहीं, मगर जो कुछ मैं कहना चाहती हूं, वह कहने में संकोच अवश्य हो रहा है।"

"अरे, ऐसी भी क्या बात है ? मुझसे जो कहना हो निश्चिन्त होकर के कह दो।"

"अंजू ! क्या तुम मेरी भाभी बनना पसन्द करोगी ?"

अंजू की आंखें एकदम फैल गईं। आश्चर्य से उसका मुंह खुले-का-खुला रह गया और मोतियों जैसे दांतों की दमक दिखाई देने लगी। फिर उसका चेहरा कानों तक गुलाबी-सा पड़ गया...

इतने में ही कमलजीत आता दिखाई दिया। वह सीधा उनके पास पहुंचा। अंजू की ओर देखकर बोला, "हलो !"

"हलो !"

अंजू हलो का जवाब देते-देते हल्के से शर्मा गई। मगर कमलजीत ने

इधर ध्यान नहीं दिया।

ममता बोली, "भैया, टाईम की पाबन्दी तो आप उम्र भर नहीं सीखेंगे।"

"क्यों, क्या हुआ है ?"

"पता है, आप सात-आठ मिनट लेट हैं।"

"अरे बहनजी ! सात-आठ मिनट की देरी भी कोई देरी होती है। कभी लड़कियों के वायदों पर भी ध्यान दिया है ? आज चार बजे मिलने का वायदा किया है तो कल आठ बजे मिलेंगी।"

ममता मुस्कराकर बोली, "मैं तो निश्चित समय से भी पहले पहुंच गई थी।"

अंजू चंचलता से बोल उठी, "क्या ममता लड़की नहीं है ?"

कमलजीत ने जवाब दिया, "नहीं, ममता लड़की नहीं है, यह तो बहन है। लड़की तो तुम हो।"

अंजू झेंप गई, और फिर ममता के कान में फुस-फुसाकर बोली, "आज तो तुम्हारे भैया बड़े अच्छे मूड में हैं।"

ममता ने भी फुस-फुसाकर ही उत्तर दिया, "हां, शायद तुम्हीं को देखकर।"

अंजू को फिर शर्माना पड़ा।

कमलजीत बोला, "आप यह क्या फुसफुसा रही हैं। जो बात करनी है डंके की चोट पर करिए।"

ममता बोली, "एक तो इतनी देर से आए और दूसरे रोब झाड़ रहे हैं।"

"यही नहीं, एक और खुशखबरी यह है कि सात-आठ मिनट की देर हो जाने के बावजूद मेरा काम पूरा नहीं हुआ। यह सोचकर कि तुम इन्तज़ार कर रही होगी, मैं यहां चला आया। बीस-पच्चीस मिनट में मुझे फिर लौटना पड़ेगा। ऐसा है कि मैं तुम्हें घर पर छोड़ता हुआ चला जाऊंगा।"

ममता बोली, "मुझे घर पर छोड़ने की कोई जरूरत नहीं है। अब अंजू का और मेरा साथ रहेगा, यही मेरे साथ घर तक चलेगी। क्यों अंजू ?"

"हां, बिल्कुल, बिल्कुल !"

"चलो, यह भी अच्छा हुआ। मैं यहीं से सीधा अपने काम पर चला

"क्या कहूं, अंजू ! एक चिन्ता भैया के मन को लगी है, और दूसरी मेरे मन को।"

"अरे हां। कमलजीत के दिल्ली से लौटने के बाद हमारी-तुम्हारी तो मुलाकात ही नहीं हो सकी। मैं भी तीन-चार दिनों के लिए बाहर चली गई थी। हां तो वहां की क्या रिपोर्ट है।"

"वहां की रिपोर्ट सुनकर क्या करोगी। बस यही पता चला कि दीपा कार में बैठकर यमुना किनारे पहुंची, पिछली सीट पर अपने कपड़ों में बाप के लिए रुक्का छोड़कर उसने यमुना में छलांग लगा दी। लाश नहीं मिली।"

"भई बात तो दुःख की है। लेकिन जो होना था सो हो चुका। आखिर तुम क्यों चिन्ता में डूबी रहती हो ?"

"मुझे चिन्ता भैया की है। वह मुंह से कुछ नहीं कहते, लेकिन उनके हृदय का दुःख उनकी आंखों में से झांकता रहता है। सम्भवतः उन्हें दीपा से शादी न होने का दुःख नहीं है, परन्तु उसके आत्महत्या करने का दुःख अवश्य है।"

अंजू ने ममता के हाथ पर हाथ रखकर कहा, "यदि मेरे योग्य काम हो तो अवश्य बताना।"

"सच कहती हो अंजू ?"

जाऊंगा—हां ममता ! अंजू से उस विषय में कोई बातचीत हुई ?"

अंजू के कान खड़े हो गए। आखिर किस विषय की बात हो रही थी। वह नहीं जानती थी कि जो बात ममता ने उससे कही थी, उसके बारे में कमलजीत को कुछ मालूम नहीं था।

ममता ने पूछा, "किस बात का जिक्र कर रहे हैं ? आपकी दिल्ली वाली यात्रा की बात तो नहीं ?"

"हां, वही तो !"

ममता ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया, "वह सब तो बता दिया।"

कमलजीत ने अंजू की ओर देखते हुए पूछा, "इस विषय में तुम्हारी क्या राय है ?"

अंजू बोली, "जब से ममता ने मुझे यह बात बताई, तब से मैं इसी विषय पर सोच रही हूं।"

"किसी नतीजे पर पहुंचीं ?"

"हां, मुझे तो दाल में कुछ काला नजर आता है।"

ममता गर्दन आगे को बढ़ाकर बोली, "हम भी तो सुनें।"

अंजू पल-भर सोच में डूबी रही, और फिर उसने धीरे-धीरे कहना शुरू किया, "मैं सोचती हूं कि इसमें बाप-बेटी की कोई चाल न हो।"

कमलजीत ने प्रश्न किया, "कैसी चाल ?"

"सम्भव है कि दीपा को उसके बाप ने यूरोप भेज दिया हो और उससे कह दिया हो कि यहां पर तुम्हारी आत्महत्या की अफवाह फैला दी जाएगी, और तुम छः महीने या साल-भर बाद वापस लौट आना। उनके कई रिश्तेदार इंग्लैण्ड और अमरीका में रह रहे हैं। दीपा किसी के पास भी रह सकती है।"

ममता ने आपत्ति उठाई, "भला इतने लम्बे समय के लिए कोई देश उसे अपने यहां रहने भी देगा ?"

अंजू ने कहा, "ये सब मामूली बातें हैं। वहां वह कोई कोर्स भी पास करने जा सकती है।"

"दीपा ऐसा क्यों करने लगी !" कमलजीत ने मानो अपने आप से यह बात कही।

अंजू ने कमलजीत की आंखों में आंखें डालकर कहा, "आपने उसके लिए कोई और रास्ता भी तो नहीं छोड़ा था। बाप ने समझाया होगा कि

कुछ दिन बाहर रह आओ। इस दौरान वह तुम्हें भुला भी सकती है या अपने स्तर का कोई जीवन साथी भी ढूंढ़ सकती है।"

कमलजीत का चेहरा उदास हो गया, बोला, "वह भले ही मुझे भुला दे, या किसी और को अपना जीवन साथी बना ले। यदि उसने आत्महत्या नहीं की, बस इसी में मुझे बहुत इतमीनान रहेगा।"

ममता ने कहा, "दीपा के लिए तो शुभ कामनाएं व्यक्त कर चुके, लेकिन भैया कुछ अपने बारे में भी तो सोचना चाहिए आपको।"

"मुझे पता चल जाए कि दीपा जीवित है तो फिर मैं इतमीनान से अपने जीवन का प्रोग्राम भी बना सकता हूं—लेकिन अंजू ! तुम यह क्यों सोचती हो कि उसने आत्महत्या नहीं की होगी।"

"वास्तव में वह ऐसी लड़की ही नहीं थी। मैं उससे अच्छी तरह परिचित तो नहीं रही, परन्तु नागपुर में और फिर दिल्ली में जब कभी उसे देखने का मौका मिला तो मुझे वह इस प्रकार की लड़की हो नहीं नजर आई जो किसी भी स्थिति में आत्महत्या करने को तैयार हो जाए।"

ये सारी बातें धीरे-धीरे होती रहीं। इसके साथ ही खाना-पीना भी चलता रहा। एकाएक कमलजीत को समय का एहसास हुआ और वह बोला, "अब मैं तुम दोनों से विदा होना चाहूंगा···बैरा आए तो मैं बिल के पैसे देता जाऊं।"

ममता बोली, "सम्भव है कि कुछ देर और बैठने को हमारा जी चाहे। इसलिए भैया, बिल अदा करने की बजाय हमें पैसे देते जाइए न।"

"यह भी ठीक है।"

दस-दस रुपए के दो नोट ममता को थमाकर और टा-टा कहकर कमलजीत वहां से चल दिया।

ममता ने अंजू से पूछा, "क्या तुम्हें सचमुच इस बात का विश्वास है कि दीपा ने आत्महत्या नहीं की होगी, और वह यूरोप चली गई होगी ?"

"इसकी बहुत अधिक सम्भावना है।"

"आत्महत्या, कार में कपड़े, साड़ी की तह में रुक्का—इन सब बातों के बारे में तुम क्या सोचती हो ?"

"तुम्हारे भैया ने इस विषय में जानकारी प्राप्त करने का कोई प्रयत्न ही नहीं किया। क्या कमलजीत जी ने इस बात का पता लगाया कि किसी थाने में इस घटना की रिपोर्ट हुई है या नहीं, और पुलिस इस सिलसिले में

तफ्तीश कर रही है या नहीं। इसके अलावा इतने बड़े सेठ की लड़की का आत्महत्या करना ऐसी मामूली घटना नहीं है जिसका जिक्र समाचार-पत्रों में न आए। क्या तुम्हारे भैया ने किसी लायब्रेरी में जाकर पुराने अखबारों में कोई ऐसा समाचार देखा, या यह जानने का प्रयत्न किया कि कोई ऐसी खबर छपी भी थी या नहीं ?"

"अरे वाह ! तुम तो सी. आई. डी. में टॉप अफसर वन सकती हो।"

अंजू बोलती चली गई, "सेठजी ने बेटी को यह सुझाव भी दिया होगा कि उसकी आत्महत्या की खबर सुनकर कमलजीत पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होती है। कम-से-कम इससे यह तो पता चल जाएगा कि वह उससे कितना प्रेम करता है।"

ममता कुछ देर सोच में डूबी रही, और फिर बोली, "सेठजी और दीपा के मुंह पर करारी चपत जमाने का एक तरीका यह भी हो सकता है कि तुम और भैया…"

अंजू ने फौरन उसके मुंह पर हाथ रख दिया, और शरमाकर बोली, "आज तुम पर यह क्या धुन सवार हो गई है ?"

"क्या तुमको बुरा लगा ?"

"बुरा लगने का सवाल नहीं है।"

"तो फिर ?—तुमने राखी बांधकर भैया को अपना भाई तो नहीं बना रखा !"

"सो तो ठीक है, लेकिन मैंने उन्हें हमेशा एक दोस्त की दृष्टि से देखा है, और मुझे विश्वास है कि उन्होंने भी मुझे सदा मित्र की आंखों से देखा है।"

"वह तो मैं मानती हूं, लेकिन क्या आपसी मित्रता कोई और रूप धारण नहीं कर सकती ?"

"तुमने जो सुझाव दिया है। उस पर काफी सोच-विचार की आवश्यकता है। जिसका मतलब यह नहीं है कि सोच-विचार करने के बाद मैं शादी करने के लिए तैयार हो जाऊंगी, या मैं तैयार हो जाऊं तो तुम्हारे भैया भी इस बात को स्वीकार कर लेंगे।"

"ठीक है ! जहां तक सोचने का संबंध है, मैं इसके लिए तुम्हें पूरा मौका देती हूं। इस घबराहट और परेशानी में मुझे यही बात सूझी कि काश तुम्हारे जैसी जानी-पहचानी और हर तरह से प्यारी लड़की मेरी

भाभी बन जाए तो कितना अच्छा हो ! मेरी योजना तो यह थी कि यदि तुम मुझसे सहमत हो जाओ तो तुम धीरे-धीरे भैया को विचारधारा का रुख अपनी ओर मोड़ लो। तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना चाहती हूं। मैं यह जानती हूं कि आर्थिक दृष्टि से तुम्हारे खानदान का स्तर हमसे ऊंचा है। लेकिन हमारा-तुम्हारा अन्तर उतना नहीं जितना कि दीपा और हमारा है।"

अंजू की आंखों में शरारत की चमक पैदा हुई और उसने पूछा, "क्या मैं भी तुम्हारे सामने कोई सुझाव रख सकती हूं ?"

"अवश्य !" ममता ने बिना कुछ सोचे-समझे उत्तर दिया।

अंजू उसका हाथ अपने हाथ में लेती हुई बोली, "अगर मैं यह कहूं कि मेरा भी मन चाहता कि तुम्हें अपनी भाभी के रूप में देखूं तो ?"

ममता ने एकदम अपना हाथ पीछे खींच लिया। उसकी आंखें झुक गईं। चेहरे पर सुर्खी दौड़ गई। बड़ी मुश्किल से बोली, "तुम्हें ऐसी शरारत की बातें नहीं कहनी चाहिए।"

"नहीं, शरारत की बात नहीं है। मैं बिल्कुल गम्भीर हूं।"

तब ममता ने सिर उठाकर अंजू की ओर देखा, और फिर जल्दी-जल्दी पलकें झपकाते हुए बोली, "तुम्हारा मतलब क्या है ? क्या तुम यह कहना चाहती हो कि तुम्हारे भैया के हृदय में मेरे प्रति···"

"न बाबा ! यह सब मैं नहीं जानती। मेरे मन में केवल यह इच्छा उठी कि तुम्हें भाभी के रूप में देखूं। रही बात भैया की तो वह सब तुमको खुद ही करना पड़ेगा। मेरा मतलब है कि भैया के हृदय की गहराई में पहुंचने की कोशिश करनी होगी।"

ममता उठ खड़ी हुई और बोली, "चलो ! काउन्टर पर बिल दे देंगे।"

वे दोनों होटल से बाहर निकल आई तो अंजू बोली, "वाह ममता ! अपनी बारी आई तो झट उठकर चल दी।"

"नहीं अंजू, अब हम बम्बई से लौट आयें तो फिर बातचीत करेंगे।"

अंजू ने चौंककर पूछा, "क्या बम्बई जाने का प्रोग्राम बना है ?"

"अरे हां, तुमसे कहना भूल गई। तुम जानती ही हो बम्बई में छोटी बहन गीता रहती है। उसी से मिलने जा रहे हैं।"

"कितने दिन लग जायेंगे ?"

"यही आठ-दस दिन।"

"तुम्हारे भैया भी साथ जायेंगे न ?"
"हां।"

अंजू से विदा होकर ममता जब बंगले के भीतर पहुंची तो मां ने कुछ शिकायत भरे लहजे में कहा, "ममता, तुम कहां चली गई थीं। पुरी साहब यहां बैठे तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे थे।"

ममता ने झट से दांतों में ज़बान दबा ली। उसे अब याद आया कि स्वयं उसी ने पुरी साहब को संदेश भेजकर बुलाया था। निश्चित समय से पच्चीस मिनट ऊपर हो चुके थे। उसे बिल्कुल ही याद नहीं रहा था कि पुरी साहब घर पर बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। पुरी साहब अपने पुराने मकान में ही रह रहे थे। कमलजीत ने उनसे कहा था कि वह भी बंगले में चले आए। क्योंकि जगह काफी थी और दीपा के वहां आने की कोई सम्भावना नहीं रही थी। मगर पुरी साहब ने वहां आना स्वीकार नहीं किया। सम्भवतः उन्हें इस बात का भय था कि दिन-रात एक-दूसरे के इतना निकट रहने से आपसी सम्बन्धों पर निश्चय ही बुरा प्रभाव पड़ सकता है। जब से उन्होंने कमलजीत और उसके परिवार को यह बंगला दिया था, तब से मानो वह घर के सदस्य बन गए थे। परिवार की प्रत्येक समस्या में उनकी राय अवश्य ली जाती थी। मगर पुरी साहब ने कभी-किसी भी काम में हस्तक्षेप करने का प्रयास नहीं किया। वह केवल उन्हीं मामलों में बोलते थे जिनमें उनकी राय ली जाती थी।

ममता ने मां से पूछा, "कहां है पुरी साहब ?"

"ड्राइंग रूम में बैठे हैं।"

ममता लपकती हुई ड्राइंग-रूम में पहुंची। उसे देखते ही पुरी साहब हाथ जोड़कर खड़े हो गए। ममता ने पहले ही हाथ जोड़ दिए थे, तुरन्त बोली, "क्षमा कीजिएगा पुरी साहब आपको इतनी देर तक बोर होना पड़ा। मुझे आशा थी कि अपना काम समाप्त करके मैं घर पर आपके स्वागत के लिए उपस्थित रहूंगी। परन्तु क्या कहूं, न चाहते हुए भी देर हो गई।"

ममता ने जानबूझकर यह नहीं बताया कि वह उनके बारे में बिल्कुल

"आपको जो कुछ भी कहना है, निःसंकोच कहिए।"

"यह बात हमने आपको कभी नहीं बताई कि बम्बई में गीता जिस बड़ी फर्म में नौकरी करती है उसी फर्म के मालिक का लड़का उसे प्रेम करता है। भैया पिछली बार बम्बई गए तो उस युवक को उन्होंने देखा था। इधर दीपा वाले कांड को सम्मुख रखते हुए हम यह सोचने लगे हैं कि भैया तो धोखा खा गए, लेकिन कहीं गीता को भी परेशानी का सामना न करना पड़े। इस विषय में अपका क्या विचार है?"

लगता है कि पुरी साहब का ममता की बातों में कम ध्यान था और वह उसका खूबसूरत चेहरा देखने में मग्न थे। अतः ममता के प्रश्न पर वह चौंक पड़े। हकलाते हुए बोले, "वह···सब तो ठीक है मगर जल्दबाज़ी से काम लेना भी उचित नहीं रहेगा।"

इतना कहकर पुरी साहब ने विशेषतः इस बात पर ध्यान दिया कि ममता ने उनसे क्या कहा था। उसकी बातें तो उन्होंने सुनी ही थीं, किन्तु अधिक ध्यानपूर्वक नहीं। अब वह गीता वाली समस्या का हल सोचने के लिए कुछ समय निकालना चाहते थे।

ममता तुरन्त ही उनसे सहमत होते हुए बोली, "इस बात में तो मैं भी आपसे सहमत हूं। हम जल्दबाज़ी में कोई कदम नहीं उठायेंगे। हमने केवल इतना सोचा था कि अगर गीता को छुट्टी मिल सके तो हम उसे कुछ दिनों के लिए यहां ले आएं। तब सब लोग बैठकर इतमीनान से पूरी स्थिति का जायजा लें। जिस बात पर सब सहमत हो जाएं, वही कदम उठाया जाए। देखिए न! गीता कुवांरी है, नवयुवती है, ना तजुर्बेकार है। लड़कियां वैसे भी बड़ी भावुक होती हैं। हम नहीं चाहते कि वह किसी मानसिक उलझन में फंस जाए। ऐसा होने से पहले ही बड़ी सावधानी से इस विषय पर सोच-विचार कर लेना चाहिए।"

"आप बात तो ठीक कहती हैं। इतने अमीर घरों के लड़के अक्सर ऐय्याश होते हैं। नवयुवतियों को झांसे देना उनके बाएं हाथ का खेल है। और जो लड़की उनके यहां नौकरी करती हो, उस पर वे अपना खास अधिकार समझते हैं।"

"तो फिर आपके ख्याल में भी हमें गीता को यहां ले आना चाहिए। उसे दीपा वाले कांड का कुछ पता नहीं है। उसे बताया जाए कि किस तरह दीपा के बाप का धन और उसकी सम्पत्ति उसके और भैया के बीच

पहाड़ बनकर खड़ी हो गई। इसलिए वह भी बम्बई वाले लड़के से अपने संबंधों का यथार्थ के स्तर पर जायजा ले और पूरी स्थिति को अच्छी तरह समझने की कोशिश करे। इसी किस्म के सम्बन्ध अन्त में ज़िन्दगी या मौत के सवाल बन जाते हैं।"

"तब तो आपको शीघ्र-से-शीघ्र बम्बई चले जाना चाहिए। आपने अभी यह भी तो बताया कि बहुत दिनों से गीता का कोई पत्र नहीं आया।"

"जी हां, इससे हमारी चिन्ता और भी बढ़ गई है। वैसे हमने बम्बई जाने का प्रोग्राम बना लिया है।"

बातें चलती रहीं। पुरी साहब गद्‌गद् हो रहे थे। इतने में ही भीतर से मां की आवाज़ सुनाई दी। ममता पुरी साहब की इजाज़त लेकर चली गई।

थोड़ी ही देर में चाय, नाश्ते का सामान, पकौड़ियां आदि सब-कुछ उनके सामने पहुंच गया। ममता चाय बनाने लगी, और बोली, "एक बात और भी है।"

"वह भी कह डालिए। संकोच किस बात का?"

प्याले में चीनी डालकर उसे चम्मच से हिलाते हुए ममता ने पल-भर को पुरी साहब को टकटकी बांधकर देखा तो वह और भी मग्न हो गए। आखिर ममता बोली, "घर में कई बार बात चली है।"

"किसकी बात?"

"आप ही की।"

यह सुनकर पुरी साहब के हृदय में लड्डू फूटने लगे। अपनी उंगली से अपनी ही ओर संकेत करते हुए बोले, "भला मैं इस काबिल हूं भी?"

ममता उनके संकेत को या तो समझी नहीं, या समझने की कोशिश नहीं की। वास्तव में स्वयं पुरी साहब को नहीं मालूम था कि वह क्या कह रहे हैं। ममता बोली, "क्यों नहीं? हम भला आपके एहसान का बदला कैसे उतार सकते हैं?"

"एहसान कैसा जी! क्या अपनों के लिए इतना-सा करना भी कोई एहसान की बात है?"

"आजकल के ज़माने में आप जैसे उच्च विचारों वाले व्यक्ति मिलते कहां हैं। फिर भी घर में सोचा गया है कि बंगले का कुछ भी किराया स्वीकार न करना आपके लिए उचित नहीं।"

"मैं तो यह कहूंगा कि कुछ भी किराया देने की वात सोचना आप लोगों के लिए उचित नहीं होगा। वास्तव में मैंने यह बंगला तो खरीदा ही आपके लिए था। मेरी इच्छा तो यह है कि आप उम्र-भर इसी बंगले में रहें।"

इतने में मकान के भीतर से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं तो ममता चौंक कर बोली, "मेरे ख्याल में भैया आ गए।"

वह यह कह ही रही थी कि कमलजीत भीतर चला आया। बड़े होते हुए भी पुरी साहब ने खड़े होकर उसका स्वागत किया।

कमलजीत ने उनके दोनों कन्धों पर हाथ रख दिए और उन्हें सोफे पर बैठाते हुए बोला, "अरे! क्यों आप मुझे शर्मिन्दा करते हैं। बड़े आप हैं कि मैं हूं।"

"इसमें छोटे-बड़े का क्या सवाल है जी! हर पढ़े-लिखे सभ्य व्यक्ति का फर्ज है कि वह दूसरे का सम्मान करे।"

अब रौनक और बढ़ गई। ममता ने भैया को वताया कि पुरी साहब फिर किराया लेने से इन्कार कर रहे हैं। कमलजीत ने बहुत अनुरोध किया लेकिन पुरी साहब अपनी 'ना' पर अड़े ही रहे।

इसके बाद गीता का ज़िक्र चला। उस विषय पर फिर बातचीत हुई। कमलजीत ने कहा, "चूंकि आपकी भी यही राय है, इसलिए मैं और ममता बहुत जल्द बम्बई चले जाएंगे।"

बम्बई में कमलजीत को गीता के फ्लैट का पता मालूम था, अतः स्टेशन से टैक्सी में बैठकर वे सीधे उस बिल्डिंग के सामने पहुंच गए जहां गीता रहती थी। टैक्सी छोड़कर वे लिफ्ट द्वारा पांचवीं मंज़िल तक जा पहुंचे। कमलजीत ने लिफ्ट से निकलकर ममता से कहा, "अभी तो दफ्तर जाने का समय नहीं हुआ। लगभग एक घण्टे के बाद ही वह दफ्तर के लिए यहां से चलेगी।"

वे फ्लैट के द्वार के सामने पहुंचकर रुके, और घंटी का बटन दबाया। भीतर से न कोई आवाज़ आई और न किसी ने आकर दरवाज़ा खोला। दो बार, तीन बार घंटी का बटन दबाने पर भी कोई नहीं बोला तो ममता

ने कहा, "भैया हो सकता है कि वह दफ्तर न जाकर किसी और काम से बाहर निकल गई हो। क्यों न आस-पास वाले पड़ोसी से पूछ लिया जाए।"

"यह भी ठीक है।"

कमलजीत ने बाजू वाले फ्लैट के दरवाजे के ऊपर लगा घंटी का बटन दबाया। भीतर से कोई आवाज तो नहीं आई, परन्तु पल-भर बाद दरवाजा खुल गया। लगभग चालीस वर्षीया एक महिला उनके सामने खड़ी थी। उसने कमलजीत से पूछा, "कहिए ! क्या काम है ?"

उत्तर देने के लिए ममता सामने आ खड़ी हुई और बोली, "आपसे तो हमें कोई काम नहीं है, लेकिन आपके बाजू वाले फ्लैट में रहने वाली लड़की से हम मिलने आए हैं।"

पुरुष के साथ एक लड़की को देखा तो महिला ने दरवाजा पूरा खोल दिया और बोली, "भीतर चले आइए।"

वे भीतर चले गए, और महिला ने दरवाजा भेड़कर कहा, "आप बम्बई का कायदा नहीं जानते। यहां हर कोई अपने काम से काम रखता है। न कोई किसी को जानता है, और न कोई किसी से बात करता है।"

दोनों भाई-बहन निराश हो गए। ममता बोली, "तो इसका मतलब है है कि आपको नहीं मालूम कि वह लड़की कहां है।"

"नहीं, हमको नहीं मालूम। मगर हम इतना बता सकता है कि वह कई दिन से दिखाई नहीं दिया। आप समझा न ? आते-जाते कभी-कभी हमको वह दिखता था। लेकिन काफी दिनों से हम उसका झलक तक नहीं देखा। हम सोचा कि वह कहीं बाहर गया है।"

यह सुनकर ममता कुछ परेशान हो गई। उसने एक नजर भाई पर डाली और फिर उस महिला से कहने लगी, "इस लड़की का नाम गीता है। मैं उसकी बड़ी बहन हूं। हम लखनऊ में रहते हैं। वहां से दो-तीन पत्र लिखे, लेकिन उनका कोई उत्तर नहीं मिला। इसलिए हम यहां उसे मिलने चले आए।"

वह महिला मुंह गोल करके बोली, "उई बाबा ! तब तो कोई सीरियस बात होना मांगता।"

कमलजीत को एक बात सूझी तो उसने पूछा, "गीता से कुछ लोग मिलने भी तो आते होंगे। आपने उनमें से किसी को नहीं देखा ?"

"न बाबा ! हम किसी को नहीं देखा। हमको यह भी नहीं मालूम कि

उसके पास कौन-कौन आता है।"

भाई-बहन ने महसूस किया कि अब उन्हें उस महिला से विदा ले लेनी चाहिए। उन्होंने धन्यवाद दिया और बाहर निकल आए। महिला ने दरवाज़ा बन्द कर लिया।

ममता ने कहा, "भैया! हम सुनील को उसके दफ्तर में ही क्यों न मिल लें। वह आपको पहचानता भी है, और निश्चय ही वह गीता के विषय में कुछ-न-कुछ जानता होगा।"

कमलजीत ने घड़ी पर नजर डाली, "अभी सुनील दफ्तर नहीं पहुंचा होगा, परन्तु तुम चाहो तो हम पहले से ही चलकर वहां बैठ जाएं। जब वह आएगा तो मुलाकात हो जाएगी। मुझे उसके घर का फोन नम्बर भी नहीं मालूम, वरना टेलीफोन द्वारा ही पता लगाया जा सकता था।"

ममता ने हामी भरते हुए कहा, "चलिए दफ्तर को ही चलते हैं।"

दफ्तर दूरी पर था। भीड़ के कारण वहां तक पहुंचने में काफी समय लगा। वैसे दफ्तर खुला था। चपरासी ने उन दोनों को सुनील के मैनेजर के पास पहुंचा दिया। पहले जब वह बम्बई आया था तो उन दोनों की मुलाकात हुई थी। मैनेजर भी उसे भूला नहीं था। उसने कहा, "छोटे साहब तो ग्यारह-साढ़े ग्यारह से पहले दफ्तर नहीं आते। आपको खामख्वाह इतनी देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। बेहतर यही होगा कि आप उन्हें यहां से फोन कर दें। कभी ऐसा भी होता है कि घर से चलने के बाद सीधे दफ्तर आने की बजाय वह किसी और काम से चले जाते हैं। यदि ऐसा हुआ तो आपको और अधिक परेशानी उठानी पड़ेगी।"

कमलजीत बोला, "ठीक है, आप उनसे फोन मिला दीजिए, मैं उनसे बात किए लेता हूं।"

मैनेजर ने टेलीफोन किया तो उधर से सुनील ने पूछा कि क्या कोई विशेष बात है। इस पर मैनेजर ने बता दिया कि गीता के बड़े भाई कमलजीत और दूसरी बहन लखनऊ से यहां आए हुए हैं। तब सुनील ने कहा कि टेलीफोन उन्हीं को दे दो।

कमलजीत ने फोन पकड़ा तो उधर से आवाज आई, "हलो, मिस्टर कमलजीत! आप बम्बई कब आए?"

"आज ही कुछ देर पहले यहां पहुंचे। स्टेशन से उतरते ही हम गीता से मिलने उसके फ्लैट पर गए। वह वहां थी नहीं..."

सुनील सम्भवत: सब कुछ समझ गया और बीच में ही बोल उठा, "आप हमारे यहां चले आइए न ! टेलीफोन पर क्या बातचीत हो सकेगी। मैं तो चाहूंगा कि आप जितने दिन बम्बई में हैं, उतने दिन हमारे यहां ही रहें।"

"मैं भी आपसे मिलना चाहूंगा। मेरे साथ गीता से बड़ी बहन ममता भी है।"

"कोई हर्ज नहीं। आप सीधे यहां चले आइए। कृपया टैलीफोन मैनेजर को दे दीजिए। मैं उनसे कह दूं कि वह आपको यहां पहुंचाने का प्रबन्ध कर दें।"

मालिक के आदेशानुसार मैनेजर ने दफ्तर की कार द्वारा उन्हें साहब के पास भेजने का प्रबन्ध कर दिया।

उनकी कोठी बम्बई से बाहर खुले इलाके में थी। देखने में शानदार ! जब कार पोर्टिको के नीचे रुकी तो सुनील स्वयं वहां उनका स्वागत करने के लिए खड़ा था। मेहमानों के लिए एक-दो कमरे सदा तैयार रहते थे। सुनील उन्हें उनके कमरे तक पहुंचाने गया। कमलजीत ने ममता का परिचय कराया तो सुनील बोला, "आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।"

कमरे में उन्हें छोड़कर सुनील लौटने लगा तो कमलजीत बोला, "क्षमा कीजिए, हम गीता के विषय में बहुत चिन्तित हैं। केवल इतना बता दीजिए कि वह है कहां।"

सुनील ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया, "सच पूछिए तो स्वयं मुझे भी नहीं मालूम कि इस समय वह कहां है। परन्तु मैं आपको इतना इतमीनान दिला सकता हूं कि मेरे विचार में यह कोई सीरियस मामला नहीं है। वह दफ्तर भी नहीं आ रही है। फिर भी चूंकि आप यहां पहुंच गए हैं, इसलिए अब उसका पता लगाया जा सकेगा। घबराइए नहीं, आप नहा-धोकर कपड़े बदल लीजिए। फिर एक साथ ब्रेकफास्ट लेंगे और इस विषय पर बातें भी हो जाएंगी।"

सुनील चला गया तो कमलजीत बोला, 'ममता ! जैसा कि सुनील ने कहा है कि चिन्ता की कोई बात नहीं है, इसके साथ ही मुझे यूं भी लगता है कि इन दोनों के बीच कुछ खटपट अवश्य हुई है।"

ममता को भी बहुत-कुछ इतमीनान हो गया।

नहा-धोकर जब वे सुनील के साथ नाश्ता करने बैठे तो कमलजीत ने

पूछ ही लिया, "मिस्टर सुनील ! गीता से आपका जो सम्बन्ध रहा है, उसके विषय में मुझे पिछली ही मुलाकात में पता चल गया था। इसमें कोई आपत्ति की बात ही नहीं। वह पढ़ी-लिखी है, आप भी पढ़े-लिखे हैं और इतने ऊंचे खानदान के हैं। इसलिए मैं खामोश रहा। अब मैं जानना चाहता हूं कि आप दोनों में कोई खटपट तो नहीं हुई ? यह भी कोई अन-होनी बात नहीं है।"

सुनील कुछ झेंपकर मुस्करा दिया, "आप ठीक समझे। लेकिन खट-पट से अधिक तो गीता को कुछ गलतफहमी हो गई है।"

ममता हंसकर बोली, "तो आप लोग अपनी गलतफहमी दूर क्यों नहीं कर लेते ?"

"अब वह मिले तो गलतफहमी दूर की जाए।"

कमलजीत बोला, "जब आपको यही नहीं मालूम कि वह कहां है तो मुलाकात कैसे होगी ?"

"हां, मुझे यह तो नहीं मालूम कि वह कहां है, परन्तु मैं यह जानता हूं कि आपके आ जाने से अब यह समस्या हल हो जाएगी। उसके फ्लैट की दूसरी चाबी सदा मेरे पास रहती है। वह अब भी है। उसकी नोटबुक में उसकी सहेलियों के टेलीफोन नम्बर लिखे हुए हैं। मैं टेलीफोन 'ट्राई' कर चुका हूं। हर जगह से यही उत्तर मिला कि वह वहां नहीं है। मगर मुझे विश्वास है कि वह अवश्य अपनी किसी सहेली के यहां छिपी बैठी है, मुझे परेशान करने के लिए।"

"टेलीफोन नम्बरों की कापी आप ही के पास है क्या ?" कमलजीत ने पूछा।

"नहीं, गीता के फ्लैट में ही पड़ी है। मैंने टेलीफोन भी वहां से किए थे।"

कमलजीत को एक बात सूझी, उसने धीमे स्वर में ममता से राय की, और फिर सुनील से कहा, "यदि आप हमें चाबी दे दें तो हम नाश्ते के बाद सीधे गीता के फ्लैट पर ही चले जाएं। वहां से हम टेलीफोन करके गीता का पता लगायेंगे।"

"जी हां मैं भी यही चाहता हूं। वह नोटबुक तो वहां जाने पर ही मिल सकेगी। लेकिन मैं चाहूंगा कि वहां का काम समाप्त करके आप यहीं लौट आइए। जब तक जी चाहे रहिए।"

कमलजीत का ऐसा इरादा नहीं था। [illegible]
के फ्लैट में भी बड़े आराम से रह सकते हैं। [illegible]
हम निश्चय ही आपके यहां रुक जाते। [illegible]
इसके बाद हम शीघ्र ही लौट जाएंगे।"

ममता ने कुछ और विस्तार से कहा, [illegible]
हमें आपके यहां आने भी न दे। उसकी इच्छा [illegible]
पास रहें।"

सुनील बोला, "इसमें भी कोई हर्ज नहीं है। पर [illegible]
का पता लगना चाहिए।"

इसी प्रकार की बातों में नाश्ता समाप्त हो गया। तब सुनील ने कुर्सी से उठते हुए कहा, "मैं अपनी कार में आपको भेजे देता हूं। जब तक आप लौटेंगे नहीं, तब तक कार आपकी वहीं पर प्रतीक्षा करेगी।"

कमलजीत ने जल्दी से कहा, "नहीं, इसकी क्या आवश्यकता है? टैक्सियां आम मिल जाती हैं। हमें अधिक घूमना तो है नहीं। गीता के फ्लैट तक जाना और आना ही तो है। मेरा मतलब है कि यदि गीता मिल गई तो हमें सामान लेने आना पड़ेगा।"

"अच्छा तो यूं करते हैं कि मैं आपको अपने साथ ही ले चलता हूं। गीता के फ्लैट वाली बिल्डिंग के सामने आपको उतारकर मैं आगे निकल जाऊंगा।"

कुछ ही देर बाद कार उस बिल्डिंग के सामने पहुंच गई। ममता और कमलजीत कार से बाहर निकल आए, सुनील को धन्यवाद दिया, और एक बार फिर वे गीता के फ्लैट के सामने जा खड़े हुए। अब के दरवाजा खटखटाने की आवश्यकता नहीं थी। सुनील की दी हुई चाबी कमलजीत ने जेब में से निकाली, और दरवाजा खोलकर वे भीतर घुस गए। इधर-उधर नजर दौड़ाई तो पता चला कि सारा सामान बड़े कायदे से रखा हुआ था। जिसका मतलब यह था कि कम-से-कम फ्लैट के भीतर कोई गड़बड़ नहीं हुई, वरना कुछ तो उथल-पुथल दिखाई देती। ममता धीरे से बोली, "कहीं वह किसी दुर्घटना का शिकार न हो गई हो।"

"यह कैसे सम्भव है?"

"सम्भव क्यों नहीं? मीलों फैले इस शहर में असंख्य बसें, कारें, स्कूटर, मोटर-साइकिलें आदि चलती हैं। कोई भी व्यक्ति उनकी चपेट में

आ सकता है।"

"तुम तो बेकार में चिन्ता करती हो। यदि दुर्घटना हो जाती तो इसका समाचार अखबारों में छपता और किसी न किसी थाने में इसकी रिपोर्ट भी होती। सुनील ने तुम्हारे सामने ही तो कहा था कि यह दुर्घटना का केस नहीं है क्योंकि वह इसके विषय में पूरी छान-बीन कर चुका है। अच्छा ! अब हमें जल्दी से वह नोटबुक ढूंढ़नी चाहिए जिसमें गीता की सखियों और परिचितों के पते और टेलीफोन नम्बर मौजूद हैं।"

भाई-बहन दोनों नोटबुक तलाश करने लगे, परन्तु वह नहीं मिली। ममता निराश हो गई। लेकिन उसी समय ड्रेसिंग-टेबिल की एक दराज़ में से उन्हें वह नोटबुक मिल गई। वे तुरन्त फोन के निकट जा बैठे। छः जगह फोन किया, परन्तु यही उत्तर मिला कि गीता वहां नहीं थी। आखिर सातवें फोन नम्बर पर दूसरी ओर से एक ज़नाना आवाज़ सुनाई दी। कमलजीत ने पूछा, "क्या गीता आपके यहां है ?"

"क्या आप मिस्टर सुनील बोल रहे हैं ? आपने पहले भी तो फोन किया था और मैंने आपको बताया था कि गीता यहां नहीं है।"

"बेशक सुनील साहब ने आपको फोन किया था, मगर मैं सुनील नहीं हूं..."

"आप जो भी हैं, मैंने आपसे कह दिया कि..."

ममता भी सिर आगे बढ़ाए दूसरी ओर से आने वाली आवाज़ को सुनने की कोशिश कर रही थी। उसने फौरन ही फोन का चोंगा भाई के हाथ से लेकर जल्दी से कहा, "माफ कीजिए, आपको कुछ गलतफहमी हो रही है। मैं गीता की बड़ी बहन ममता बोल रही हूं। मुझसे पहले उसके बड़े भाई मिस्टर कमलजीत बोल रहे थे। हम लखनऊ में रहते हैं। कई दिनों से गीता का कोई पत्र नहीं आया तो हम लखनऊ से बम्बई पहुंच गए। सुनील जी से हमें गीता के फ्लैट की चाबी मिल गई। हम गीता के ही फ्लैट से फोन कर रहे हैं। इस समय हम दोनों के अतिरिक्त यहां और कोई नहीं है। आपसे सादर निवेदन है कि यदि गीता आपके यहां मौजूद नहीं है तो कृपया उसे तलाश करने में हमारी सहायता कीजिए। हम इस शहर में नए हैं, हमें यह भी नहीं मालूम कि गीता यहां किस-किस को जानती है। हम तो उसकी नोटबुक में लिखे टेलीफोन नम्बरों के द्वारा सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं..."

"ज़रा रुकिए!" उधर से आवाज़ आई।

"थैंक्यू।"

लगभग दो मिनट तक खामोशी छाई रही। फिर दूसरी ओर से जनाना आवाज़ सुनाई दी, "हलो! कौन बोल रहा है?"

"अरी गीता, तू अपनी बहन की आवाज़ नहीं पहचान सकी क्या? देख, मैंने तेरी आवाज़ पहचान ली।"

उधर से उत्साह भरा स्वर सुनाई दिया, "ममता दीदी! क्या भैया भी साथ हैं?"

अब कमलजीत ने चोंगा हाथ में लेकर कहा, "हां, पगली! मैं भी साथ हूं। आखिर यह क्या तमाशा है? तुम किस जगह हो, बताओ, हम तुम्हें लेने के लिए आ जायेंगे।"

"भैया! अब फोन पर क्या बताऊं कि क्या तमाशा हुआ है! नए शहर में आप खामख्वाह परेशान होंगे। आपको आने की ज़रूरत नहीं मैं खुद ही आ रही हूं।"

"देखो गीता, अब गायब मत हो जाना। भय की कोई बात नहीं।"

"अब भैया के होते हुए मुझे डरने की क्या आवश्यकता है। मैं आपसे नहीं, किसी और से दूर भाग रही हूं। खैर सारी बातें मिलने पर होंगी।"

"तो तुम्हें यहां पहुंचने में कितना समय लगेगा?"

"अधिक-से-अधिक बीस-पच्चीस मिनट।"

"बस तो फिर फौरन चली आओ। मैं फिर कहता हूं कि यदि तुम्हारे यहां पहुंचने में कोई अड़चन है तो हम दोनों तुम्हारे पास पहुंच सकते हैं।"

"कोई अड़चन नहीं है। मैं अभी आई।"

टेलीफोन बन्द हो गया।

कमलजीत बोला, "चलो कुछ तो इतमीनान हुआ।"

"मेरा तो कण्ठ सूख रहा है।"

"पानी पी लो।"

"पानी तो पी लूंगी, लेकिन थोड़ी कॉफी मिल जाती तो कितना अच्छा होता!"

"उधर गीता का छोटा-सा किचन है। वहां जाकर देखो। मेरे ख्याल में तुम्हें कॉफी का पूरा सामान मिल जाएगा।"

कमलजीत का विचार दुरुस्त निकला। छोटा-सा किचन बहुत खूब-

सूरत और साफ-सुथरा था। एक गैस का चूल्हा और एक विजली का चूल्हा मौजूद था। सामने वाले रैक में चाय की पत्ती का डिव्वा, कॉफी का डिब्बा, मिल्क पाउडर, विस्कुट का डिव्वा आदि वहुत-सी चीजें पड़ी थीं। ममता ने जल्दी-जल्दी कॉफी तैयार की, और उसे दो प्यालों में डालकर भाई के पास पहुंची। वे इतमीनान से वैठे कॉफी की चुस्कियां लेते हुए भी वड़ी उत्सुकता से गीता की प्रतीक्षा कर रहे थे।

लगभग तेईस मिनट गुजरे तो दरवाज़े पर खट-खट हुई। कमलजीत ने दरवाज़ा खोला, सामने गीता खड़ी थी। ममता भी लपकी हुई भाई के साथ वहां जा पहुंची। गीता पहले भाई की ओर बढ़ी जिसने उसे क्षण-भर को एक वाज़ू के घेरे में लेकर उसके सिर पर हाथ फेरा। तव वह वहन के गले से कसकर लिपट गई और सिसकियां भरने लगी।

कमलजीत ने दरवाज़ा वन्द कर दिया ममता ने साड़ी के कोने से वहन के आंसू पोंछे और वोली, "गीता। आखिर तुम्हें हुआ क्या था? हमें कितना परेशान कर डाला! क्या दो लाइन का पत्र भी नहीं लिख सकती थी हमें? तूने तो सुनील तक को अपना अता-पता नहीं वताया।"

गीता वहन का हाथ थामकर वोली, "आओ किचन में चलें। अभी तक तो मानो मेरी भूख ही मर गई थी। अव चलकर देखें कि खाने को क्या है। मुरब्बा-शरव्वा, विस्कुट या इसी प्रकार की कुछ और चीजें फ्रिज में पड़ी होंगी। शायद कुछ फल भी हों। मैं थोड़ी कॉफी भी तैयार करना चाहती हूं।"

किचन की तरफ वढ़ते-वढ़ते गीता ने पलटकर भाई की ओर देखा और वोली, "भैया, क्षमा करना कुछ ऐसी वातें होती हैं जो लड़कियां आपस में ही कर सकती हैं। मैं सव-कुछ दीदी को वता दूंगी। वह आपको जितनी कुछ चाहेंगी वता देंगी। इसके वाद हम तीनों इस विषय पर वातचीत करेंगे।"

कमलजीत आराम कुर्सी पर वैठकर अंग्रेज़ी की कोई पत्रिका पढ़ने लगा।

किचन में पहुंचकर पहले तो गीता ने कॉफी के लिए पानी गैस पर रखा। ममता वोली, "तुम केवल अपने लिए ही कॉफी तैयार करो। तुम्हारे आने से पहले ही हमने कॉफी खत्म की थी।"

गीता ने पानी कम कर दिया। फिर उसने फ्रिज खोला। कुछ रस

निकाले और उन पर मुरब्बा लगा-लगाकर खाने लगी। हंसकर बोली, "अच्छा हुआ जो आप दोनों यहां पहुंच गए। मैं बहुत परेशान थी। जिस सखी के यहां ठहरी थी, वहां मैंने अभी तक नाश्ता नहीं किया था। भूख मानो मर चुकी थी, आप लोगों को देखते ही मेरी भूख चमक उठी।"

यह सब तो स्पष्ट ही था गीता के उतरे हुए चेहरे पर फिर से रौनक नज़र आने लगी थी, और उसकी उदास आंखों में चमक-सी दिखाई देने लगी थी। ममता उसके बालों पर हाथ फेरते हुए बोली, "अरी! तू किस मुसीबत में फंस गई थी? कम-से-कम हमें पत्र तो लिख सकती थी।"

"दीदी! मैं बिल्कुल 'कन्फ्यूज़' हो गई थी। चक्कर में आ गई थी। यह भी समझ में नहीं आ रहा था कि पत्र में क्या लिखूं। अगर लिख भी देती तो आप लोग परेशान हो उठते।"

"अरी! कुछ नहीं तो पत्र लिखकर भैया को बुला सकती थी।"

"कहा न, मैं 'कन्फ्यूज़' हो गई थी।"

"सुनील की बातों से लगता था कि तूने उसे भी कुछ नहीं बताया।"

"क्या बताती उसे? वही तो मेरी परेशानी का मूल कारण था।"

"सच?" ममता आश्चर्य में आ बोली।

इसके बाद गीता ने बताया कि कुछ समय से सुनील की बेतकल्लुफी बढ़ती जा रही थी। वह उसे अक्सर गले से लिपटा लेता, चूमने-चाटने लगता, कभी इधर से दबाता कभी उधर से। मगर वह यह सब सहन करती रही, क्योंकि वह सुनील को अपना होने वाला पति मान चुकी थी। मगर एक रोज सुनील ने इसी फ्लैट में उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की। कहने लगा कि तुम तो मेरी होने वाली पत्नी हो, इसलिए इसमें कोई संकोच की बात नहीं होनी चाहिए। मगर वह इस हद तक जाने को तैयार नहीं थी। तब सुनील ने झपट कर उसे पलंग पर पटक दिया, और स्वयं उसके ऊपर चढ़ बैठा। उसने हार नहीं मानी। इस झपटा-झपटी में उसकी साड़ी फट गई, ब्लाउज के भी मानो टुकड़े हो गये, यहां तक उसकी ब्रेसरी भी उसने खींच डाली। ऐन उसी समय वह उसके चंगुल में से निकलने में सफल हो गई। ऐसी दशा में वह फ्लैट के बाहर तो नहीं जा सकती थी, परन्तु वह दौड़ कर किचन में घुस गई, भीतर से दरवाजे की चिटकनी चढ़ा दी। बाहर से सुनील ने बहुत दरवाजा खटखटाया, मगर उसने खोला नहीं। तब वह खुशामद करने लगा, गीता ने फिर भी दरवाज़ा नहीं खोला। आखिर

सुनील ने माफी मांगी और कहा कि सचमुच अपने पागलपन में विवश हो उठा था। उसने जवाब दिया कि अगर वह सच्चे दिल से क्षमा चाहता है तो फौरन फ्लैट से बाहर निकल जाए। वह किचन की खिड़की में से जब उसे नीचे सड़क पर देख लेगी, तब दरवाज़ा खोलेगी।

यह सब सुना कर गीता ने कहा, "तो दीदी, इस तरह मैंने अपनी इज्ज़त बचाई। या यूं समझिए कि ईश्वर ने मेरी लाज रख ली। जब सुनील माफी मांग रहा था तो भी मुझे उस पर बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ। मेरे कहने के अनुसार वह फ्लैट में से बाहर निकल गया, और जब मैंने उसे सड़क पर खड़े देखा तब किचन का दरवाज़ा खोला, इसके बाद फौरन ही फ्लैट के दरवाज़े को ऊपर-नीचे से अच्छी तरह बन्द कर दिया। सुनील लौटकर नहीं आया। उसने अपने घर से मुझे फोन किया। फिर से माफी मांगी। मैंने भी फोन पर कह दिया कि हां मैंने माफ किया। उसने पूछा कि कल मिलोगी। मैंने कहा कि हां मिलूंगी। लेकिन मैं मिली नहीं। उसी रोज़ मैं इस फ्लैट से भाग गई। जिस सखी को आपने फोन किया था उसी के यहां पहुंची और अब तक वहीं हूं। मैंने कह दिया था कि कोई भी मुझे टेलीफोन करे तो कह दो कि मैं यहां नहीं हूं। आज आप लोगों का फोन आने पर शीला, मेरी सखी ने मुझे बताया कि तुम्हारे भैया और बहन लखनऊ से आए हैं। मुझे पहले तो शक हुआ कि कहीं यह सुनील की चालाकी न हो मगर टेलीफोन पर मैं फौरन ही आप दोनों की आवाज़ पहचान गई···"

यह सब सुन कर ममता ने एक बार पुनः गीता को गले से लगा लिया और कहा, "अच्छा तो मैं बाहर जाकर भैया को कुछ अपने ढंग से यह बता दूंगी कि सुनील ने तुमसे कितनी ज्यादती की। जब तक मैं तुम्हें आवाज न दूं तब तक तुम किचन में ही रहना।"

गीता सिर हिला कर बोली, "हां, दीदी, यह ठीक रहेगा।"

ममता किचन से निकल कर अपने भाई के पास पहुंची तो वह अब भी किसी पत्रिका के पन्ने उलट-पलट रहा था। वास्तव में पत्रिका से उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी, उसका दिमाग तो दूसरी ही उलझनों में फंसा हुआ था।

ममता को देखते ही उसने पत्रिका एक ओर को रख दी और पूछा, "हां, तो क्या समाचार है ?"

ममता कुर्सी पर बैठते हुए बोझिल स्वर में बोली, "समाचार तो कोई अच्छा नहीं है। बस यह समझ लीजिए कि गीता की इज्जत बाल-बाल बच गई। अधिक कुछ न कह कर मैं यही राय दूंगी कि सुनील से न तो गीता को और न हमें कोई अच्छी उम्मीद रखनी चाहिए।"

"इसलिए कि उसने गीता की इज्जत पर हमला कर दिया ?"

"और नहीं तो क्या ?"

"लेकिन ममता, सुनील के सन्दर्भ में ऐसी बात कही नहीं जा सकती।"

"वह क्यों ?"

"इसलिए कि दोनों का आपस में प्रेम चला आ रहा था। यह मैं मानता हूं कि सुनील किसी मौके पर एक सीमा से आगे बढ़ गया हो, लेकिन उसे इज्जत पर हमला करना नहीं कह सकते।"

"मैंने आपको जानबूझ कर यह नहीं बताया कि वह किस सीमा तक जा पहुंचा था। गीता ने स्वयं भी आपके सामने कुछ न कह कर अलग से सारी बात बताना उचित समझा।"

"मैं अपनी बात इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मैं मर्द का मनोविज्ञान समझता हूं। जब मर्द किसी लड़की को अपनी पत्नी के रूप में देखने का आदी हो जाए तो किसी अवसर पर वह यह भी भूल सकता है कि अभी उसकी उस लड़की से शादी नहीं हुई।"

"आपका कहने का मतलब यह है कि हम बकरी को भेड़िये के रहम पर छोड़ कर वापस लखनऊ चले जाएं ?"

"नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है। मैं केवल इतना चाहता हूं कि हमें एकदम ही निष्कर्ष पर नहीं पहुंच जाना चाहिए कि सुनील एक गिरा हुआ व्यक्ति है। ज़रा इसकी उम्र पर ध्यान दो, ज़रा यह सोचो कि वह कितना धनी है। अगर ऐसा आदमी कुछ इधर-उधर की लड़कियों से हंसता-बोलता रहे और केवल गीता से ही विवाह का वचन बांधे तो इसमें कोई आपत्ति-जनक बात नहीं है। उम्र के इस दौर से गुज़र जाने पर लगभग हर पुरुष की तरह उसकी आदतों में भी परिवर्तन हो जाएगा।"

"भैया, आप इस बात का अनुमान नहीं लगा सकते कि किसी भी

भले घर की लड़की के लिए उसकी इज्जत अनमोल रत्न के बराबर होती है, और जब उसी अनमोल रत्न को चकनाचूर करने का कोई भी व्यक्ति इरादा करे तो लड़की के मन को बहुत बड़ा धक्का लगता है।"

"बेशक मुझे इस बात का सीधा अनुभव न हो, लेकिन मैं गीता के मन की स्थिति को काफी हद तक समझ सकता हूं।"

ममता ने सम्भवतः कुछ चिढ़कर कहा, "बेहतर यही होगा कि आप सीधे गीता से बात करें। आखिर यह सब उसी पर तो बीती है। आपसे सहमत होना या न होना उसका काम है, मेरा नहीं।"

"ठीक है। अन्त में बात तो उसी से करनी पड़ेगी।"

ममता ने ज़ोर से आवाज़ लगाई "गीता!"

गीता ने इस पुकार का जवाब तो नहीं दिया, लेकिन स्वयं ही चली आई और एक कुर्सी पर बैठ गई। उसका सिर झुका हुआ था और वह फर्श की ओर देख रही थी। ममता ने संक्षेप में भाई के विचार बता दिए। तब कमलजीत ने पूछा, "हां तो गीता, तुम्हें इस विषय में क्या कहना है?"

गीता ने एक बार पलकें उठा कर भाई की ओर देखा और फिर आंखें झुका कर बोली, "मुझे यह पता चले कि आप मुझसे क्या चाहते हैं तो फिर मैं अपनी राय दूं।"

ममता बीच में ही बोल उठी, "गोल-मोल बातें करने का कोई लाभ नहीं है। गीता, पहले यह बताओ कि तुम बम्बई में अकेली रहने को तैयार हो या नहीं।"

"नहीं।" गीता ने झट से उत्तर दिया।

अब ममता ने भाई की ओर देखा और कहा, "मेरे ख्याल में यहीं से हमारी बातचीत आगे बढ़नी चाहिए।"

कमलजीत ने कहना आरम्भ किया, "मैं गीता को यहां रहने के लिए नहीं कहूंगा। यह विचार तो मेरे मन में आया ही नहीं था। गीता को हम अपने साथ वापस लखनऊ ले जायेंगे।"

ममता बोली, "बस! फिर तो बात ही खत्म हो गई।"

कमलजीत ने कहा, "नहीं, बात खत्म नहीं हो गई। मैं चाहता हूं कि दो प्रेमियों का नाता इतनी जल्दी दो टूक ढंग से टूटना नहीं चाहिए। पिछली बार जब मैं बम्बई आया था तो मैंने गीता को इस मामले में सावधान कर दिया था। अब सिर्फ इतनी-सी बात पर पिछले लम्बे अर्से से बने

सम्बन्ध को तोड़ देना कहां की अक्लमंदी है ?"

ममता ज़रा तीव्र स्वर में बोली, "इतनी-सी बात ! आप इसे मामूली बात समझते हैं क्या ?"

"ममता ! अगर यह हरकत कोई गैर आदमी करता या मामूली जान पहचान वाला करता तो मैं इसे मामूली न समझता। मगर इन दोनों के संबंधों को सम्मुख रखते हुए किसी भी रोज सुनील से ऐसी हरकत हो जाना असामान्य बात नहीं थी। अब हमें देखना यह है कि क्या सुनील अपने किए पर पछता रहा है या नहीं। दूसरे यह कि गीता के यहां से चले जाने से उस पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होती है। यदि उसकी मोहब्बत में कुछ सच्चाई है तो वह गीता से माफी भी मांगेगा और उसे पत्र भी लिखता रहेगा। किसी के मन में घुसकर उसके सच्चे या झूठे होने का सबूत प्राप्त नहीं किया जा सकता। परन्तु किसी के भी व्यवहार से इस बात का केवल अनुमान तो लगाया जा सकता है।"

तर्क की इन उलझनों से थोड़ा घबरा कर ममता बोली, "एक बार तो गीता को हम लखनऊ ले ही जायेंगे। वहां यह हर प्रकार से सुरक्षित रहेगी। इसके बाद आपके मन में जो आए कीजिएगा।"

"मंजूर है।"

कमलजीत ने पुनः कहना आरम्भ किया, "मैं यह भी चाहूंगा कि अब सुनील से मुलाकात हो तो उसे यह महसूस नहीं होना चाहिए कि हमारा दृष्टिकोण उसके बारे में बदल गया है। उसे यही महसूस होना चाहिए कि स्थिति सामान्य है। गीता और सुनील अलग से इस विषय पर भले ही कोई बातचीत कर लें, लेकिन जब हम सब एक साथ बैठे हों तो कोई आपत्ति जनक बात नहीं होनी चाहिए। मैं उसे बता दूंगा कि माताजी गीता से मिलने को व्याकुल हो रही हैं क्योंकि गीता काफी समय से उनसे नहीं मिली है। बस गीता को यहां से ले जाने का इतना-सा ही बहाना काफी है। इसके बाद हम सुनील का व्यवहार देखेंगे। कहो गीता, मेरे इस सुझाव पर तो तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है ?"

गीता ने इन्कार में सिर हिला दिया।

इतने में ही टेलीफोन की घंटी बजी। कमलजीत ने फोन उठाया। दूसरी ओर आवाज सुनकर उसने चोंगे पर हाथ रख दिया ताकि उसकी आवाज टेलीफोन करने वाले के कानों तक न पहुंचे और फिर बहनों को

धीमे से बताया कि सुनील बोल रहा है।

इसके बाद उन दोनों की बातें शुरू हो गईं। पहले सुनील बोला, "मैं अभी-अभी दफ्तर पहुंचा हूं, सोचा कि आपको फोन कर लूं।"

"आपने अच्छा ही किया, वरना मैं आपको टेलीफोन करने वाला था।"

"पहले यह बताइए कि गीता मिल गई या नहीं?"

कमलजीत खूब हंस-हंसकर बातें कर रहा था, ताकि सुनील यही समझे कि वह बड़े अच्छे मूड में है, "जी हां, इसे हमारा सौभाग्य ही समझिए।"

"वेरी गुड। क्या गीता ने यह नहीं बताया कि वह चुपचाप कहां डुबकी लगा गई थी।"

"अचानक ही उसका प्रोग्राम बना और वह अपनी एक फ्रेन्ड के साथ पूना चली गई थी। मैंने डांटा कि उसे किसी से कहकर जाना चाहिए था। उसका कहना है कि उसका प्रोग्राम इतना अचानक बना कि वह किसी से भी नहीं कह सकी। उसने अपनी भूल के लिए क्षमा मांग ली है और अब सारा मामला ठीक-ठाक है। चिन्ता की कोई बात नहीं।"

"भगवान का शुक्र है। अच्छा अब आपका क्या प्रोग्राम है। मैं तो अनुरोध करूंगा कि आप सब दिन का खाना खाने के लिए डेढ़ बजे तक हमारे यहां पहुंच जाएं। भोजन के बाद अगर आपका यहां टिकने का प्रोग्राम न बने तो कम-से-कम आप अपना सामान तो ले जा सकेंगे।"

कमलजीत ने टेलीफोन के मुंह पर हाथ रखकर जल्दी से बहनों को बताया कि सुनील की ओर से उन सबको भोजन पर बुलाया गया है। और फिर उनकी राय जाने बिना हाथ हटाकर सुनील से कहा, "हम अवश्य आयेंगे।"

लगता था कि यह सुनकर सुनील को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसके स्वर से ही मानो हर्ष टपक रहा था। बोला, "मैं एक बजे तक कार आपके यहां भेज दूंगा। देखिए, अब आप इस बात से इन्कार न कीजिएगा। यदि आपने इंकार किया भी तो मैं उसे स्वीकार नहीं करूंगा।"

पूरे एक बजे दरवाज़े पर खट् खट् हुई। कमलजीत ने दरवाज़ा खोला तो सामने सुनील का ड्राईवर खड़ा था। ये सब तैयार बैठे थे। फ्लैट का दरवाज़ा बन्द करके वे कार में जा बैठे और शोफर ने इंजन चालू कर दिया।

जब वे सुनील के निवास स्थान पर पहुंचे तो वह पोर्टिको में खड़ा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। ये तीनों उतरे। दोनों लड़कियों ने बड़े प्रेम से हाथ जोड़कर नमस्ते कही। सुनील ने बताया कि खाना मेज पर लग चुका था, इसलिए उन्हें सीधे डाईनिंग रूम की ओर ही चलना होगा। वे डाईनिंग रूम की ओर बढ़े तो सुनील ने चुपके से गीता की कलाई पकड़कर उसके चलने की गति को कम कर दिया। कमलजीत और ममता इस बात को भांप गए, लेकिन वे बिना किसी संकोच के आगे बढ़ते चले गए। सामने घर के अन्य सदस्य खड़े थे। मौका पाकर सुनील गीता को दूसरी ओर ले गया।

गीता का हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था मगर उसे इतमीनान था कि यहां सुनील से उसे कोई खतरा नहीं हो सकता था।

मौका पाकर सुनील ने पूछा, "गीता क्या तुम मुझसे बहुत खफा हो ?"

गीता की आंखों में क्रोध उभर आया, नागिन की तरह फुंफकार उठी, "अपने मन में झांककर देखो न।"

"मैं सच्चे दिल से अपने मन में झांक चुका हूं। मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूं। मगर इसके साथ ही मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेरे मन में कोई खोट नहीं है। बेशक मैं आवश्यकता से अधिक भावुक हो गया था। मुझे बुरे भले की कोई तमीज नहीं रह गई थी। मैं तुम्हें सदा अपनी पत्नी के रूप में देखता रहा···इसीलिए··"

"परन्तु यह नहीं सोचा कि अभी हमारी शादी वास्तव में हुई नहीं थी।"

"बस ! यही मेरी भूल थी।"

"अब मुझे तुमसे डर लगने लगा है। अब मैं तुम्हारे साथ अकेली-दुकेली कभी कहीं नहीं जाऊंगी और न फ्लैट में कभी तुम्हारे साथ अकेली बैठूंगी।"

"मुझे यह सब मंजूर है। मगर जब हम दोनों की शादी हो जाएगी, तब तो तुम ऐसी कोई शर्त नहीं लगाओगी न ?"

गीता का दिल भीतर-ही-भीतर बल्लियों उछलने लगा। मगर उसने अपनी शक्ल गम्भीर बनाए रखी। फिर जल्दी से बोली, "अब हमें डाईनिंग रूम में चलना चाहिए। सब लोग इंतजार कर रहे होंगे। जरा भैया और दीदी का तो ख्याल करो। वे क्या सोचेंगे ?"

तब वे दोनों लपकते हुए डाईनिंग रूम को चल दिए। वहां सब लोग

गप-शप करने में मग्न थे। भोजन के दौरान भी इधर-उधर के चुटकले चलते रहे। सुनील बोला, "गीता ने भी कमाल कर दिया। किसी से कुछ कहे-सुने विना पूना को चल दी। यहां तक कि भैया को वम्वई आना पड़ा।"

सुनील को विश्वास हो चुका था कि गीता ने उस कांड के वारे में अपने भैया और दीदी से कुछ नहीं कहा था। सुनील की वात पर कमलजीत हंस पड़ा और वोला, "गीता से भी वढ़कर तो आपने कमाल कर दिया है।"

"वह कैसे?"

"हमने तो गीता को आप ही के भरोसे पर यहां छोड़ रखा है। पिछली वार जव मैं वम्वई आया था तो आपसे मुलाकात के वाद मैं गीता के विषय में विल्कुल निश्चिन्त हो गया था। परन्तु माफ कीजिए, अव मैं महसूस करने लगा हूं कि आप गीता पर ठीक से नज़र नहीं रखते हैं।"

सुनील ने फौरन ही हंसते हुए हाथ जोड़ दिए और वोला, "वस! केवल इस वार के लिए क्षमा चाहता हूं। आइन्दा आपको शिकायत नहीं होगी।"

कमलजीत ने उंगली उठाकर कहा, "अव अपना वचन भूलिएगा नहीं। अगर अव के आप चूक गए तो घर वालों के सामने मेरी 'पोज़ीशन' खराव हो जाएगी।"

"हरगिज नहीं भूलूंगा। मेरी तौवा!"

कमलजीत ने कहा, "एक वात और भी है।"

"क्या?"

"दरअसल हमारी माताजी आजकल कुछ वीमार रहती हैं। वह गीता से मिलने के लिए वड़ी उत्सुक हो रही हैं, क्योंकि इसे देखे उन्हें काफी समय हो चुका है। मैं चाहूंगा कि आप गीता को कम-से-कम एक महीने की छुट्टी दे दीजिए। चाहे विना तनख्वाह के ही दीजिए।"

"अरे···अरे। यह आप क्या कहते हैं। उसकी तो छुट्टी 'ड्यू' है। तनख्वाह काटने का प्रश्न ही नहीं उठता···"

सुनील तो यह भी कहने को था कि गीता स्वयं मालकिन वनने जा रही थी, भला उसका वेतन कौन काट सकता था। मगर माता-पिता की उपस्थिति के कारण झिझक कर रह गया। तव उसने कमलजीत से पूछा, "कव तक लौटने का इरादा है?"

"हम परसों गाड़ी पर सवार हो जायेंगे। पहले दिल्ली जायेंगे, और हा से लखनऊ। दिल्ली में थोड़ा काम है।"

"जैसी आपकी इच्छा। कितना अच्छा होता अगर आप कुछ दिन यहां कते।"

कमलजीत ने उत्तर दिया, "फिर कभी सही। अब तो आना-जाना गा ही रहेगा।"

"क्यों नहीं! क्यों नहीं!"

भोजन के बाद वे तीनों फ्लैट में वापस आ गए। यहां कमलजीत ने ोता से पूछा कि सुनील ने अलग जाकर उससे क्या कहा था।

गीता ने बता दिया।

ममता ने कहा, "आप दोनों भाई-बहन भी खूब तमाशा कर रहे हैं। झे उम्मीद नहीं है कि सुनील और गीता की शादी हो सके।"

"बड़ी बहन होकर ऐसा श्राप तो न दो।"

"श्राप की बात नहीं है। मेरा मन यही कहता है। इन दोनों के मामले भी वही अड़चन उठेगी जो आपके और दीपा के मामले में उठी थी।"

"आवश्यक तो नहीं। अमीर बाप अपनी बेटी को मजबूर कर सकता , लेकिन एक अमीर बाप बेटे को विवश नहीं कर सकता।"

"देख लीजिएगा।"

थोड़ी देर तक मौन छाया रहा। आखिर कमलजीत ने गर्दन बढ़ाकर ुसफुसाते हुए कहा, "सच पूछो तो गीता का सदा के लिए लखनऊ में रहना ुम्हारे हित में नहीं होगा।"

ममता के माथे पर कुछ छोटे-छोटे बल उभर आए, बोली, "वह यों?"

"बस अब देख लेना।"

दोनों बहनें और भाई जब बम्बई से चले तो सुनील उन्हें विदा करने ाया। पिछले दो दिनों के दौरान उसका व्यवहार इतना अच्छा रहा था क ममता भी आश्चर्य में पड़ गई। गीता के मन में अब भी सन्देह बना ुआ था। महीने-भर की छुट्टी मंजूर हुई थी और सुनील ने छुट्टी की

तनख्वाह पेशगी दे दी थी। लगता था कि वह गीता के मन से उस घटना की कटुता हर कीमत पर दूर कर देना चाहता था।

ममता के कहने पर गीता ने अपनी कुछ सहेलियों को समझा दिया था कि अगले एक महीने के दौरान वे उसे सुनील के विषय में सूचित करती रहें कि वह किस-किस लड़की के साथ घूमता है तथा और किन-किन बातों में दिलचस्पी लेता है। वास्तव में गीता के मन में इतनी गहरी चोट लगी थी और वह इतना सहम गई थी कि सुनील से फिर से पहले जैसा सम्बन्ध स्थापित होना उसे असम्भव लगता था। फिर भी भैया के अनुरोध के कारण वह खामोश थी।

बम्बई से वे दिल्ली पहुंचे। वहां चार-पांच दिन घूमने का प्रोग्राम था। इस दौरान कमलजीत दीपा के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता था। उसका एक मित्र जो उसके साथ पढ़ता रहा था, उन दिनों दिल्ली के एक थाने में अफसर लगा हुआ था। उसके द्वारा दीपा के विषय में उसे सब-कुछ या बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हो सकती थी।

उसका मित्र पुलिस अफसर अपने दफ्तर में ही मिल गया और उसने कमलजीत का प्रेमपूर्ण स्वागत किया।

इधर-उधर की बातें हो चुकीं तो कमलजीत ने अपना लक्ष्य बताया। पुलिस अफसर बोला, "यह वारदात मेरे इलाके में तो नहीं हुई, लेकिन मैं इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता हूं।"

"मैं केवल इतना जानना चाहता हूं कि दीपा के बाप ने अपनी बेटी के बारे में केवल अफवाह उड़ाई है या इसमें कुछ असलियत भी है।"

"मैंने सारी बातें नोट कर ली हैं। आज तुम जाओ। मैं अपने साधन से सब बातों का पता लगाकर संध्या तक तुम्हें बता दूंगा।"

दूसरी शाम निश्चित समय पर वह थाने में अपने मित्र के पास पहुंचा तो उसे पता चला कि यह केवल उड़ाई हुई खबर नहीं थी। दीपा सचमुच कार में बैठकर यमुना किनारे गई थी। पिछली सीट पर उसके कपड़े और रुक्का पाया गया था। बहुत तलाश करने के बावजूद अभी तक लड़की की लाश नहीं मिली थी। थाने में इस दुर्घटना की रिपोर्ट भी की गई थी।

यह सब सुनकर कमलजीत को कम-से कम इस बात का इतमीनान तो हो गया कि दीपा के बाप ने उसे बेवकूफ बनाने का प्रयत्न नहीं किया था। इसके साथ ही उसका मन और अधिक उदास हो गया, क्योंकि यह खबर

झूठी नहीं थी।

कुछ दिन दिल्ली की सैर करने के बाद वे लखनऊ जाने वाली गाड़ी में बैठ गए। दोनों बहनें खुश थीं, परन्तु कमलजीत का मन बोझिल ही रहा।

जब वे लखनऊ के स्टेशन पर पहुंचे तो देखा कि उनके स्वागत के लिए अंजू अपने भाई सहित प्लेटफार्म पर मौजूद थी। उनके साथ पुष्पा भी थी।

गाड़ी रुकी तो दोनों बहनें नीचे उतरकर अंजू से मिलीं। ममता ने उनसे छोटी बहन का परिचय कराया। कमलजीत ने पुष्पा से पूछा, "अरे! तुम यहां कैसे चली आईं? मेरा मतलब यह है कि तुमको कैसे पता चला कि हम यहां इस गाड़ी से पहुंच रहे हैं?"

पुष्पा मुस्कराकर बोली, "ममता ने अंजू को लिखा और अंजू की जबानी मुझे पता चल गया। अतः मैं भी आपके स्वागत के लिए यहां पहुंच गई।"

"थैंक्यू!"

कुलियों ने सामान उठा लिया और वे स्टेशन के बाहर की ओर चल दिए। किशोर ने अपनी बहन के कन्धे पर हाथ रखकर उसके कान में फुसफुसाते हुए सच जाहिर किया, "अरे भई, छोटी बहन गीता अपनी बड़ी बहन से भी अधिक सुन्दर है।"

अंजू आंखें दिखाते हुए बोली, "तुम्हें उससे क्या लेना है?"

"लेना तो कुछ नहीं, लेकिन हो सकता है कि भविष्य में इन्हीं कैंडीडेटों में से एकाध को चुनना पड़ जाए।"

"धत्त!" अंजू ने भाई को हाथ से धकेलकर जरा पीछे हटाते हुए कहा।

स्टेशन के बाहर पहुंचकर ममता ने कहा, "अंजू! मेरी राय तो यह है कि आप सब हमारे घर चलें।"

"जी नहीं," अंजू ने झट से कहा, "आज हमें कुछ और काम भुगताने हैं। कल आएंगे। कार हमारे साथ है, हम तुम लोगों को बंगले पर उतारकर खुद आगे बढ़ जाएंगे।"

सब लोग कार में बैठ गए तो किशोर ने स्टीयरिंग सम्भालकर इंजन चालू कर दिया। हंसी-मजाक होने लगा। कहकहे उड़ने लगे। इस बीच कार बंगले के सामने पहुंचकर रुक गई।

अंजू ने दूसरे दिन आने का फिर से वायदा किया। पुष्पा सामान सहित बंगले के भीतर चली गई।

दूसरे दिन अंजू और किशोर आ पहुंचे। भाई-बहन दोनों ही एक जैसे थे, यानि ज़ोर-ज़ोर से बोलने वाले, चंचल, हंसी-मजाक के रसिया। अतः उनके आते ही घर में गहमा-गहमी हो गई।

अंजू और ममता को मज़े-मज़े में गप-शप हांकते देखकर किशोर बोला, "यह क्या भई! तुम दोनों मिलते ही गप उड़ाने लगीं ?"

अंजू ने उत्तर दिया, "तुम्हें किसने मना किया है? तुम भी गप लड़ाओ।"

"गप क्या लड़ाएं! पेट में चूहे दौड़ रहे हैं, वल्कि उल्टी-सीधी कला-बाज़ियां खा रहे हैं—देखो अंजू, मेरी इस वात का उत्तर तुम मत देना। अब के ममता को जवाव देने की वारी है।"

अंजू वोली, "ममता नहीं, जवाव मैं ही दूंगी।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि तुमने प्रसंग ही ऐसा उठाया है।"

"अरी वाह! मैंने कौन-सा तोप का गोला छोड़ दिया। हर भले आदमी को भूख तो लगती ही है।"

यह झगड़ा चल रहा था तो गीता कुर्सी से उठकर खड़ी हो गई और दोनों हाथ ऊपर उठाकर मुस्कराते हुए वोली, "वाद-विवाद एकदम समाप्त! किशोर जी, वताइए आप क्या खाएंगे, क्या पिएंगे ?"

किशोर ने वड़े गौरव से चारों ओर नज़र दौड़ाई और वोला, "देखिए! मेज़वान इसको कहते हैं। मुझे ऐसी ही सभ्य लड़की की तलाश थी जैसी कि मिस गीता।"

अंजू ने किशोर को मुंह चिढ़ाते हुए कहा, "वेशक तुम्हें गीता जैसी सभ्य लड़की की तलाश होगी, लेकिन गीता को तुम्हारे जैसे लड़के की तलाश नहीं है। यह मेरा विश्वास है।"

किशोर वोला, "मेरे जैसे लड़के की तलाश भले ही न हो, लेकिन मेरे जैसे मेहमान की तलाश तो अवश्य ही होगी। वरना वह इतनी उदारता से मुझे नाश्ते-पानी के लिए न पूछती।"

कमलजीत ज़रा दूरी पर वैठा एक पत्रिका देख रहा था। वह वोल उठा, "हियर-हियर, मैं किशोर से सहमत हूं, और उसे पूरा-पूरा सहयोग

देने को तैयार हूं।"

हंसी-मजाक के इसी कोलाहल में पकौड़ी और दूसरा नाश्ते का सामान तैयार हो गया। हंसी और बातों की फुलझड़ियां छूटने लगीं। किशोर गीता से बेतकल्लुफ होने की कोशिश कर रहा था। गीता भी संकोच करने वाली लड़की नहीं थी, आखिर वह बम्बई जैसे शहर में रह चुकी थी। किशोर ने पूछा, "कहिए, आपको लखनऊ पसन्द आया?"

ममता बोली, "लखनऊ उसके लिए कोई नया शहर तो नहीं है। यहीं उसका जन्म हुआ, यहीं पढ़ी-लिखी और यहीं बड़ी हुई।"

किशोर बोल उठा, "ओह! यह तो मैं भूल ही गया। मुझे पूछना यह चाहिए था कि बम्बई के बाद अब लखनऊ कैसा लग रहा है।"

गीता ने उत्तर दिया, "हर नगर की अपनी-अपनी विशेषता होती है। बम्बई की गहमा-गहमी के बाद लखनऊ कुछ तो सूना-सूना लगेगा।" मगर धीरे-धीरे यही अच्छा महसूस होने लगेगा।"

"हमारे शहर में हजरतगंज है, गोमती नदी है···"

"रहने दो अपनी गोमती नदी को! नदी क्या है, बस नाला समझो।" अंजू ने किशोर की मुंह तोड़ उत्तर देते हुए कहा।

"अरी अंजू! जब कभी कोई तुम्हारा कोमल हाथ थामकर, तुमको नौका में बिठाकर मीठी-मीठी बातें करता हुआ गोमती नदी की सैर कराएगा तो इस प्रकार की सारी टर्र-टर्र भूल जाओगी। फिर तो यही नाला तुम्हें स्वर्ग-सा लगने लगेगा।"

ममता बोली, "बेकार की चोंचबाजी बन्द करो भई! कोई ठोस बात होनी चाहिए।"

किशोर बोला, "गीता जी, क्या मैं आपसे 'रिक्वैस्ट' कर सकता हूं कि एक रोज मेरे साथ नाव में बैठकर गोमती की सैर करने चलिए।"

अंजू शरारत से बोली, "लगता है यह तुम्हारा पहला ठोस कदम है।"

किशोर ने दाहिना हाथ हवा में फेंककर कहा, "तुम्हारा जवाब नहीं है। तुम तो 'ठोस कदम आचार्या' हो। जहां किसी ने ठोस कदम उठाया, वहीं तुमको पता चल गया।"

गीता ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है।"

ऐन उसी समय ममता और कमलजीत ने एक-दूसरे की ओर अर्थपूर्ण

से देखा, वे मुंह से कुछ नहीं बोले।

किशोर ने पूछा, "तो गीताजी, मैं कब आपको लेने के लिए आ सकता
"

"जब आप मुझे गीताजी कहना छोड़ सकें, तभी आ जाइएगा।"

सब हंसने लगे।

किशोर बोला, "छोड़ दिया, इसी पल 'जी' को उड़ा दिया। तो मिस गीता, मैं आप···मेरा मतलब है कि तुमको लेने के लिए कब आ सकता हूं?"

"कभी भी—लेकिन कल ज्यादा बेहतर रहेगा!"

"यह तो और भी अच्छा है। कल पूर्णमासी की रात होगी।"

अंजू कुर्सी से उठी और गीता के कन्धे पर हाथ रखकर बोली, "यह मेरा जो भाई है न···यह बड़ा मक्खनबाज़ है। इतना मस्का मारता है, इतना मस्का मारता है कि अगर कहीं बम्बई में होता तो अब तक वहां मक्खन का भाव बहुत ही ऊपर चढ़ गया होता।"

गीता बोली, "चिन्ता मत कीजिए, बम्बई में बड़े-बड़े मस्केबाज़ों से मेरा वास्ता पड़ चुका है।"

अंजू ने फिर कहा, "एक और आदत भी है जो दरअसल मुझमें भी है।"

"क्या?"

"इसको दूसरे का हाथ पकड़ने की बड़ी आदत है। अगर यह ऐसा कु करे तो घबराने की कोई बात नहीं।"

किशोर जल्दी से बोला, "मेरी इस बात की गवाही तो ममता भी सकती है।"

ममता चौंककर रह गई। वह मुंह से कुछ न कह पाई।

दूसरे दिन संध्या हुई तो किशोर का स्कूटर बंगले के सामने प रुक गया। गीता यूं तो तैयार बैठी थी, लेकिन औरतों की आद उसने शीशे के सामने जाकर अपना मेक-अप ठीक करना आ दिया। थोड़ा पाउडर इधर, थोड़ा उधर, आंखों में सुर्मे की धा

पेन्सिल से भवों को दो 'टच' भी दिए।

दो-तीन बार हार्न बजाने के बाद किशोर भीतर चला आया और ऊंचे स्वर में बोला, "गीता अभी तैयार हुई कि नहीं ?"

"हां, तैयार हो तो रही थी। बल्कि तैयार ही बैठी थी। अब फिर कमरे में घुस गई। आती ही होगी।" मां बोली।

सचमुच गीता चमचमाती हुई कमरे से बाहर निकली और किशोर की ओर देखकर बोली, "हलो ! किशोर।"

"हलो, गीता !"

फिर वे दोनों हाथ हिलाते हुए बाहर की ओर चल दिए।

ममता और कमलजीत भी निकट ही बैठे थे। मां ने उनसे कहा, "आजकल लड़के-लड़कियां कितनी जल्दी घुल-मिल जाते हैं। सुना तुमने, भीतर आते ही किशोर ने कितनी बेतकल्लुफी से कहा कि गीता तैयार हुई या नहीं।"

भाई-बहन दोनों मुस्करा दिए।

किशोर और गीता स्कूटर पर आगे-पीछे बैठे मानो उड़े जा रहे थे। गीता स्कूटर की एक ही साइड पर दोनों टांगें लटकाए और हाथ किशोर के कन्धे पर रखे चहक-चहककर बातें कर रही थी। किशोर के घने बालों में से एक अनोखी सुगन्ध गीता के नथुनों तक पहुंच रही थी। बोली, "बालों में कौन-सा स्प्रे इस्तेमाल किया है, बड़ी मजे की सुगन्ध आ रही है।"

किशोर ने स्प्रे का नाम तो नहीं बताया, वरन् पूछा, "तुम मेरे बालों की खुशबू तो सूंघे जा रही हो, लेकिन तुम्हारे बालों की सुगन्ध मेरी नाक तक नहीं पहुंच रही है।"

"वह तो किस्मत से ही पहुंचेगी।" वह जोर का कहकहा लगाकर हंसी।

"ऐसी तो लड़कियां देखी थीं जिनकी सूरत का जवाब नहीं था लेकिन तुम्हारी बातों का भी कोई जवाब नहीं है।"

"शुक्रिया !"

"सुनो मिस्टर, मर्दों की आदत है कि वे लड़कियों की शक्ल या आवाज या बातों में उलझकर रह जाते हैं। लेकिन वे नहीं जानते कि हर लड़की के भीतर बहुत गहराई में मानो एक अनमोल खजाना दबा होता है। जिस किसी को उस खजाने का रास्ता मालूम हो जाए, वही जिन्दगी का

असली लुत्फ उठा सकता है।"

"मगर मिस। उस खज़ाने के रास्ते पर लड़कियां पहुंचने ही कब देती हैं।"

"सही कहते हो। लड़कियां चाहती हैं कि पुरुष अपने ही साहस से उस मार्ग तक पहुंचें। इसी से उनकी मोहब्बत और लगन का पता चल सकता है। कोई भी खज़ाना इतनी सरलता से हाथ नहीं लगता, और अगर हाथ लग भी जाए तो उस खज़ाने की कदर नहीं होती।"

"प्रेम-मोहब्बत की समस्याओं का गहरा अध्ययन किया है तुमने।"

"यह भी सही कहा। मगर इस विषय पर कोई छपी-छपाई पुस्तक नहीं मिलती। अगर मिल भी जाए तो उसे पढ़कर इन्सान कुछ सीख भी नहीं सकता। इन समस्याओं को समझने के लिए आग के दरिया में से गुज़रना पड़ता है।"

"सुनिए मिस ! अभी तो हमारी शुरूआत है। तुमने अभी से आग के दरिया की झलक दिखला दी तो सच्चे-से-सच्चे प्रेमी की लगन भी हवा हो जाएगी।"

"हो जाए।"

"क्यों ?"

"इससे मेरा क्या बिगड़ता है।"

"ऐसी मतलबी मत बनो। माना तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता, लेकिन यह तो सोचो कि तुम्हारे प्रेमी का क्या संवरेगा।"

"कौन प्रेमी ?"

गीता के इन शब्दों पर एकदम ही किशोर चौंक पड़ा। मानो वह समझ नहीं पाया कि क्या कहे। विवश होकर बोला, "तुम्हारे इस प्रश्न का भी जवाब नहीं।"

"चलो, अभी तक कम-से-कम तुम्हारी एक बात तो भली लगी।"

"सच ? अरे मैं तो खुशी के मारे मर जाऊंगा। क्या बात भली लगी मेरी ?"

"हार मान जाने की आदत।"

"यानि ?"

"जब तुम्हें कोई उत्तर नहीं सूझता तो साफ कह देते हो कि इसका जवाब नहीं है।"

किशोर कहकहा लगाए बिना नहीं रह सका।

आखिर स्कूटर गोमती नदी के किनारे पहुंचकर रुक गया। नीचे उतरकर गीता ने नाक चढ़ाई और बोली, "इसे तुम गोमती कहते हो? इसी का नाम लेकर मुझ पर रोब जमा रहे थे?"

"गीता, यह नदी, यह नाव, तुम्हारे लिए कुछ भी नया नहीं है। यह सब तुम्हारा देखा-भाला है..."

बात काटकर और मुस्कराकर गीता ने आपत्ति उठाई, "तुम मुझे यहां लाए क्यों?"

"क्योंकि एक तो नई चीज है आज?"

"वह क्या?"

"हम दोनों का साथ।"

गीता ने एक भरपूर नजर किशोर पर डाली और बोल उठी, "अब तो मैं भी यह कहने पर विवश हो गई हूं कि इस बात का जवाब नहीं।"

इन दोनों को देखकर हीरा मल्लाह लपकता हुआ उनके निकट पहुंचा और किशोर से पूछा, 'सरकार, नदी की सैर करेंगे?"

"हां, भई, इतनी दूर से यहां झक मारने तो नहीं आए।"

हीरा ने एक छिपी-सी नजर गीता पर डाली और किशोर से कहने लगा, "मालिक, संजोग की बात है। आपसे पहले कुछ और लोग भी आए, मगर सौदा पटा नहीं। आप तो जानते ही हैं, मेरी नाव असपेशल है और इसमें असपेशल लोगों को सैर कराना पसन्द करता हूं।"

किशोर ने शरारत से एक नजर गीता पर डाली और बोला, "हीरा मैं तो असपेशल नहीं हूं, लेकिन यह जो मेरे साथ हैं न, यह बहुत असपेशल हैं। मजा तब है कि तुम अपनी असपेशल नाव में इन्हें बिठाकर असपेशल ढंग से चप्पू चलाते हुए इन्हें असपेशल सैर कराओ। पुरानी कहावत सुनी है न कि जितना गुड़, उतना मीठा। जैसी सैर कराओगे, वैसा ही इनाम पाओगे।"

"साहब, इनाम तब लूंगा, जब आप खुद कह देंगे कि हां यह सैर असपेशल थी।"

"मैं नहीं, यह कह दें तो इनाम मिलेगा।"

गोमती की सैर लगभग आध घन्टे तक होती रही। हीरा ने नाव अच्छी तरह सजा रखी थी। बैठने के लिए मोटा गद्दा, उसके ऊपर उजली

चादर, पीठ टेकने के लिए बड़े-बड़े गाव-तकिए। गीता फुसफुसाकर बोली, "मिस्टर अब यहां से चलना चाहिए।"

"मज़ा नहीं आया?"

"आया, लेकिन अब इससे ज़्यादा नहीं चाहिए।"

किशोर ने घड़ी पर नज़र डालते हुए कहा, "सोचा था कि चांदनी रात में दूर तक निकल जाएंगे। फिर साढ़े दस-ग्यारह बजे तक लौटेंगे..."

"अगर ऐसा प्रोग्राम बनाया तो गीता के घर पर गीता की लाश पहुंचानी पड़ेगी।"

"बाप रे! मैं यह खतरा मोल लेने को तैयार नहीं हूं।"

"तो वापस चलो।"

किशोर ने हीरा को वापस चलने के लिए कहा तो उस बेचारे का चेहरा उतर गया। गीता की ओर देखते हुए बोला, "बिटिया, अच्छा नहीं लगा क्या?"

गीता चहककर बोली, "नहीं हीरा, बहुत अच्छा लगा। दरअसल आज समय कम था। हमें और जगह भी जाना है। अब फिर किसी रोज़ आएंगे और खूब लम्बी सैर करेंगे।"

गीता की इस बात पर भी हीरा के चेहरे की उदासी दूर नहीं हुई। उसे परेशानी इस बात की थी कि उसे अच्छी बख्शीश नहीं मिल सकेगी।"

नाव किनारे लगी। वे उतरे। किशोर ने भरपूर बख्शीश दी। इसके बाद गीता ने अपने पर्स में से पांच रुपए का कड़कड़ाता नोट हीरा की ओर बढ़ा दिया। इस पर हीरा सचमुच गद्‌गद् हो उठा। अब उसे विश्वास हुआ कि सचमुच समय की कमी के कारण वे नहीं रुक सके, अन्यथा उन्हें इतना मज़ा आ रहा था कि वे निश्चय ही और दो घन्टे सैर करते।

स्कूटर के निकट पहुंचकर किशोर ने पूछा, "अब कहां चलने का इरादा है?"

"अरे भई! हजरतगंज के किसी अच्छे से रेस्टोरेण्ट में बैठकर मज़ेदार स्नैक्स खाए जाएं, गप हांकी जाए, लोगों का हल्ला-गुल्ला सुना जाए तो मज़ा भी आए।"

"चलो, वहीं चलते हैं।"

हजरतगंज की आलीशान इमारतों में से चौड़ी सड़क पर चलते-चलते स्कूटर एक रेस्टोरेण्ट के आगे रुक गया। आकाश में चांद चमक रहा था

कुछ समय और बीत गया। फिर रेस्टोरेण्ट की दीवार पर लटके क्लॉक की ओर देखते हुए गीता बोली, "अब डिनर का समय हो गया है। हमें फौरन वापस चलना चाहिए।"

बंगले के सामने पहुंचकर वे स्कूटर से उतरे। भीतर जाने से पहले किशोर ने गीता का हाथ थामकर कहा, "आगे का प्रोग्राम भीतर जाने से पहले-पहले तय कर लो।"

गीता ने हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा, "प्रोग्राम तय कर लेते हैं, लेकिन हाथ तो छोड़ो। यहां ऐसी बेतकल्लुफी करना ठीक नहीं है। किसी ने देख लिया तो ?"

उनके हाथ एक-दूसरे से उलझे हुए थे कि इतने में दूर से अंजू ने दरवाज़ा खोलकर उनकी ओर देखा और पुकार कर बोली, "किशोर! बाहर के बाहर ही न लौट जाना। मैं यहां आई हूं। तुम्हारे साथ ही घर को लौटूंगी।"

इतना कहकर वह फिर भीतर गायब हो गई। गीता हाथ छुड़ाकर बोली, "अंजू ने देख लिया न!"

"वह क्या देखेगी। जो उसकी आदत, सो मेरी आदत।"

थोड़े झगड़े के बाद आगे का प्रोग्राम तय हो गया और वे दोनों भीतर चले गए। उन्हें देखते ही अंजू ने ममता से कहा, "अब आप लोग खाना खाइए, हम लोग चलते हैं।"

ममता ने कहा भी कि वे उन्हीं के यहां खाना खाकर जायें मगर वे नहीं रुके।

जब भाई-बहन वापस जा रहे थे तो अंजू ने कहा, "किशोर! तुम बहुत फास्ट जा रहे हो।"

"फास्ट ? क्या मतलब ?"

"नहीं समझे। मेरा मतलब यह था कि गीता से तुम आवश्यकता से अधिक बेतकल्लुफ हो गए हो।"

"हम दोनों की बेतकल्लुफी तुम्हें पसन्द नहीं है क्या ?"

"मुझे बेतकल्लुफी पर कोई आपत्ति नहीं है, मगर ऐसे मामलों में ज़ल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए।"

"तुम किस कारण कह रही हो कि मैं जल्दबाज़ी से काम ले रहा हूं।"

"कोई गलत हरकत नहीं होनी चाहिए। हम लोगों के सम्बन्ध तुम

अच्छी तरह जानते हो। इसके साथ ही मैं इस बात पर भी बल दूंगी कि तुम उसके खुले स्वभाव और बेतकल्लुफी से कोई गलत नतीजा भी न निकालना।"

"और यदि निकल गया तो?"

"तो फिर हर बात ही गलत होती चली जाएगी। मैंने अक्सर देखा है कि गलत नतीजे निकालने के कारण लड़के बाद में मजनू बन जाते हैं।"

लगभग साढ़े पांच महीने गुजर गए।

गीता लौटकर बम्बई नहीं गई। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि किशोर से उसकी काफी गाढ़ी छनने लगी थी दूसरे, यह कि बम्बई से उसकी सखियों ने जो समाचार भेजे उनसे उसे विश्वास हो गया कि सुनील के मन में खोट है। लड़कियों को वह खूबसूरत खिलौने से अधिक महत्व नहीं देता। वह पूरा 'बिजनेसमैन' था। केवल मोहब्बत की खातिर किसी भी ऐरी-गैरी और आर्थिक दृष्टि से कमजोर लड़की से शादी करने की बात वह सोच भी नहीं सकता था। हां, झांसे देकर किसी भी लड़की की इज्जत लूट सकता था।

कमलजीत दिल्ली से दीपा की जानकारी प्राप्त करने में लगा रहा। उसका अभी तक कुछ पता नहीं था। साढ़े पांच-छः महीने बीत जाने के बाद अब सन्देह की कुछ भी गुंजाइश नहीं रह गई थी कि उसने सचमुच ही आत्महत्या कर ली थी। जब भी घरवालों ने कमलजीत को समझाना चाहा कि जो होना था सो हो चुका और अब वह किसी दूसरी लड़की से शादी कर ले, तो वह यही कहता कि अब किसी अन्य लड़की से शादी करने की बात वह सोच भी नहीं सकता था। घर वाले महज इस विचार से चुप रह जाते कि धीरे-धीरे समय बीतने पर उसके दिल का यह जख्म भर जाएगा और वह शादी के लिए तैयार हो जाएगा।

किशोर और गीता के सम्बन्ध पहली मुलाकात के बाद से ही दिन-पर-दिन गहरे होते जा रहे थे। ममता यह देखती तो उसके मन में एक चुभन-सी महसूस होती। यह ठीक था कि न कभी किशोर ने ममता से मोहब्बत जतलाई और न कभी ममता ने यह महसूस किया कि वह उससे मोहब्बत

करती थी। मगर जब गीता से उसके सम्बन्ध गहरे होने लगे तब ममता ने यह महसूस किया जैसे उसकी छोटी बहन उसी के हक पर डाका डाल रही हो। फिर जब वह गम्भीरता से इस विषय पर सोच-विचार करती तो उसे महसूस होता कि गीता या किशोर को दोष देना उचित नहीं था। इसके साथ ही उसे यह विश्वास भी था कि अगर गीता न आ धमकती तो धीरे-धीरे किशोर निश्चय ही उसका बन जाता और वे शादी कर लेते। ऐसे ही मौकों पर ममता को अपने भाई की बम्बई में कही हुई वह बात याद आ जाती।

...वह सब सोचती तो बस झुंझलाकर रह जाती। इसके साथ ही उसके मन में अपनी छोटी बहन के प्रति उदारता की बड़ी तीव्र भावना थी। मन-ही-मन वह कहती कि बड़ी बहन मां बराबर होती है इसलिए अगर गीता के जीवन में सुनील की ठोकर खाने के बाद खुशी और आशा का उजाला फैलने लगा है तो उसे इस बात का स्वागत करना चाहिए...

उसके विचारों का सिलसिला यहां तक पहुंचता तो एक ओर उसे गहरा सन्तोष होता कि अपनी छोटी बहन के प्रति वह अपना कर्त्तव्य निभाने की पूरी-पूरी कोशिश कर रही है, और दूसरी तरफ उसे अपने जीवन के सूनेपन का गहरा अहसास होने लगता। सबसे बड़े भैया थे जिनका मामला दुर्भाग्य से खटाई में पड़ गया और उनके हृदय पर गहरा घाव छोड़ गया। दूसरे नम्बर पर खुद थी जिसके रिश्ते का अभी कुछ पता ही नहीं चल रहा था। बेशक गीता और किशोर रोमान्स के दौर से गुजर रहे थे, लेकिन इसका अन्त क्या होगा। इसके विषय में अभी से कुछ नहीं कहा जा सकता था।

एक रोज़ दोपहर के समय ममता घर के छोटे से दालान में बैठी अपनी साड़ी पर बार्डर टांक रही थी कि इतने में उसे दरवाज़े के बाहर एक स्कूटर रुकने की आवाज सुनाई दी। शायद कोई मिलने वाला उन्हीं के घर आ रहा था।

माताजी के सिवा उस समय घर में कोई नहीं था। माताजी भी अपनी आदत के अनुसार दिन के खाने के बाद भीतरी कमरे में सोई पड़ी थीं और कम-से-कम डेढ़ घण्टे तक उनके उठने की कोई सम्भावना नहीं थी। उन्होंने मना कर रखा था कि उन्हें दोपहर को सोते समय हरगिज़ न जगाया जाए। कुल मिलाकर दिन में दो-ढाई घण्टे तक सोए रहने से उनका स्वास्थ्य अच्छा

रहता था, वरना बीमार पड़ जाती थी।

ममता को बंगले के बरामदे में कदमों की आवाज सुनाई दी। वह सेहन पार करके गलियारे में से गुजरती हुई बरामदे में पहुंच गई। उसी समय बिजली की घंटी भी बजी। ममता ने देखा कि पुरी साहब घंटी के बटन पर उंगली रखे हुए हैं। उनके साथ उनकी बेटी रेखा भी थी।

ममता ने मुस्कराकर उनका स्वागत किया। पुरी साहब ने पूछा, "बड़ा सन्नाटा दिखाई देता है। घर में आपके सिवा और कोई नहीं है क्या ?"

"केवल माताजी हैं। आप तो जानते ही हैं कि दिन के भोजन के बाद वह जरा डटकर सोती हैं—चले आइए !"

ममता ने रेखा को बांहों में लेकर प्यार किया और फिर वे तीनों सेहन में जा पहुंचे।

दो-चार इधर-उधर की बातें हुई। रेखा ने बच्चों की आदतानुसार उछलना-कूदना और कुछ शोर मचाना शुरू कर दिया। पुरी साहब बोले, "रेखा, तुम माताजी की नींद खराब करोगी।"

ममता भी कुछ विवश-सी दिखाई दे रही थी।

पुरी साहब को कुछ सूझा तो बोले, "भीतर बैठने को भी जी नहीं चाहता। बादल घिरे हुए हैं और उमस भी महसूस हो रही है। क्यों न छत पर चलें। वहां खुली हवा होगी। वैसे भी मुझे छत का मुआयना करना है। क्योंकि मैं सोच रहा हू कि ऊपर की भी मंजिल बनवा दी जाए।"

"चलिए।"

वास्तव में बंगला वही होता है जिसकी छत को जीना नही जाता और न आम तौर पर उसकी छत का प्रयोग किया जाता है। मगर पुरी साहब ने कुछ ऐसी तिकड़म लड़ाई थी कि वह बंगले का बंगला था और मकान का मकान। या यू कह सकते हैं कि वह बंगलानुमा मकान था। उन्होंने पहले से ही छत तक जीना बनवा दिया था। ऊपर एक विशाल बरसाती भी थी। उनके मन में यह बात थी कि अगर कहीं से कोई बड़ी रकम हाथ लग गई तो वह ऊपर की मंजिल बनवा देंगे। पिछले कुछ वर्षों से वह बीमा कम्पनी के एजेन्ट का काम कर रहे थे। इसमें उन्हें काफी सफलता भी प्राप्त हुई थी।

छत पर पहुंचे तो वहां सचमुच हवा के हल्के झोंकों का अहसास होने

लगा। ज्यों-ज्यों बादल गहरे होते जा रहे थे, त्यों-त्यों हवा में ठंडक भी बढ़ती जा रही थी।

कुछ देर तक पुरी साहब ममता को समझाते रहे कि छत पर कहां-कहां कमरा बनेगा, किस-किस तरफ खिड़कियां होंगी, किधर को बालकनी बनाई जाएगी। इसी दौरान बादल गहरे होते चले गए। कुछ गरज और चमक भी इसमें शामिल हो गई।

एकाएक ही मोटी-मोटी बूंदें धड़ाधड़ छत पर टकराने लगीं। वे बरसाती के निकट थे, इसलिए दौड़कर उसके नीचे चले गए। बादल की गरज और बिजली की चमक के साथ-साथ धुआंधार बारिश होने लगी। वे एक तरह से बरसाती के नीचे फंसकर रह गए, क्योंकि ज़ीना काफी दूरी पर था। ऐसी तेज़ बारिश में ज़ीने तक पहुंचते-पहुंचते वे सिर से पांव तक भीग जाते। खुद ममता तो दूसरे कपड़े पहन सकती थी, परन्तु पुरी साहब और रेखा के लिए कपड़ों का प्रबन्ध नहीं हो सकता था। इसीलिए ममता चुप रह गई।

इधर-उधर की बेतुकी बातें होती रहीं। कोई खास विषय तो था नहीं।

खड़े-खड़े थकान सी महसूस होने लगी तो पुरी साहब ने बरसाती में दीवार के साथ खड़ी दो चारपाइयां बिछा दीं। एक पर वह बैठ गए, और दूसरी पर ममता। दोनों चारपाइयों में लगभग बारह-तेरह फुट का फासला था। रेखा दोनों चारपाइयों के बीच में कूदती फिर रही थी।

एक-दो बार ममता ने देखा कि पुरी साहब की उसकी ओर टकटकी-सी बंधी हुई है। वह मुंह फेरकर छत पर गिरती बूंदों को देखने लगी। तो भी उसके मन से यह अहसास नहीं गया कि पुरी साहब उसकी ओर देखे जा रहे हैं। ममता मन-ही-मन में बेचैनी-सी महसूस करने लगी। इतने में रेखा ने हाथ फैलाकर बरसाती की छत के बाहर निकाल दिया और अपने हाथ पर बूंदें गिरती देखकर हंसने लगी। उसे इस तरह खिलखिला कर हंसते हुए देखकर ममता ने एक उचटती नज़र पुरी साहब पर डाली और धीरे से बोली, "कितनी प्यारी बच्ची है।"

यह देखकर कि उस समय पुरी साहब की नज़र उसकी ओर नहीं थी, ममता को कुछ इतमीनान हुआ, लेकिन पुरी साहब का उत्तर सुनकर उसका हृदय ज़ोर से धड़क उठा। पुरी साहब के शब्द थे, "हां, लेकिन अगर इसे ऐसी ही प्यारी मां मिल जाए तो कितना अच्छा हो!"

ममता तेज दिमाग की लड़की थी। बहुत पहले ही, विशेष कर जब पुरी साहब ने उन्हें बंगला सौंपा, ममता को कुछ आभास होने लगा कि पुरी साहब किसी खास उद्देश्य से ही यह सब कर रहे हैं। पुरी साहब देखने में, व्यवहार में, आपसी बातचीत में ऐसे व्यक्ति नहीं लगते थे कि जिन्हें घटिया कहा जा सकता। फिर भी एक ऐसा व्यक्ति जो विधुर हो और पहली पत्नी से उसकी सन्तान भी हो, वह किसी कुंवारी लड़की की आंखों में जल्दी से नहीं समा सकता। चाहे किसी पुरुष ने दो स्त्रियों को तलाक भी दे दिया हो, लेकिन विधुर न हो तो उसे 'बैचलर' अर्थात् कुंवारा ही समझा जाता है। पूरे समाज के ये अनुभव लगभग हर व्यक्ति की सोच-विचार की धारा का अंग बन गए हैं।

पुरी साहब के शब्द वातावरण में गूंजते रहे। ममता के चेहरे से किसी भी प्रतिक्रिया का आभास पुरी साहब को नहीं हो पाया। बल्कि उन्हें लगा कि उसका चेहरा कुछ ज्यादा कठोर या अधिक गम्भीर हो गया था।

पुरी साहब को लगा कि उन्हें यह बात नहीं कहनी चाहिए थी। यद्यपि उन्होंने सीधे ममता से प्रेम नहीं जतलाया था, लेकिन उनका संकेत तो इतना स्पष्ट निश्चय ही था जिसे ममता जैसी बुद्धिमती लड़की सरलता से समझ सकती थी। वह कल्पना में भी ममता के हृदय को दुःख नहीं पहुंचाना चाहते थे। मगर इस रोमांटिक वातावरण में उनके मुंह से हृदय में दबी बात निकल ही आई। नतीजा यह हुआ कि न तो ममता कुछ बोली और न पुरी साहब को ही कुछ कहने का साहस हो पाया। वे चुपचाप बारिश के समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ देर बाद ममता बोली, "अब तो बारिश का ज़ोर कम होने लगा है।"

"हां।"

पुरी साहब यह भी कहना चाहते थे कि बारिश इतनी कम नहीं हुई कि वे बरसाती से निकलकर ज़ीने के दरवाज़े तक बिना भीगे पहुंच सकें। मगर वह यह सोचकर चुप रहे कि कहीं ममता इसका कोई दूसरा ही अर्थ न निकाल ले।

यह भी गनीमत थी कि रेखा वहां उपस्थित थी। उसे इस बात का अहसास ही नहीं हो पाया कि उसके दोनों बड़े साथियों के मन की क्या दशा हो रही है। वह बचकाना अंदाज से इधर-उधर की बातें किए जा रही

थी। कभी वह हंसती, कभी नाचती और कभी शरारतें करने लगती।

आखिर बारिश ने फुहार का रूप धारण कर लिया। ममता चारपाई से उठ खड़ी हुई। यह महसूस करके कि अब उन्हें नीचे जाना है, रेखा एकदम ज़ीने की ओर दौड़ पड़ी। दरअसल वह बरसाती में खेलते-खेलते ऊब गई थी।

ममता और पुरी साहब भी ज़ीने की ओर चल दिए। रेखा तो छलांगें लगाती ज़ीने से उतरकर नीचे पहुंच गई, मगर ज़ीने के दरवाज़े में घुसते ही पुरी साहब लपककर बढ़े और ममता के आगे जा खड़े हुए कि कहीं वह जल्दी से नीचे न उतर जाए।

यह देखकर ममता का हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। उसके हृदय में भय उत्पन्न हुआ कि कहीं पुरी साहब कोई और हरकत तो नहीं करने वाले। मगर पुरी साहब ने उसे सोचने का अधिक मौका नहीं दिया, वह धीरे से बोले, "ममता। आई एम वेरी सॉरी। तुम मुझे गलत मत समझना। वर्षों के अकेलेपन ने मेरे जीवन में एक खोखलापन पैदा कर दिया है। इस खोखलेपन और शून्य के अहसास को काफी अर्से तक मैंने दबाए रखा। अब मुझे महसूस होने लगा कि कुछ वर्षों के बाद जब रेखा पराए घर चली जाएगी तो मेरा क्या बनेगा। यह मैं मानता हूं कि अपने इस निजी कारण को लेकर मुझे इस बात का अधिकार प्राप्त नहीं हो जाता कि मैं तुमसे कोई ऐसी-वैसी बात कहूं। मैंने तो अपने मुंह से निकले इन शब्दों की पृष्ठभूमि बताने की कोशिश की है। इसे सम्मुख रखते हुए तुम चाहो तो मुझे सच्चे दिल से माफ कर सकती हो—बस मुझे इतना ही कहना है। इस समय तुमसे यह भी नहीं पूछूंगा कि तुमने मुझे माफ किया या नहीं। बस इस बात की आशा रखूंगा कि तुम मेरे इन शब्दों को भुला दोगी और हमारे सम्बन्ध पहले की भांति ज्यों-के-त्यों बने रहेंगे।"

पुरी साहब की विवशता को महसूस कर तथा उन्हें सच्चे दिल से लज्जित होते देखकर एक बार तो ममता का दिल भी भर आया।

पुरी साहब उसके रास्ते से हट गए, और वह जल्दी-जल्दी नीचे उतर गई।

इस घटना के दस-ग्यारह दिन बाद कमलजीत के घर मे कुछ हलचल-सी मच गई, कारण यह कि गीता घर में नहीं थी। उसके बिस्तर को देखने से पता चलता था कि रात वह उस पर सोई थी। परन्तु सुबह किस वक्त वह बाहर निकल गई, इसका किसी को कुछ ज्ञान नही था। आखिर घर वालों ने सोचा कि सम्भवत: उसने किशोर के साथ आज प्रात.काल ही कहीं जाने का प्रोग्राम बनाया हो। घर वालों से कुछ कहने-सुनने का मौका नहीं मिला तो वह चुपचाप ही चल दी। ममता बोली, "यह भी हो सकता है कि वह जल्द ही लौट आने वाली हो। इसलिए उसने घर वालों से कुछ कहने की विशेष आवश्यकता ही नही समझी हो।"

कमलजीत बोला, "आवश्यकता तो है, लेकिन उसके स्वभाव में बचपना बहुत है। उसे समझाना पड़ेगा कि इस तरह चुपचाप घर से चल देना ठीक नही होता।"

यह सोचकर साढ़े नौ तक उन्होंने नाश्ते के समय गीता के आने की प्रतीक्षा की। वह नही आई तो घर वालों ने नाश्ता कर लिया। तब कमलजीत पता लगाने के लिए अंजू के घर चला गया। अंजू अपने मकान में ही थी। जब कमलजीत ने उसे गीता के बारे में बताया तो उसे भी आश्चर्य हुआ, बोली, "मुझसे तो गीता या किशोर ने इस सिलसिले मे कुछ कहा ही नहीं।"

"इस समय किशोर कहां है ?"

"वह घर में नही है। मगर गीता तो प्रात.काल से गायब है न! किशोर लगभग पौन घंटा पहले घर से बाहर निकला था।"

"यह भी अजीब बात है। इसका मतलब तो यह है कि आज प्रातः-काल गीता और किशोर का कोई प्रोग्राम नही था।"

"लेकिन यह भी तो सम्भव है कि गीता ने किशोर को ही इस विषय में कुछ बता रखा हो।"

"हां, सम्भव तो है। अच्छा! अब मैं वापस जाता हू। जब किशोर लौटे तो उससे इस विषय मे पूछताछ कर लेना।"

"अवश्य।"

इतनी बातचीत के बाद कमलजीत तो अपने बंगले को लौट आया। अभी तक गीता का कुछ पता नही था।

भोजन के काफी बाद ढाई बजे के करीब किशोर का स्कूटर उनके

बंगले के सामने आकर रुका। उसने भीतर पहुंचते ही वताया कि गीता ने इस विषय में उससे कुछ नहीं कहा था। वह स्वयं हैरान था कि गीता कहां चली गई। उसे मन में शिकायत थी कि गीता को कम-से-कम उससे तो वात नहीं छिपानी चाहिए थी।

थोड़ी देर वैठने के वाद किशोर वापस लौट गया। डेढ़ घंटा और गुज़र गया। इतने में माताजी तह किया हुआ एक रुक्का लेकर वाहर आईं और उसे ममता की ओर वढ़ाते हुए वोलीं, "यह रुक्का कैसा है ?"

ममता ने उसे खोलकर देखा तो उसकी आंखें फैल गईं। उसने मां से पूछा, "आपको यह कहां पर मिला ?"

"गीता के पलंग के नीचे पड़ा हुआ था।"

कमलजीत भी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, पूछा, "क्या यह गीता का रुक्का है ?"

"हां।" ममता वोली, "लगता है कि वह यह रुक्का पलंग के सिरहाने के निकट पड़ी तिपाई पर रख गई होगी। फिर हवा के झोंके से यह रुक्का उड़कर पलंग के नीचे चला गया और अव तक हमारी आंखों से ओझल रहा। लो भैया ! यह रुक्का आपके ही नाम है।"

कमलजीत ने जल्दी से रुक्का लेकर पढ़ना आरम्भ किया। लिखा था :

भैया,

आपको मेरे इस तरह अचानक गायव हो जाने पर आश्चर्य तो निश्चय ही होगा। परन्तु मैं भी विवश थी। मुझे कुछ कहे-सुने विना ही घर छोड़ना पड़ा।

वास्तविकता यह है कि कुछ लोग जन्म से ही अभागे होते हैं। मैं भी उन्हीं में से एक हूं। वम्बई में सुनील के हाथों धोखा खाया। लखनऊ पहुंचकर मुझे महसूस हुआ कि सभी युवक सुनील जैसे नहीं होते। किशोर अपने चंचल स्वभाव के वावजूद मन का सच्चा है। इसी विश्वास के कारण मैं उसके इतना निकट पहुंच गई कि जहां से वापस लौटना लगभग असम्भव था। मगर परसों संध्या के समय आपकी और दीदी की वातें इत्तफाक से मेरे कानों में पड़ गईं। दीदी आपसे कह रही थी कि वम्वई में आपने जो कहा था कि गीता का लखनऊ में सदा के लिए रहना उसके हित के विपरीत होगा, वह वात सच ही निकली। फिर आपकी वातों से मुझे पता चल गया

कि कैसे दीदी और किशोर का एक-दूसरे से प्रेम बढ़ता जा रहा था कि इस बीच मैं आ धमकी। परिणाम यह हुआ कि मैंने अपनी बहन का सुख छीन लिया। यदि मुझे पहले से ही इस बात का जरा भी आभास होता तो मैं हरगिज अपनी दीदी की तमन्नाओं को आग नहीं लगाती। अब, यह सब कुछ जान लेने के बाद मैं मानो पागल-सी हो उठी।

कल सारा दिन मैं इसी समस्या पर सोच-विचार करती रही। अन्त में मैंने यही निर्णय किया कि मेरा यहां से हट जाना ही अच्छा है।

दो बातें और भी याद रखिए। पहली यह कि मैं आत्महत्या करने नहीं जा रही हूं। अगर मैं आत्महत्या कर लूंगी तो मेरी दीदी की आत्मा जिन्दगी भर और मरने के बाद भी दुखी रहेगी। अत. इस विषय में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। दूसरी बात यह कि मैं सदा के लिए नहीं जा रही हूं। मैं किसी-न-किसी दिन आप सबके पास लौट आऊंगी। लेकिन लौटूंगी उस समय जब दीदी की शादी हो जाएगी।

आप मेरा पीछा करने की कोशिश भी न करें, क्योंकि आप मुझे नहीं ढूंढ पाएंगे! शायद पुलिस मुझे ढूंढ निकाले। मगर आप थाने में रिपोर्ट हरगिज न कीजिएगा। इससे घर की बदनामी होगी और मेरे विषय में गलत अफवाहें उड़ेंगी। रिपोर्ट करने की आवश्यकता भी क्या है? जब भगवान ने चाहा मैं आपसे आ मिलूंगी। अच्छा! अब, मैं विदा होती हूं। मेरा कहा-सुना माफ करें। सबको सादर नमस्कार।

आपकी – गीता।

एक बार तो कमलजीत ने यह पत्र स्वयं पढ़ा और फिर पढ़कर दूसरों को सुनाया। कुछ देर मौन छाया रहा। आखिर कमलजीत बोला, "आज-कल लड़कियां कितनी भावुक हो गई हैं। गीता को चाहिए था कि पहले वह घर वालों से बातचीत करती। या कम-से-कम मेरे सामने अपनी समस्या रखती। यदि वह ऐसा करती तो इस प्रकार का कदम उठाने की आवश्यकता ही महसूस न होती।"

गीता गाड़ी में बैठी पल-पर-पल घर से दूर होती जा रही थी। बिना सोचे-समझे पहले उसने पटना का टिकट लिया। पटना पहुंचकर उसने अकारण ही सिवान का टिकट ले लिया।

सिवान कैसी जगह है ? वहां वह क्या करेगी ? वह वहां क्यों जा रही है ?—इन सब प्रश्नों पर उसने विचार नहीं किया। वह तो केवल दूर, घर से बहुत दूर चली जाना चाहती थी।

जब गाड़ी सिवान के छोटे-से स्टेशन पर पहुंची तो सूर्य क्षितिज से थोड़ा ही ऊपर रह गया था। कुली ने उसका छोटा-सा बिस्तर और छोटा-सा ही सूटकेस उठाकर उसे स्टेशन के बाहर पहुंचा दिया। कुली से ही उसे पता चला कि सिवान मामूली-सा कस्बा है, स्टेशन से काफी दूरी पर है।

लिपटे हुए बिस्तर पर बैठकर वह इधर-उधर नज़र दौड़ाने लगी। दो-तीन रिक्शा वालों ने आकर पूछा कि क्या आपको रिक्शा चाहिए तो गीता ने इन्कार कर दिया। वह किसी-न-किसी होटल में जाकर ठहर सकती थी। भला सिवान जैसे कस्बे में होटल भी कहां होगा। इसी डर के मारे उसने किसी से होटल के विषय में पूछा नहीं। इस समस्या का दूसरा पक्ष यह था कि होटल हो या सराय, किसी भी अकेली लड़की का वहां जाकर टिकना खतरे से खाली नहीं था। उसकी घबराहट बढ़ती जा रही थी। वह रात-भर जहां-की-तहां भी नहीं बैठी रह सकती थी। केवल इस भय से कि यदि घर वालों ने पुलिस में रिपोर्ट कर दी तो बड़े शहर के होटल में उसका पता लगाना कठिन नहीं होगा, वह सिवान जैसी जगह आ पहुंची। मगर ऐसी जगह जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, इनके विषय में उसने ठीक से सोचा ही नहीं था।

एक हसीन नवयुवती दस-पन्द्रह मिनट से बिल्कुल अकेली बैठी थी, धीरे-धीरे आने-जाने वालों की नज़रें उस पर पड़ने लगीं। किसी भी बड़े स्टेशन पर ऐसी समस्या उत्पन्न न होती। धीरे-धीरे उसका दिल बैठने लगा। इतने में ही उसे एक हसीन नवयुवती ज़रा दूरी से गुज़रती दिखाई दी। उस पर नज़र पड़ते ही गीता बिना कुछ सोचे-समझे उसकी ओर लपकी और आवाज़ देकर बोली, "बहन जी ! ज़रा रुकिए।"

वह नौजवान लड़की रुक गई। गीता ने उसके पास पहुंचकर हांपते हुए कहा, "बहनजी ! कारणवश आज की रात मुझे सिवान में ही काटनी पड़ेगी। यहां पर मेरा कोई परिचित नहीं है। क्या इस सिलसिले में आप मेरी कोई सहायता कर सकेंगी ?"

उस लड़की ने गीता पर सिर से पांव तक नज़र डाली। उसके मन में भी कई प्रश्न उठे। वह एक अपरिचित लड़की को घर ले जाए या न ले

जाए, तथा वास्तव में वह लड़की थी कौन। परन्तु वहां खड़े-खड़े यह सारी छानबीन करना संभव नहीं था। गीता की यह हालत थी कि आखों में आंसू डबडबा आए थे। उस लड़की को शायद इस पर दया आ गई, बोली, "अगर आपकी समस्या केवल इतनी ही है कि आप एक रात काटना चाहती हैं तो मैं निश्चय ही आपकी सहायता कर सकती हूं···"

कुछ और आगे कहते-कहते अनायास ही वह लड़की खामोश हो गई। गीता ने झट से उसका हाथ अपने दोनों हाथों में लेते हुए कहा, "आप विश्वास कीजिए कि मैं कोई ऐसी-वैसी लड़की नहीं हूं और मेरी वजह से आप किसी मुसीबत में हरगिज नहीं फंसेंगी।"

गीता की यह बात सुनकर उस लड़की को थोड़ा इतमीनान हुआ। उसने एक रिक्शा वाले को इशारे से बुलाया। सामान रिक्शे पर रखवाकर वे दोनों भी बैठ गईं। रिक्शा चल दिया तो गीता ने इस ख्याल से कि रिक्शा वाला उनकी बातें न समझ पाए उस लड़की से अंग्रेजी में कहा, "आप गाड़ी से तो नहीं उतरी?"

"नहीं, मैं मिवान में ही रहती हूं। इधर कुछ बच्चों को उनके घर पर पढ़ाने के लिए गई थी।"

"अच्छा हुआ जो भगवान ने आपको भेज दिया, वरना न जाने मेरी क्या दशा होती।"

गीता की बातों से उस लड़की को लगा कि वह निश्चय ही किसी अच्छे घर की पढ़ी-लिखी लड़की थी और इस समय किसी मुसीबत का शिकार हो रही थी। लड़की ने रिक्शा में बैठे-बैठे कुरेद करना उचित नहीं समझा क्योंकि उसे विश्वास था कि घर पहुंचकर यह अजनबी लड़की अपने विषय में सब-कुछ बता देगी। उसने अपना परिचय देते हुए कहा, "मेरा नाम आशा है। मैंने अपने घर पर एक छोटा-सा स्कूल खोल रखा है जहां बच्चों की पढ़ाई भी होती है और लड़कियों को सिलाई और बुनाई का काम सिखाया जाता है। दो धनी घरों में उनके बच्चों को ट्यूशन भी ले रखी है। बस इसी तरह गुजारा होता है। यह छोटा-सा कस्बा है, यहां खर्च भी बहुत कम है।"

इसी प्रकार की बातों में वे मंजिल तक जा पहुंचीं। रिक्शा रुका तो गीता ने देखा कि उसकी मेजबान एक बहुत ही मामूली मकान में रहती थी। वास्तव में उसे मकान कहना भी अनुचित था। भीतर जाकर पता

चल गया कि वह एक क्वार्टर था जिसमें दो कमरे थे। एक कमरा लगभग बारह फुट चौड़ा और तेरह फुट लम्बा था। दूसरा कमरा चौड़ा तो बारह फुट ही था लेकिन लम्बा अट्ठारह फुट था। ये सब बातें आशा ने स्वयं बताईं। क्वार्टर के आगे काफी जगह खाली थी। गीता को यह समझने में देर नहीं लगी कि आशा छोटे कमरे में खुद रहती थी और बड़े कमरे में बच्चों को पढ़ाती थी। बाहर वाली खुली जगह के चारों ओर एक ईंट की ढाई फुट ऊंची दीवार बनी हुई थी। जंग खाया हुआ एक छोटा-सा फाटक था जिसमें से मुश्किल से एक रिक्शा गुज़र सकता था।

आशा ने गीता का सामान छोटे कमरे में रखवा दिया। रिक्शा वाला सामान रखकर और पैसे लेकर बाहर निकल गया। आशा बोली, "पहले चाय बनाती हूं—भूख लगी होगी?"

गीता ने कुछ झेंपकर कहा, "भूख तो बड़े ज़ोर की लगी है।"

"तो ठीक है। अभी हम एक-एक कप चाय के साथ कुछ बिस्कुट खा लेंगे। थोड़ी देर में रामदीन यहां पहुंच जाएगा। वह मेरा चपरासी है। क्वार्टर के पिछली तरफ एक लम्बा-सा बरामदा है। रामदीन अपनी पत्नी लक्ष्मी के साथ बरामदे के एक कोने में रहता है। बरामदे के दूसरे कोने में रसोईघर है। वहीं पर वे दोनों अपने लिए तथा मेरे लिए खाना तैयार करते हैं। हम एक परिवार की तरह रहते हैं। जो मैं खाती हूं, सो वे भी खाते हैं। या दूसरे शब्दों में जो वे खाते हैं, सो मैं भी खा लेती हूं।"

ये बातें करने के साथ-साथ आशा मिट्टी के तेल वाले स्टोव पर चाय भी तैयार करती रही। जब तक पानी उबलता रहा, आशा ने तिपाई पर एक फूलदार मेज़पोश बिछा दिया और उसके ऊपर चाय पीने के लिए स्टील के दो गिलास टिका दिए।

गीता ने एकाएक महसूस किया कि वह खामख्वाह हाथ पर हाथ धरे बैठी थी। वह एकदम उठ खड़ी हुई और बोली, "कुछ काम मुझे भी तो बताइए। आप इतना कुछ कह रही हैं और मैं बेकार बैठी तमाशा देख रही हूं।"

आशा ने बेसब्री से हाथ हिलाते हुए जवाब दिया, "बैठिए-बैठिए! ऐसा कौन-सा भारी काम है।"

वे चाय पीने लगीं तो गीता को थोड़ी असुविधा हुई, क्योंकि गिलास में चाय पीने की उसे आदत नहीं थी। उसने रूमाल से गिलास का निचला

हिस्सा थाम लिया और होंठ बचा-बचाकर तथा फूंक मार-मारकर चाय की चुस्कियां लेने लगी। नमकीन और मीठे बिस्कुटों के दो डिब्बे आशा ने मेज पर रख दिए। वह मुस्कराकर बोली, "कल आपके लिए एक प्याला ले आएंगे।"

गीता उसका मतलब समझकर फिर झेंप गई। धीरे से बोली, "अब मैं यहीं थोड़े ही पड़ी रहूंगी···आप पर बोझ बनकर।"

"यहां नहीं रहेंगी तो जाएंगी कहां?"

गीता ने एकदम सिर उठाकर आशा की ओर देखा, परन्तु वह उसकी ओर पीठ किए खिड़की में से बाहर झांक रही थी। वास्तव में आशा गिलास हाथ में लिए टहल-टहलकर चाय पी रही थी। जब उसने पलटकर अपना चेहरा घुमाया तो गीता ने देखा कि उसके अधरों पर प्यार भरी मुस्कराहट खेल रही थी। वह फिर बोली, "मेरा मतलब है कि जब तक आप सिवान में हैं, तब तक तो आप मेरे यहां ही रहेंगी। रहना ही चाहिए, क्योंकि स्वयं आपने कहा था कि यहां आपका और कोई नहीं है। बोझ बनने की भी आवश्यकता नहीं है। बच्चों को पढ़ाने में आप मेरी सहायता कर सकती हैं। इस प्रकार आपके मन पर यह बोझ नहीं रहेगा कि आप मुफ्त की खा रही हैं।"

एकाएक ही गीता दोनों हाथ चेहरे पर रखकर सिसकियां भरकर रोने लगी। आशा घबराकर उसके पास पहुंची, चाय का गिलास तिपाई पर रखा, और उसकी दोनों कलाइयां थामकर पूछा, "अरे! आप रो क्यों रही हैं? क्या मेरी किसी बात से आपके मन को दुःख हुआ है? यदि ऐसी बात है तो मैं क्षमा चाहती हूं।"

इस पर गीता आशा के गले से लिपट गई और बोली, "नहीं, नहीं, यह तो आभार के आंसू हैं। आभार का ही रोना है—मैं आपको अपने बारे में सब-कुछ सच-सच बता देना चाहती हूं।"

आशा ने प्यार से उसकी पीठ पर थपकी देते हुए कहा, "इतनी जल्दी भी क्या है! इतना मुझे विश्वास है कि आप किसी भले खानदान की शरीफ लड़की हैं। फिलहाल यही काफी है। खाना खाकर जब हम सोने के लिए लौटेंगे तो फिर इस प्रकार की बातें भी होंगी।"

"तो लाइए फिर हम रात के खाने का ही कोई काम करें। कोई सब्जी छीलनी काटनी हो तो वह काम मैं कर दूंगी।"

"बताया न कि यह काम रामदीन और लक्ष्मी कर देते हैं। उन्होंने जो कुछ बनाना है सो बना लिया होगा। थोड़ी देर के लिए किसी रिश्तेदार के घर गए हैं। लौटेंगे तो गर्मा-गर्म रोटियां बना देंगे। वास्तव में मैं खाना बहुत जल्दी खा लेती हूं। क्योंकि यहां मेरे घर में बिजली तो है नहीं। लालटेन है, तेल का लैम्प है। इनसे तो केवल गुजारा ही होता है। लैम्प के प्रकाश में पढ़ने-लिखने का काम करना अपनी आंखों को फोड़ने के बराबर है। जल्दी सो जाती हूं और प्रातःकाल ही उठ जाती हूं। कोशिश करती हूं कि सारा काम दिन में समाप्त हो जाए।"

इतने में बाहर से कुछ खटपट की आवाज सुनाई दी तो आशा ने पुकार-कर पूछा, "रामदीन, तुम हो क्या ?"

"हां मालकिन !"

एक बूढ़ा आदमी दरवाजे में आ खड़ा हुआ। उसने एक नजर गीता पर डाली और पूछा, "रोटी तैयार करें क्या ?"

"हां ! यह मेरी छोटी बहन है। अभी कुछ समय तक यहीं रहेगी। आज इनके लिए भी रोटी बना देना। सब्जी क्या बनी है ?"

"आलू मटर की सब्जी है, अरहर की दाल है खटाई वाली। उबले चावल भी हैं।"

"वाह ! मजा आ जाएगा ! बस तो लक्ष्मी से कहो कि खटाखट रोटियां पका डाले।"

रामदीन गया तो लक्ष्मी गीता को देखने आई और उससे राम-राम भी कही।

गीता को घर का वातावरण बहुत अच्छा लगा। खाना भी मजेदार था। सोने का समय आया तो यह समस्या उठी कि गीता को कहां सुलाया जाए। एक फालतू चारपाई थी, परन्तु उसकी रस्सी गायब थी। नई रस्सी अगले दिन ही आ सकती थी। चुनांचे यही तय हुआ कि दोनों लड़कियां एक साथ ही सो जाएंगी।

जब वे लेटीं तो गीता ने लैम्प के धीमे प्रकाश में एक बार फिर सारे कमरे का जायजा लिया। धीरे-धीरे उसे एहसास होने लगा कि वह कितनी सौभाग्यशालिनी है ! यह सोचकर ही उसका दिल डूबा जा रहा था कि यदि स्टेशन पर आशा न मिलती तो उसकी क्या दशा होती।

गीता बेअख्तियार बोल उठी, "आशा जी, आप मुझसे अधिक बड़ी

नहीं होंगी। शायद एक-दो वर्ष का ही अंतर है, लेकिन क्या मैं आपको दीदी कह सकती हूं?"

आशा ने उसे हल्की-सी थपकी देते हुए कहा—"अंतर तो है ही, चाहे वह दो ही वर्ष का हो। बेशक मुझे दीदी कहो, और इसके अतिरिक्त 'तुम' कहकर मुझसे बात करो। शब्द 'तुम' में जो अपनापन है, वह 'आप' में नहीं है। मैं बड़ी ठहरी, मैं तो 'तुम' बोलूंगी ही।"

गीता पलटकर आशा के गले से लिपट गई और कहने लगी, "दीदी! अभी मुझे तुम्हारे पास आए कुछ ही घण्टे गुजरे हैं। परन्तु ऐसा लगता है जैसे हमारा वर्षों पुराना परिचय है।"

आशा बोली, "यह भी तो सम्भव है कि इस जन्म का नहीं तो पिछले जन्म का मेरा तुम्हारा कोई रिश्ता रहा हो।"

पल दो पल मौन छाया रहा। फिर गीता ने कहना आरम्भ किया, "मैंने अभी तक तुम्हें अपने विषय में कुछ नहीं बताया। मैं यही सोच रही थी कि क्या बताऊं, क्या न बताऊं। परन्तु अब मैंने निश्चय कर लिया है कि तुम्हें सब-कुछ सच-सच बता दूंगी। मेरा नाम गीता है, मेरा जन्म लखनऊ में हुआ, और वहीं मैं पढ़ती रही। बी० ए० कर चुकी तो बम्बई की एक फर्म में मुझे नौकरी मिल गई। अपने बड़े भाई कमलजीत की आज्ञा और आशीर्वाद से मैं बम्बई चली गई..."

इस तरह गीता ने सुनील से अपने सम्बन्ध से आरम्भ कर अपने भाग निकलने की पूरी कथा कह सुनाई। अन्त में बोली, "जैसा कि मैंने बताया, ऐसा लगता है जैसे हम सब भाई-बहनों पर किसी का श्राप है। भैया को जिससे प्रेम था उसने आत्महत्या कर ली। मुझे सुनील से लगाव हुआ तो निराशा का मुंह देखना पड़ा। लखनऊ पहुंचकर जिसे मैंने अपनाना चाहा उसमें बड़ी बहन की हानि पहुंचती थी। दूसरे शब्दों में मेरी बड़ी बहन भी निराशा का शिकार हो गई। इसे श्राप नहीं कहेंगे तो और क्या कहेंगे। मैं उस समय तक घर नहीं लौटूंगी जब तक कि बड़ी बहन की शादी न हो जाए। भगवान जाने मुझे कितने अर्से तक घर से बाहर रहना पड़ेगा।"

आशा ने उसके गाल पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "चिन्ता मत करो ! जिस तरह रात खत्म हो जाती है और सूर्य निकल आता है, उसी तरह से निराशा के ये दिन भी समाप्त हो जाएंगे और तुम्हारे जीवन में उजाला-ही-उजाला हो जाएगा।"

इस तरह मन का बोझ हल्का हो जाने पर गीता को ऊंघ आने लगी। थोड़ी ही देर में दोनों लड़कियां गहरी नींद में डूब गईं।

दूसरे दिन जागने पर गीता अपने आपको बिल्कुल हल्की-फुल्की और स्वस्थ महसूस कर रही थी।

नहा-धोकर जब वे दोनों नाश्ता करने बैठीं तो आशा ने भी गीता को अपने बारे में बहुत कुछ बताया। अभी उसकी शादी नहीं हुई, मां-बाप दूर गांव में रहते हैं। उनकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है और वह कुछ रुपया बचाकर अपने मां-बाप और छोटे भाई-बहनों की सहायता के लिए भेज दिया करती है।

गीता ने महसूस किया कि आशा ने अपने जीवन के कुछ पक्षों से पर्दा नहीं उठाया, लेकिन गीता ने भी खामख्वाह कुरेदने की कोशिश नहीं की।

आशा फिर बोली, "गीता, अब तुम उस समय तक मेरे पास ही रहोगी, जब तक तुम्हारे घर वाले तुम्हें लेने के लिए न आ जाएं। जैसा कि मैंने कल कहा था, अब तुम बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में मेरी सहायता करना और हम दोनों बहनों की तरह एक साथ रहेंगी।"

गीता को गायब हुए पांच महीने हो चुके थे। घर वालों को उसका कोई समाचार नहीं मिला, और न उन्हें कोई समाधान ही सूझा।

एक रोज़ बातों-बातों में दबी ज़बान से ममता ने भाई को पुरी साहब के बारे में बताया। कमलजीत ने इस सिलसिले में उससे कुछ नहीं कहा। शायद इसलिए कि वह इसको ममता का व्यक्तिगत मामला समझता था। परन्तु एक बात तो स्पष्ट हो गई थी कि यदि ममता पुरी साहब से शादी करना चाहे तो उसके भाई को इस पर कोई आपत्ति नहीं होगी।

ममता प्रायः इसी समस्या में उलझी रहती थी। इसका कोई समाधान नहीं सूझ रहा था। समाधान हो भी क्या सकता था! किशोर से शादी का प्रश्न नहीं उठता था, क्योंकि गीता उसको चाहती थी। इसके अलावा स्वयं किशोर को ममता से शादी करने की कोई इच्छा नहीं थी। ममता जानती थी कि सिवाय एक-दो बार उसका हाथ थाम लेने के किशोर

न तो कभी कोई बात कही और न कभी कोई ऐसी हरकत की जिससे उसे यह महसूस हो कि वह उससे शादी करना चाहता है।

पांच महीने गुज़र जाने पर भी गीता का कुछ पता न चला तो एक रोज ममता ने अलग से भैया को कहा, "यदि मेरी शादी हो भी जाए तो गीता को इस बात का पता कैसे चलेगा। उसने घर लौटने की यही तो शर्त लगा रखी है कि मेरी शादी हो जाने पर वह लौट आएगी।"

कमलजीत बोला, "इसका केवल एक ही उपाय है। वह यह कि हम समाचार पत्रों में बिना किसी का नाम दिए यह खबर छापते रहें कि तुम्हारी बड़ी बहन की शादी हो गई है, और अब तुम घर लौट आओ। कोई दूसरा इससे कुछ नहीं समझेगा, न हममें से किसी का नाम छपेगा, लेकिन जब गीता पढ़ेगी तो वह समझ जाएगी। तुम जानती ही हो कि वह लखनऊ से छपने वाला 'पायनियर' समाचार पत्र बिना नागा पढ़ा करती थी। यदि वह मद्रास या पूना वगैरह नहीं चली गई तो आस-पास के इलाके में उसे 'पायनियर' मिल सकता है।"

अब ममता को महसूस हुआ कि इस दुखद स्थिति को समाप्त करने का उपाय तो निकल आया। अब वह पुरी साहब के बारे में बड़ी गहराई से सोचने लगी। सचमुच उनमें कोई ऐब तो नहीं था। उम्र बहुत ज्यादा नहीं थी, शक्ल भी अच्छी थी, स्वास्थ्य भी ठीक था। रुपए-पैसे के अतिरिक्त जायदाद भी थी। अधिक-से-अधिक लोग यह कहेंगे कि विधुर से शादी कर ली। दो-चार महीनों तक लोग आपस में कानाफूसी कर लेंगे। इसके बाद कानाफूसी करने के लिए उन्हें कोई और विषय मिल जाएगा।

दोपहर का खाना हो चुका तो कुछ देर आराम करने के बाद जब कमलजीत बाहर जाने लगा तो ममता ने फर्श की ओर देखते हुए उससे कहा, "यदि सम्भव हो तो उन्हें आज यहां भेज दीजिएगा।"

कमलजीत शब्द 'उन्हें' का अर्थ समझ गया। उसने भी ममता की ओर देखे बिना उत्तर दिया, "अच्छा मैं उनके घर से होता हुआ ही जाऊंगा।"

कमलजीत चला गया और ममता चुपचाप आने वाले की प्रतीक्षा करने लगी। पौन घंटा गुज़र गया तो उसने सोचा कि सम्भवत: पुरी साहब भैया को घर पर न मिले हों, परन्तु उसी समय पुरी साहब बंगले के गेट पर दिखाई दिए।

ममता का हृदय उछलकर मानो उसके कण्ठ में फंस गया। पुरी साहब

को देखकर पहले कभी ऐसी हालत न हुई थी।

वह भीतर आए तो ममता ने उनका स्वागत किया और उन्हें बड़े आदर से कुर्सी पर बिठाया।

पुरी साहब भी कुछ घबराहट में दिखाई देते थे। ममता ने चाय के लिए पूछा तो वह बोले, "कमलजीत ने कहा कि आपने मुझे बुलाया है और काम भी आवश्यक है। मुझे घबराहट हो रही है, पहले काम बताइए, चाय-चाय तो मैं बाद में भी पी लूंगा।"

यह कहते समय पुरी साहब के दोनों हाथों की उंगलियां एक-दूसरे में उलझी हुई थीं। कभी वह उंगलियों को कस लेते और कभी ढीला छोड़ देते। वह बहुत नर्वस दिखाई दे रहे थे।

ममता ने धीरे से कहा, "नहीं, बात कोई ऐसी आवश्यक नहीं थी। मैंने तो भैया से कहा था कि यदि आपके पास समय हो तो थोड़ी देर के लिए आज चले आएं, वरना किसी दिन भी आ सकते हैं।"

पुरी साहब बड़े उत्साह में आकर बोले, "आप याद करें तो मैं अपना कर्तव्य समझता हूं कि पहले आपसे मिल लूं। दूसरे काम तो बाद में भी हो सकते हैं।"

यह कहकर पुरी साहब को महसूस हुआ कि उनके शब्दों में आवश्यकता से कुछ अधिक उत्साह भर गया था, लेकिन उनकी यह बात ममता के मन को अच्छी लगी। नजरें झुकाकर दबे स्वर में बोली, "कुछ महीने पहले आपने ऊपर वाली मंजिल बनाने का इरादा किया था..."

पुरी साहब ने बात बीच में ही काट दी और मानो लपककर बोले, "जी हां, इरादा तो था। सच पूछिए तो अब भी है। मगर उस समय आपने विशेष दिलचस्पी नहीं दिखाई तो मैं संकोच में पड़ गया कि कहीं आप इसे नापसन्द तो नहीं करतीं।"

"नापसन्दगी की तो कोई बात नहीं। बल्कि मैं तो इन्तजार करती रही..."

पुरी साहब एक बार फिर ममता के वाक्य के बीच में ही कूद पड़े, "अरे! आपने बताया क्यों नहीं। अब तक दूसरी मंजिल खड़ी हो गई होती। चलिए बिगड़ा भी तो कुछ नहीं। अच्छा ही है कि आपने भी इस विषय में कुछ सोच-विचार कर लिया है।"

ममता को अब एक प्वाइंट सूझा, बोली, "आपका ख्याल ठीक है। मैं

इस विषय पर सोचती रही थी। मेरे भी कुछ सुझाव हैं···"

पुरी साहब ने फिर बात काटी, "आप जैसा चाहें बनवा लें। मुझे ऊपर की मंज़िल किसी और को किराए पर नहीं देनी है। उस पर भी आप ही का कब्ज़ा रहेगा। इसलिए यह तो अच्छा है कि आप अपनी रुचि के अनुसार ऊपर की मंज़िल बनवा लें।"

"इसलिए आज आपको मैंने खामख्वाह कष्ट दिया।"

"कष्ट? कष्ट कैसा जी! मैं कोई पराया हूं। मैं तो आप पर···मेरा मतलब है, मैं आपको···आपसे···"

यह भी गनीमत थी कि आस-पास उनकी बातें कोई नहीं सुन रहा था। ममता को और कुछ नहीं सूझा तो वह उठकर खड़ी हो गई! वह स्वयं नहीं समझ पाई कि वह खड़ी क्यों हुई। पुरी साहब ने इसका दूसरा मतलब समझा। वह भी फौरन खड़े होते हुए बोले, "ठीक है, ऊपर चलकर एक बार फिर जायज़ा ले लेते हैं। आप भी मुझे ठीक से समझा सकेंगी कि आप चाहती क्या हैं।"

ममता को मालूम नहीं था कि उसके खड़े हो जाने से नया रास्ता निकल आएगा। वह ज़ीने की ओर यूं बढ़ी जैसे वह ऊपर जाने के लिए ही खड़ी हुई थी। धीरे-धीरे ज़ीने पर चढ़ती हुई वह पल-भर को उस जगह ठिठकी जहां से ज़ीना मोड़ लेता था। अब पुरी साहब बड़ी तेज़ी से ऊपर आए। लगता था कि वह ममता को महसूस कराना चाहते थे कि अब भी उनमें नवयुवकों जैसा दम-खम मौजूद था और वह किसी भी नवयुवक की तरह उछलते हुए ज़ीने पर चढ़ सकते थे।

मोड़ से घूमकर छत तक पहुंचने की बजाय ममता फिर रुक गई। पुरी साहब उसके निकट से गुज़रकर छत की ओर बढ़े, मगर फिर वह भी ठिठककर रुक गए। उन्होंने सिर घुमाया और पूछा, "आप रुक क्यों गईं··· क्या छत पर मेरे साथ अकेले जाने में कुछ संकोच हो रहा है?"

पुरी साहब ने ये शब्द कुछ मज़ाक और कुछ गम्भीरता के अंदाज़ से कहे। ममता ने चुप रहना उचित नहीं समझा। उसकी आंखें झुकी हुई थीं, धीरे से बोली, "पिछली बार···"

पुरी साहब ने बात काटते हुए अपनी सफ़ाई पेश कर दी, "पिछली बार के लिए तो मैं आपसे क्षमा मांग चुका हूं। इतना समय गुज़र जाने के बाद मैं तो यही समझे बैठा था कि आपने मुझे क्षमा कर दिया है, परन्तु

क्या अब भी···"

"नहीं, ऐसा नहीं है।" ममता ने संगीत भरे स्वर में उत्तर दिया। मन-ही-मन उसे पुरी साहब की घबराहट पर हंसी आ रही थी। सोचने लगी कि वास्तव में वह सीधे-सादे मनुष्य थे, और नए ज़माने के होते हुए भी, उन्हें अधिक दांव-पेंच नहीं आते थे।

पुरी साहब ने फिर पूछा, "तो बात क्या है?"

"उस रोज़ आपने जो बात मुझसे कही थी, मेरा मतलब है जिस बात के लिए आपने क्षमा चाही थी, वह दरअसल मेरी समझ में नहीं आई।"

पुरी साहब हंसकर बोले, "चलो, यह भी अच्छा हुआ। आप समझ जातीं तो न जाने आपको कितना बुरा लगता!"

ममता सोचने लगी कि हे भगवान, यह तो उल्टी दिशा को चल दिए। बोली, "यह तो आपका वहम है कि मैंने उस बात का बुरा माना था···"

"सच?" पुरी साहब चहक उठे।

"दरअसल इतने दिनों से मैं यही जानना चाहती थी कि उस बात से वास्तव में आपका मतलब क्या था।"

"बीती बातों को भूल जाइए।"

"नहीं, नही, मैं तो समझती हूं कि हर बात स्पष्ट हो जानी चाहिए।"

"मगर स्पष्टीकरण का लाभ क्या?"

ममता चाहती थी कि पुरी साहब फिर से अपनी उस बात को दोहराएं और वह कुछ हेर-फेर के बाद उसे स्वीकार कर ले। परन्तु वह तो इतने बौखलाए हुए थे कि उस बात को दोहराने को तैयार ही नहीं थे। बोली, "आपस में हर बात स्पष्ट हो जानी चाहिए। इस तरह कोई गलतफहमी नहीं रहती।"

कुछ देर तक तो पुरी साहब बोल नहीं पाए। वह इतना भी नहीं समझ सके कि ममता वास्तव में यही बात करने के लिए छत पर आई थी। आखिर उन्होंने भूमिका बांधनी शुरू की, "क्या कहूं ममता जी! मेरी बच्ची कुछ वर्षों तक जवान हो जाएगी। लड़की पराया धन तो होती ही है। वह अपने घर चली जाएगी तो मैं अकेला रह जाऊंगा। इसकी कल्पना से ही मेरा दिल बैठ जाता है। रेखा से आपके प्यार को देखकर क्षण-भर को मेरे मन में ख्याल आया कि शायद आप इसकी मां बनना स्वीकार कर लें। आप दोनों को एक-दूसरे से लगाव है, और इसी में मेरा

कल्याण भी हो सकता था। आने वाले डरावने दिनों से मुझे मुक्ति मिल जाती। इसीलिए उस रोज़ मेरी जुबान से वे शब्द निकल गए जिनके लिए मैं बहुत लज्जित हूं।"

ममता ने महसूस किया कि उसे कोई-न-कोई ठोस बात कहनी पड़ेगी, वरना पुरी साहब अपनी बौखलाहट में न जाने क्या समझ बैठेंगे। अतः उसने कहा, "इसमें आपके लिए लज्जित होने की कोई बात नहीं थी।"

इतना कहकर ममता ने एक उचटती हुई नज़र पुरी साहब पर डाली और फिर आखें झुकाकर धीमे स्वर में बोली, "आपको यह बात मुझे उसी समय अच्छी तरह स्पष्ट कर देनी चाहिए थी, और फिर मुझे इस पर सोचने का मौका भी देना चाहिए था।"

पुरी साहब की मुर्झाई हुई तमन्नाओं पर मानो बहार आ गई। हकलाते हुए बोले, "सोचने के लिए तो आपको काफी मौका मिला है। क्या आप किसी निष्कर्ष पर पहुंच चुकी हैं?"

ममता ने अपनी एक उंगली पर साड़ी के पल्लू को धीरे-धीरे लपेटते हुए धीमे से कहा, "आपको तो मैंने हमेशा बहुत ही अच्छा इन्सान पाया। आपने उस रोज़ वह बात कही तो पूरी तरह स्पष्ट न होने के बावजूद मैं उसका कुछ-कुछ अर्थ समझ गई। मुझे आपकी बात बुरी बिल्कुल नहीं लगी लेकिन···"

पुरी साहब दो ज़ीने नीचे उतर आए और ममता के बिल्कुल सामने खड़े होकर बड़ी उत्सुकता से पूछा, "लेकिन क्या?"

"मैं सोच रही थी कि आपकी तुलना में हमारी आर्थिक स्थिति बहुत कमज़ोर है। इसके अतिरिक्त हमारे परिवार की कई ऐसी समस्याएं हैं जिनके झंझट में मैं आपको नहीं डालना चाहती थी। गीता की शादी खटाई में पड़ी है। भैया का मामला भी उलट-पलट होकर रह गया··· और···"

अब पुरी साहब ने बड़ी नर्मी से अपने दोनों हाथ उसके कन्धों पर रख दिए और दर्द भरे स्वर में बोले, "भला यह भी कोई बात है! जब आप मेरी हो गईं तो आपकी समस्याएं भी मेरी हो गईं। इन्हें झंझट समझना तो गलत बात है। कौन-सा परिवार है जिसे इस प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता। जब हम सब एक हो जाएंगे तो एक-दूसरे के सुख-दुःख के साथी भी तो बन जाएंगे। विश्वास कीजिए कि

बाद आपके लिए चिन्ता का कोई विषय नहीं रह जाएगा और ये
ज़िम्मेदारियां मैं अपने ऊपर ले लूंगा।"

यह कहते-कहते उन्होंने ममता को धीरे से अपनी ओर खींचा। ममता संकोच को ध्यान में रखते हुए सरलता से उनके सीने से जा लगी। नहीं, उसने हाथ उठाकर दोनों बाज़ू उनकी गर्दन में डाल दिए।

इतवार का दिन था।

छुट्टी वाले रोज़ आशा और गीता बड़े इतमीनान से नाश्ता करती थीं। सुबह का समय हड़बोंग की बजाय बहुत ही शान्ति से हंसने-बोलने और गप-शप लगाने में गुज़र जाता था।

क्वार्टर के बाहर आम के पेड़ के नीचे मेज़ और कुर्सियां टिकाकर और नाश्ता समाप्त कर लेने के बाद वे दोनों पत्रिकाओं और समाचार-पत्र के पन्ने उलटने में जुटी हुई थीं। इतने में आशा ने कुछ चौंककर कहा, "गीता!"

"हां दीदी।"

"तुमने यह पढ़ा?"

"क्या?"

"एक छोटा-सा विज्ञापन समझो, छपा है: तुम्हारी बड़ी बहन की शादी हो चुकी है। इस तरह हमने तुम्हारी शर्त पूरी कर दी। अब तुम जहां भी हो, उस स्थान का पता हमें लिखो, ताकि हम तुम्हें घर ले आएं!"

गीता उछल पड़ी, कहने लगी, "मैंने तो इस पृष्ठ पर ध्यान ही नहीं दिया। नौकरी, शादी तथा इसी प्रकार के छोटे-छोटे इश्तहारों वाले पृष्ठ को तो मैं पढ़ती ही नहीं। इसमें किसी का नाम नहीं दिया क्या?"

यह कहते-कहते गीता ने समाचार-पत्र अपने हाथ में ले लिया और उसे पढ़ने लगी।

आशा ने कहा, "बेशक नाम नहीं दिया, परन्तु संकेत तो स्पष्ट है। तुम्हारे घर वालों ने सोचा होगा कि पढ़ी-लिखी लड़की है, निश्चय ही शब्द उसकी नज़र से गुज़रेंगे। न जाने कितने समाचार-पत्रों में वि

बार वे इश्तहार दे चुके हैं।"

गीता उत्सुकता से उठकर खड़ी हो गई। आशा ने भी कुर्सी से उठकर उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, 'बधाई हो गीता! मैं तो समझती हूं कि निराशा के दिन समाप्त हुए। अब तो खुशी और आशा के दिन आ रहे हैं।"

गीता झट उसके गले में लिपटकर बोली, "आशा दीदी के साथ रहकर आशा के दिन तो आने ही थे—तो क्या मैं उन्हें पत्र लिख डालूं।"

आशा कुछ सोचकर बोली, "मेरे विचार से तुम अभी कुछ न लिखो। तुम्हारी ओर से मैं उन्हें पत्र लिख दूंगी। मुझे विश्वास है कि यह खबर तुम्हारे घर वालों ने ही छपवाई है, फिर भी सावधान रहने की जरूरत है। मुझे इस बात का भी विश्वास है कि तुम्हारी बड़ी बहन का विवाह हो चुका है। फिर भी हमें इस बात का सबूत मिल जाना चाहिए कि उन्होंने तुम्हें धोखा देने के लिए यह खबर नहीं छपवाई है।"

"अरे दीदी! तुम कितनी होशियार हो! ठीक है, तुम्ही पत्र लिखो।"

"अभी हम 'रफड्राफ्ट' तैयार करते हैं। फिर उसको ठीक ढंग से लिखकर भेज दिया जाएगा।"

"तो अभी लिखो।"

आशा ने डॉट पेन उठाया और निकट पड़ी कापी पर लिखना शुरू किया :

प्रिय महोदय,

समाचार-पत्र में मैंने एक खबर पढ़ी। उसकी कटिंग साथ भेज रही हूं। मैं आपकी बहन गीता को अच्छी तरह जानती हूं। वह बड़े आराम से रह रही है। चिन्ता की कोई बात नहीं। आपका यह विज्ञापन पढ़कर इन्होंने मुझसे कहा कि मैं आपको पत्र लिखूं। उम्मीद तो यही है कि आपने जो कुछ छापा है वह सही होगा, परन्तु फिर भी वह इस मामले में सही जानकारी प्राप्त करना चाहती है। पत्र के ऊपर मेरा पता लिखा है। आप चाहें तो इस पते पर उत्तर दे सकते हैं। मैं गीता की ओर से इतना अवश्य लिखना चाहूंगी कि अगर उसकी यह शर्तं आपने वास्तव में पूरी नहीं की तो वह यह स्थान छोड़कर कहीं और चली जाएगी। इस मामले में उसका आपसे कोई समझौता नहीं हो सकता। आपने जो कुछ लिखा है यदि वह

है तो फिर उसे घर लौट आने में कोई आपत्ति नहीं होगी ।

आपकी शुभचिन्तक

आशा ।

आशा यह पत्र लिख रही थी तो गीता के दिल में खुशी के अतिरिक्त दासी की एक लहर भी चल रही थी । वह सोच रही थी कि जिस किशोर ो उसने अपना बनाना चाहा था, अब वह जीवन-भर के लिए उससे अलग हो चुका है ।

उसी दिन यह पत्र दोबारा लिख कर कमलजीत के नाम भेज दिया गया ।

अभी कुछ ही दिन बीते थे कि एक रोज़ गीता ने अपने कमरे की खिड़की में से देखा कि उनके अहाते के बाहर पहुंच कर एक रिक्शा रुका । उसमें दो व्यक्ति बैठे थे । वह चौकन्नी हो गई । उस समय आशा घर पर नहीं थी ।

इतने में रिक्शे से जो दो सवारियां उतरीं उन्हें वह एक ही नज़र में पहचान गयी । उसका भैया और ममता अहाते में खड़े रामदीन से पूछ रहे थे कि क्या आशा जी इसी घर में रहती हैं । इस पर गीता फौरन बाहर निकल आई, जिसे देख कर वे दोनों रामदीन का उत्तर सुने बिना आगे बढ़ आए । ममता दुल्हन के कपड़े पहने हुए थी । गीता पहले बहन के गले से लिपट गई । मिलन के इस पर दोनों बहनें सिसक-सिसक कर रोने लगीं तब बहन को छोड़ कर गीता ने भैया के सीने पर सिर रख दिया । कमल जीत ने उसके सिर पर हाथ फेरा ।

उनके पास विशेष सामान नहीं था । केवल एक बड़ा-सा ब्रीफकेस थ वे तीनों कमरे के भीतर आ गए, और रामदीन ने ब्रीफकेस दीवार के टिका दिया ।

ममता ने कमरे में नज़र दौड़ाई और पूछा, "तो तुम्हीं ने आ नाम से हमें पत्र लिखा था ?"

"नहीं, वह आशा जी का ही लिखा था । क्या आप दोनों मेरे ह लिखावट भी नहीं पहचानते ?"

कमलजीत बोला, "यूं ही शक हुआ था । आशा जी को यहां हम यही समझे कि शायद तुमने खुद चिट्ठी लिखी या किसी से कर भेज दी ।"

"नहीं, आशा जी को मैंने अपनी दीदी बना लिया है। जब मैं घर से चली तो पहले पटना पहुंची, और फिर पटना से यहां चली आई।"

कमलजीत ने पूछा, "क्या तुम आशा जी को पहले से ही जानती थीं ?"

"बिल्कुल नहीं ! मैं तो यूं ही इस जगह का टिकट कटा कर स्टेशन उतर पड़ी। इत्तफाक से आशा जी मिल गई। तब से मैं यहीं उनके पास रह रही हूं।

ममता बोली, "तुम पहले से तो दुबली हो गई हो।"

"घर वालों से बिछुड़ कर मैं खुश तो नहीं रह सकती थी·········माता जी ठीक हैं ? पिताजी भी ठीक हैं ? और सारा परिवार ठीक-ठाक है न।"

ममता बोली, "तुम्हारे चले आने के बाद तुम स्वयं ही अनुमान लगा लो कि सब कितने खुश रहे होंगे।"

कमलजीत बोला, "अब बीती बातों को छोड़ो। ऐसा है गीता कि हम आज ही तुम्हें लेकर लौट जायेंगे। अब तुम्हें इस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।"

उस समय गीता खिड़की के बाहर देख रही थी। भैया की बात का उत्तर देने की बजाय वह चमक कर बोली, "आशा जी भी आ गईं !"

कमलजीत और ममता ने कुर्सी से जरा ऊपर उठ कर बाहर की ओर नजर दौड़ाई। कमलजीत तो एकदम चौंक कर रह गया।

जब आशा दरवाज़े में आकर खड़ी हुई तो उसने कमलजीत पर एक नज़र डाली, मगर ऐसा लगता था जैसे वह उसे जानती ही नहीं। गीता उछल कर खड़ी हो गई और लपक कर आशा का हाथ थामते हुए बोली, "दीदी ! यह हैं मेरे भैया ! और यह रही मेरी दीदी ममता !"

वे दोनों भी हाथ जोड़ते हुए कुर्सियों से उठ खड़े हुए। कमलजीत का दिल जितने ज़ोर से इस समय धड़क रहा था, उतने ज़ोर से पहले कभी नहीं धड़का था। उसके तन का रोम-रोम पुकार रहा था, "दीपा ! दीपा! तुम जिन्दा हो !"

परन्तु उसके सूखे कंठ से स्वर तक नहीं निकल सका। ममता और गीता ने कभी दीपा को नहीं देखा था। उनके लिए वह आशा ही थी। कमलजीत के हृदय में शान्ति और इतमीनान की एक लहर उठ रही थी,

दीपा को जीवित देख कर उसके मन से बहुत बड़ा बोझ उतर गया
ब तक वह अपने आपको दोष देता रहा कि उसी के कारण दीपा
त्महत्या करनी पड़ी। उसका जी चाहता था कि लपक कर दीपा को
लिपटा ले। परन्तु दीपा का अनोखा व्यवहार देख कर उसे इस बात
ाहस नहीं हो पाया।

गीता ने आशा से कहा, "दीदी, ये मुझे लेने आये हैं।"

उसकी बात का उत्तर देने की बजाय आशा बोली, "पहले इनके लिए
ाय और नाश्ते का प्रबन्ध होना चाहिए। ये सब बातें तो होती रहेंगी।"

अब गीता को अपनी भूल का एहसास हुआ। वह फौरन उठी और
स्टोव जला कर चाय बनाने लगी।

थोड़ी देर बाद वे चारों नाश्ता करने लगे। इसी दौरान गीता ने
फिर आशा से कहा, "दीदी, ये मुझे आज ही ले जाना चाहते हैं।"

आशा बोली, "यदि तुम्हारी शर्त पूरी हो गई है तो मुझे इस विषय
में कुछ नहीं कहना।"

कमलजीत बोला, "शर्त केवल शादी की थी। सो इसकी बड़ी बहन
ममता ने शादी कर ली है।"

यह कहते-कहते कमलजीत का स्वर थोड़ा कांप रहा था। दीपा को
अपने सामने पाकर वह बिल्कुल चकित रह गया था। बाकी सारी बातें
भूल कर वह अपने ही विचारों में खो गया था।

आशा ने कमलजीत की ओर छुपती हुई नज़र डाली और सपाट स्व
में पूछा, " इसका सबूत ?"

कमलजीत के होंठों पर फीकी-सी मुस्कराहट उत्पन्न हुई। उसने ब्री
केस उठा कर अपनी टांगों पर रखा, उसे खोला, और गीता की तस्वी
का एक एलबम निकाल कर तिपाई पर रख दिया। बोला, "मुझे पह
भय था कि इस प्रकार की आपत्ति उठाई जा सकती है।"

एलबम को देखते समय एकाएक ही गीता के चेहरे का रंग बद
वह चकित रह गई। बेअख्तियार ही बोल उठी, "दूल्हा तो पुर
हैं।"

कमलजीत ने कहा, "तुमने एक रात ममता को और मुझे ब
सुन लिया था। मगर जो कुछ तुमने सुना वह आधा था। फि
ममता की आपस में मोहब्बत नहीं रही, और उन्होंने कभी ए

शादी करने का निश्चय नही किया। बेशक वह मिलते-जुलते थे, एक साथ घूमने जाते थे, खेलते भी थे। लेकिन न कभी किशोर ने शादी करने की इच्छा प्रकट की, और न कभी ममता ने इस बात का वचन दिया। तुमने उस रात जो कुछ सुना वह गलत था। हमारी बातचीत किसी और सन्दर्भ में हो रही थी तथा तुम कुछ और ही समझी। कम-से-कम हमसे तो पूछना चाहिए था।"

ममता ने छोटी बहन की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा, "किशोर केवल तुम्ही को चाहता है। वह कई बार कह चुका है कि वह शादी करेगा तो केवल तुम्ही से करेगा। तुम्हारे गायब हो जाने के बाद दो-तीन रिश्ते आए भी लेकिन किशोर ने इन्कार कर दिया। हमने तुम्हारे बारे में यह मशहूर कर रखा था कि तुम फिर अपनी नौकरी पर बम्बई चली गई — किशोर अब भी लखनऊ में है। हमने उसे तुम्हारे विषय में कुछ नही बताया। यदि बताते तो वह हमारे साथ ही चला आता। हमने सोचा कि पहले पूरी स्थिति का जायजा ले लें।"

आशा गीता से कहने लगी, "तुम बेशक आज ही वापस लौट जाओ, क्योंकि मैं भी यहा अब अधिक दिनो तक नही रहूंगी।"

गीता को आश्चर्य हुआ, परेशान होकर बोली, "आप कहा चली जायेंगी ? आप हमारे साथ लखनऊ क्यों नही चलती ? वहा हम दोनों मिलकर बच्चों के लिए स्कूल चालू कर सकेंगी।"

आशा ने प्यार से उसके कन्धे पर थपकी देते हुए कहा, "इनमे से किसी भी बात की सम्भावना नही है। बस, असम्भव ही समझो।"

"तो दीदी, इसका मतलब यह है कि मैं आपसे अब कभी नही मिल सकूगी।"

"मैं जहा भी जाऊंगी, वहा का पता तुम्हें लिख भेजूगी। तुम्हारा जब जी चाहे मेरे पास चली आना—अच्छा, ये बातें तो होती रहेंगी। तुम्हें अब अपना सामान भी तैयार करना है। खाने का प्रबन्ध भी करना पड़ेगा। मेरा ख्याल है कि आज हम अपनी पाठशाला में छुट्टी कर दें। सन्ध्या तक तुम लोगों की गाड़ी यहां से चलेगी।"

गीता सामान समेटने लगी। आशा भोजन का प्रबन्ध करने के लिए रसोई की ओर चली गई। कमलजीत ने ममता को इशारा किया और वे दोनों उठकर बाहर निकले और आम के पेड़ के नीचे जा खड़े हुए।

लजीत ने बात शुरू की, "ममता ! आज तुम अकेली गीता को
ड़ी पर सवार हो जाओ : तुम दोनों पढ़ी-लिखी लड़कियां हो।
तक पहुंचने में कोई परेशानी तो होगी नहीं।"
मता ने बड़े गौर से भाई के चेहरे का जायज़ा लेते हुए जवाब दिया,
दोनों को जाने में कोई परेशानी नहीं होगी, लेकिन भैया, आप हमारे
क्यों नहीं चलना चाहते ?"

"मुझे यहीं रुकना पड़ेगा।"

"क्यों ?"

कमलजीत सरक कर बहन के और निकट चला गया। फिर वह फुस-फुसाते अंदाज़ में बोला, "यह लड़की आशा नहीं दीपा है।"

ममता का मुंह खुले का खुला रह गया। बेअख्तियार ही उसकी ज़बान से निकला, "तो गोया उसने आत्महत्या नहीं की ?"

"नहीं।"

"भगवान का शुक्र है ! लेकिन उसकी शक्ल से तो यूं लगता है जैसे उसने आपको पहचाना ही नहीं।"

"वह जानबूझकर ऐसा कर रही है।"

ममता मन-ही-मन इस बात पर प्रसन्न थी कि दीपा ने आत्महत्या नहीं की, क्योंकि वह जानती थी कि इस बात का उसके भाई के दिल पर कितना बड़ा बोझ था। लेकिन वह उसे पहचानने से क्यों इन्कार कर रही थी। मानो बहन के मन की बात बूझ कर कमलजीत ने कहा, "तुम दो
के चले जाने के बाद मेरी उसकी खुल कर बातें होंगी। तब ही इस रह
से पर्दा उठ सकेगा। इसीलिए तो मैंने निश्चय किया है कि केवल तुम दो
को भेज दूं और मैं दो-एक दिन रुक कर दीपा के मन को टटोलने
कोशिश करूं। तुम तो अच्छी तरह समझती हो कि इस मामले का
जीवन से कितना गहरा सम्बन्ध है।"

"हां-हां ! भैया मैं समझ गई। चिन्ता मत करिए। हम दो
चली जाएंगी। आप हमें गाड़ी पर चढ़ाने के लिए स्टेशन तो चलें

"अवश्य !"

वे दोनों कमरे में लौट आए। लौटते समय कमलजीत ने
समझा दिया कि स्वयं दीपा को भी इस बात का पता न चले
लोगों के साथ वापस नहीं लौट रहा हूं। मुझे विश्वास है कि

तक गीता को विदा करने के लिए जरूर जाएगी। हम तीनों डिब्बे में बैठे रहेंगे। जब गाड़ी चल पड़ेगी तो मैं जल्दी से ब्रीफकेस लेकर नीचे उतर पड़ूंगा। बाद में जो होगा, सो देखा जाएगा।"

संध्या हुई तो दो रिक्शे बुलाए गए। एक में गीता और आशा दीपा और दूसरे में ममता और कमलजीत बैठ गए। स्टेशन पर पहुंचे तो कमलजीत चुपके से दो टिकट खरीद लाया और सबकी नजरें बचा कर उसने वे टिकट ममता को थमा दिए।

गार्ड ने हरी झण्डी दिखाई तो गीता जो पहले से ही बहुत भावुक हो रही थी, आशा के गले से लग कर रोने लगी। फिर आशा प्लेटफार्म पर खड़ी होकर चलती हुई गाड़ी में बैठी गीता को रूमाल हिला-हिला कर दिखाने लगी। उसे पता नहीं चला कि डिब्बे के हिलते ही उसकी पीठ पीछे गाड़ी के दरवाजे में से कब कमलजीत अपने ब्रीफकेस सहित नीचे आया। गाड़ी नजरों से ओझल हो गई तो वह मुड़ी। लेकिन अपने सामने कमलजीत को खड़े देख कर चकित रह गई। फिर सम्भल कर बोली, "तुम ?"

कमलजीत के होंठों पर शरारत भरी मुस्कराहट दिखाई दी, बोला, "यही शब्द मैं भी कह सकता हूं, तुम ?"

"तुम्हें यह शब्द कहने का कोई अधिकार नहीं है।"

"यदि तुमको अधिकार है तो वह क्यों ?"

"तुम अपनी बहनों के साथ वापस जा रहे थे। मेरी नजर बचा कर नीचे उतर आए। इसीलिए मेरे मुंह से अनायास ही यह शब्द निकल गया।"

"मुझे यह शब्द कहने का अधिकार इसलिए है कि पिछले कोई एक वर्ष से तुमने मेरे जीवन के पल-पल में विष घोल कर रख दिया है।"

दीपा ने जल्दी से दाएं-बाएं देखा और बोली, "यह स्थान ऐसी बातों के लिए उचित नहीं है।"

"तो किसी उचित स्थान पर चले जाते हैं।"

"मैं तुम्हारे साथ किसी और जगह नहीं जाना चाहती।"

"तो तुम्हारा घर ही सही।"

"तो क्या तुम मेरे साथ लौट रहे हो ?"

"हां। क्या तुम मुझे घर से बाहर निकाल दोगी ?"

ं, मैं इसकी ज़रूरत महसूस नहीं करती। मैं केवल एक रात के
रुकूंगी, और कल यहां से चल दूंगी।"

हां जाने का इरादा है?"

तनी देर में वे स्टेशन से बाहर निकल आए। दीपा ने एक रिक्शे
को बुलाया और भाड़ा तय किए बिना उस पर बैठ गई और बोली,
!"

कमलजीत जहां-का-तहां अकेला खड़ा रह गया फिर दीपा को इस तरह
देखकर वह दूसरे रिक्शे में बैठ गया और रिक्शे वाले से कहा, "सामने
ले रिक्शे के पीछे-पीछे चलो।"

इस तरह वे आगे-पीछे घर पहुंच गए।

रिक्शा वालों को किराया देकर विदा किया और फिर मकान के बाहर
ही कमलजीत ने पूछा, "यह कहां की तमीज़ है कि तुम मुझे इस तरह
अकेले छोड़कर चली आईं?"

"तुम बच्चे नहीं थे जो तुम्हारे खो जाने का डर होता।"

"लेकिन मैं तुम्हारा मेहमान हूं, यह तो सोचना था।"

"मैं ज़बरदस्ती के मेहमान को मेहमान नहीं मानती।"

"छोड़ो इस बात को! तुम कह रही थीं कि तुम कल यहां से चली
जाओगी। यह क्या रहस्य है?"

"रहस्य कुछ भी नहीं। मैंने पापा को अर्जेन्ट तार दे दिया है। वह
कल सुबह हवाई जहाज़ से यहां पहुंच जायेंगे। तब हम दोनों दिल्ली लौट
जायेंगे।"

"इस स्कूल का क्या बनेगा? तुम्हारी छात्राएं, तुम्हारे ये नौकर, विशे
कर बूढ़ा रामदीन और उसकी पत्नी।"

"इन सब बातों से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन यदि त
जानने के लिए बड़े उत्सुक हो रहे हो तो मैं इतना ही बता सकती हूं कि
फिर लौटकर आऊंगी। या हो सकता है कि मैं दिल्ली की किसी टीचर
यहां भेज दूं। वही सब कुछ समेट लेगी। रामदीन और उसकी पत्नी
को चले जायेंगे। मैं हर महीने उन्हें कुछ-न-कुछ रुपया भिजवा
करूंगी।"

"मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि तुम्हारे पापा कल य
रहे हैं।"

"परन्तु मुझे विश्वास है कि तुमको यहां पाकर उन्हें बिल्कुल भी प्रसन्नता नहीं होगी।"

कमलजीत कुछ देर तक अपने विचारों में डूबा रहा और फिर बोला, "दीपा ! तुम इस बात का अनुमान नहीं लगा सकती कि तुम्हें जीवित देख कर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है।"

"यह प्रसन्नता बेकार है, क्योंकि तुम्हारा-मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहा।"

उस समय तक दीपा ने दरवाज़े का ताला खोल दिया था और वे कमरे में पहुंच चुके थे।

कमलजीत बोला, "सम्बन्ध तो फिर स्थापित हो सकते हैं।"

"हरगिज नहीं ! टूटा हुआ शीशा नहीं जोड़ा जा सकता, और यदि जुड़ भी जाए तो उसमें दरार तो आ ही जाती है।"

"समय पाकर वह दरार भी गायब हो जाएगी।"

"समय ? अब तो मिस्टर तुम मुझको भूल जाओ और अपने मन से यह विचार निकाल दो कि तुम्हारा-मेरा सम्बन्ध फिर से स्थापित हो सकता है।"

"दीपा, मैं जानना चाहता हूं कि तुमने मुझसे और अपने पापा से ऐसा भयानक मज़ाक क्यों किया ?"

"तुमको यह जानने का कुछ भी अधिकार नहीं है।"

"क्यों नहीं ? तुम्हारी जुदाई का एक-एक पल मेरे लिए क्लेश बनकर रह गया था। किसी भी दिन मैं खुशी भरा कहकहा नहीं लगा सका। किसी भी रात मैं पूरी नींद सो नहीं सका। यह सब तुम्हारे कारण। आज तुम्हीं कह रही हो कि मुझे किसी बात का कोई अधिकार नहीं है।"

दीपा माथे पर बल डालकर बोली, "देखो मिस्टर ! एक वर्ष पहले तुम मुझे ठुकरा चुके हो। मैंने तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा वरन् तुमने मेरा साथ छोड़ दिया। आज इस प्रकार से प्रेम जतलाकर मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो। मैं इस विषय पर एक शब्द तक नहीं सुनना चाहती।"

कमलजीत को उसके इस कटु अंदाज पर एक बार तो क्रोध आ गया, परन्तु उसने महसूस किया कि उसकी बातों में सच्चाई भी तो थी। यह सोचकर कि कल तक उसका क्रोध धीमा पड़ जाएगा, उसने कहा "अच्छा दीपा, तुम इस विषय पर बात नहीं करना चाहतीं तो न सही, परन्तु रात के

भोजन का तो कोई प्रबन्ध होना चाहिए।"

"हां, मैं रामदीन से कह देती हूं कि एक व्यक्ति का फालतू खाना भी तैयार कर ले।"

कमलजीत फीकी हंसी हंसकर बोला, "फालतू मेहमान का फालतू खाना!"

दीपा ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और कमरे से बाहर निकल गई।

खाना तैयार हो गया। दोनों ने चुपचाप भोजन किया।

कमलजीत ने अंगड़ाई लेकर कहा, "अब सोने का क्या प्रबन्ध होगा?"

"गीता वाली चारपाई बरामदे में रखवा दूंगी। उसी पर सो जाना। जैसा कि मैं बता चुकी हुं, कल पापा के साथ मैं शायद हवाई जहाज द्वारा वापस दिल्ली चली जाऊं।"

"हवाई जहाज सिवान में तो नहीं मिलेगा। शायद पटना से मिल जाए।"

दीपा ने उसकी ओर घूरकर देखते हुए कहा, "यह भी सम्भव है कि पापा पटना से यहां तक के लिए टैक्सी ले आएं। मतलब यह कि अपना प्रबन्ध कर लेना।"

कमलजीत शान्त रहा।

थोड़ी देर बाद बरामदे में उसका बिस्तर बिछ गया और वह चुपचाप उस पर लेट गया।

सुबह हुई तो सामान्य रूप से घर का कामकाज होता रहा। दीपा को विश्वास था कि पापा नाश्ते के समय पहुंच जायेंगे। पापा साढ़े नौ तक नहीं पहुंचे तो दीपा ने कमलजीत से कहा, "तुम नाश्ता कर लो।"

कमलजीत ने पूछा, "क्या तुम अभी पापा की प्रतीक्षा करोगी?"

"हां।"

"तो ठीक है, मैं भी प्रतीक्षा करूंगा।"

इस पर पहले तो दीपा कुछ बोलने लगी, फिर न जाने क्या सोचक चुप रह गई।

दस बजकर पचीस मिनट हो गए तो सचमुच ही एक टैक्सी क्वार्टर के सामने आकर रुकी। उसमें से सेठ चन्द्रमोहन बाहर निकले। उन्होंने इस बहुत ही मामूली से घर पर नजर डाली तो आश्चर्य से उनका मुंह खुला का खुला रह गया। वह बेअख्तियार ही बड़बड़ा उठे, "क्या दीपा यहां रह सकती है ?"

कमलजीत बाहर आम के पेड़ के नीचे ही बैठा था। टैक्सी के रुकते ही वह उसकी ओर लपका। सेठ जी की बड़बड़ाहट उसके कानों में पहुंच गई और वह फौरन ही बोला, "जी हां, दीपा [illegible] है और यहीं रहती है।"

सेठजी पहले तो कमलजीत को देखकर हड़बड़ाए, और फिर उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए बोले, "हैलो ! तुम [illegible] हो क्या ?"

"जी नहीं, मुझे तो पता ही नहीं था कि दीपा यहां रहती है—लेकिन यह जरा लम्बी कहानी है। आप भीतर आइए !"

सेठजी नाप-नाप कर कदम रखते हुए भीतर की ओर बढ़े और पूछने लगे, "दीपा कहां है ?"

"सुबह से वह दरवाजे में खड़ी आप ही की प्रतीक्षा कर रही थी। अब शायद रसोईघर की ओर गयी है।"

इतने में दीपा दूसरे दरवाजे से भीतर [illegible] में लपककर निकट पहुंची और बाप के गले से लिपट गई।

कुछ देर तक ये दोनों मुंह से कुछ बोल ही [illegible] ने कहा, "आइए पापा ! पहले नाश्ता [illegible] आपकी प्रतीक्षा में हमने भी अभी तक [illegible]"

"लेकिन बेटी, मैं तो अभी [illegible]"

हीं किया था। मगर यह समय ऐसी बातें सोचने का नहीं
धोकर और कपड़े बदलकर सेठ जी नाश्ता करने आ बैठे। नाश्ते के साथ कमलजीत और दीपा ने मिल-जुलकर उन्हें पूरी कहानी सुनाई। अन्त में कमलजीत बोला, "यह सारा कांड किसी उपन्यास के अध्ययन कम दिलचस्प नहीं है।"

मगर सेठ जी कलात्मक दृष्टि कहां से लाते। उन्होंने वातावरण में अपना यह प्रश्न उछाल दिया, "परन्तु इस सबका लाभ क्या हुआ। इस लड़की ने आत्महत्या का ढोंग रचाकर अपने बाप को लगभग साल-भर बुरी तरह परेशान रखा। इसके अलावा कमलजीत..."

"यह नाम मेरे सामने मत लीजिए!"

सेठजी की आंखें फैल गईं। उन्होंने दीपा और कमलजीत की अं बारी-बारी देखा और फिर आश्चर्यजनक लहजे में बोले, "आखिर मामला क्या है?"

"पापा मामला कुछ नहीं है, सिवाय इसके कि आज से एक वर्ष पहले जिस व्यक्ति से मैं शादी करना चाहती थी, अब मैं उसे सदा के लिए भुल देना चाहती हूं।"

सेठजी बोले, "भाई कमाल है! लड़कियों की बुद्धि भी उलटने में देर नहीं लगती। अरे मैं कहता हूं कि इसी एक बात के लिए साल-भर तक हम तीनों परेशान रहे। अब जबकि सौभाग्य से सारा मामला ठीक हो गया तो तुमने एक नई अड़चन लगा दी। बेटी! एक वर्ष पहले मुझे यह मालूम होत कि तुम इस शादी की खातिर आत्महत्या करने की धमकी दे सकती तो मैं तुम दोनों के रास्ते की चट्टान कभी न बनता। मैंने उस समय कमलजीत से कहा था कि यदि दीपा इसी शादी पर इतनी तुली हुई तो उसे घर से भागने की क्या जरूरत थी। मैं ही हार मान जात

दीपा ने जल्दी से कहा, "अब आपको हार मानने की कोई आवश् नहीं है। उस समय आपने यह आपत्ति उठाई थी कि मैं कमलज मामूली से मकान में कैसे रह सकूंगी। इसीलिए मैंने साल भर त भी बुरी दशा में रहकर सिद्ध कर दिया है कि आपका यह विचा है।"

"अरे भई, मैं मान गया कि मेरा विचार गलत था। इस तुम दोनों की शादी पर राज़ी हो गया था। मगर अब तुमने

नारा लगा दिया है। कारण ?"

"मुझे अफसोस इस बात का है कि उस समय कमलजीत ने मुझसे शादी करने का विचार ही छोड़ दिया। कम-से-कम उसे तो मुझ पर विश्वास होना चाहिए था कि मैं उसके साथ किसी भी स्थिति में रह सकती थी। मगर मुझ पर और मेरी मोहब्बत पर विश्वास करने की बजाय उसने आपके झांसे में आकर मेरी मोहब्बत ठुकरा दी। आज कमलजीत भी देख सकता है कि किस तरह मैं बड़े नीचे स्तर पर जीवन व्यतीत कर सकती हूं। उसका यह ख्याल गलत था कि मैं सेठ की बेटी होकर उसके साथ नहीं रह सकूंगी। मगर उसने वह मौका हाथ से खो दिया और मेरे प्यार को ठोकर मार दी। आज मैं उसे ठुकराती हूं। मैं शादी नहीं करूंगी।"

मानो जैसे पूरा वातावरण ही सुन्न होकर रह गया। आखिर सेठजी सूखे कंठ से बोले, "यह कैसे हो सकता है बेटी ? कोई बाप अपनी बेटी को उम्र-भर अपने घर में नहीं बिठा सकता। हर लड़की को अपना घर बसाना होता है।"

दीपा तेज स्वर में बोली, "मैंने शादी से तो इन्कार नहीं किया।"

सेठजी टकटकी बांधकर बेटी को ओर पल-दो-पल देखते रहे, और फिर पूछा, "तुम यह कहना चाहती हो कि तुम शादी तो करोगी लेकिन कमलजीत के साथ नहीं ?"

"आप ठीक समझे।"

"अच्छा तो तुम किससे शादी करोगी ?"

"यह मैं आप पर छोड़ती हूं।"

"तो गोया तुम यह चाहती हो कि मैं तुम्हारे लिए स्वयं ही वर ढूंढ लूं और फिर तुम दोनों का परिचय करा दूं, ताकि तुम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ सको ?"

"जी नहीं, मुझसे परिचय कराने की कोई आवश्यकता नहीं है। वापस लौटकर आप जिस किसी से चाहे मेरा रिश्ता तय कर दें। मैं अपने होने वाले पति का चेहरा शादी हो जाने के बाद ही देखूंगी। यह मेरा अन्तिम निर्णय है।"

इतनी बातचीत के बाद वातावरण गम्भीर हो गया। दीपा के व्यवहार से लगता था कि वह अब इस विषय पर कुछ भी बातचीत नहीं करना चाहती थी। कमलजीत ने भी उससे कुछ कहना उचित नहीं समझा। इसी

ा में खाना तैयार हुआ। इस दौरान दीपा ने अपना सामान वगैरह
या। जैसा कि वह कमलजीत से कह चुकी थी, कुछ अर्से बाद
लौटने का इरादा था ताकि वहां का पूरा काम समेट ले। अभी वह
आवश्यक कपड़े और दूसरी छोटी-मोटी चीज़ें अपने साथ ले जा रही

खाना खाते समय सेठजी ने कहा, "मेरे विचार में आध-पौन घंटा
ाम करने के बाद हमें पटना के लिए चल देना चाहिए।"

दीपा बोली, "इसीलिए मैंने अपना छोटा-मोटा सामान समेट लिया
।"

कमलजीत ने कहा, "सेठजी, मैं संध्या की गाड़ी से चला जाऊंगा।"

दीपा खामोश रही, परन्तु सेठजी उच्च स्वर में बोल उठे, "नहीं बेटा, यह कैसे हो सकता है। तुम दोनों की खटपट का यह मतलब तो नहीं होना चाहिए कि हम लोग अलग-अलग पटना पहुंचें। वहां होटल में मैंने एक रूम रिजर्व करा रखा है। सीधे वहीं पहुंचेंगे। कल सुबह ताज़ा दम होकर तुम लखनऊ चले जाना। हमें यदि दिल्ली के लिए हवाई जहाज़ मिल गया तो ठीक है, वरना दो-एक दिन पटना की सैर करके हम भी गाड़ी से वापस लौट जायेंगे।"

सेठजी के स्वर में ऐसा अनुरोध था कि कमलजीत ने ज़िद करना उचित नहीं समझा।

आखिर जब वे चले तो पिछली सीट पर एक ओर कमलजीत, दूसरी ओर दीपा, और बीच में सेठजी बैठे थे। दीपा बाहर की ओर देखती रही और वह बाप की हर बात हां-हूं करके टाल देती। तब सेठजी कमलजीत से बातें करने लगते।

इस तरह पटना तक यह सफर काफी रूखा रहा। रात भी कमलजी
को मजबूरन उन्हीं के साथ काटनी पड़ी। दूसरे दिन गाड़ी पर सवार हो
वह लखनऊ को चल दिया।

लखनऊ पहुंचकर जब उसने ममता को पूरी बात सुनाई तो वह उ
होकर बोली, "मैं तो बहुत खुश हुई थी कि दीपा ने आत्महत्या नहीं
गीता भी उसका ज़िक्र चलने पर उसी के गुण गाती है। एक तरह से
ने गीता को हर मुसीबत से बचाकर रखा। उस तरह से उसका हमा
वार पर बहुत बड़ा एहसान है। लेकिन आपके प्रति उसका यह

बहुत ही निराशाजनक है।"

कमलजीत ने हाथ से इशारा करके कहा, "अब इस विषय पर बातचीत करना ही बेकार है। कम-से-कम मुझे यह इत्मीनान तो हो गया कि दीपा जीवित है। इसका मेरी आत्मा पर बहुत बड़ा बोझ था।"

कमलजीत को यह भी पता चला कि अंजू के लिए उसके मां-बाप ने एक लड़का ढूंढ लिया था। बाद में लड़के और लड़की की मुलाकात भी करा दी गई ताकि वे एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ लें। उन्होंने एक-दूसरे को पसन्द कर लिया।

यदि कमलजीत चाहता तो अंजू भी उससे शादी करने को तैयार हो जाती, परन्तु कमलजीत का मन इतना उखड़ चुका था कि वह शादी का ज़िक्र तक नहीं सुनना चाहता था।

किशोर आई० ए० एस० की परीक्षा के बाद इण्टरव्यू में भी सफल रहा। अब उसे अच्छी नौकरी मिलने वाली थी। आपस में यही तय हुआ कि नौकरी मिलते ही गीता से उसकी शादी कर दी जाए।

यदि कभी ममता या उसके मां-बाप कमलजीत के विषय में चिन्ता [illegible]

पुरी साहब ने ऊपर की मंजिल भी बनवा दी थी, अतः ममता अपने पति के साथ ऊपर वाली मंजिल में रहती थी और उसका सारा परिवार नीचे की मंज़िल में रहता था।

दीपा दिल्ली तो पहुंच गई, लेकिन अब उसका जीवन पहले जैसा नहीं रहा था। न वह किसी क्लब में जाती, न होटलों की सैर करती, और न अपनी सखियों से मिलने उनके घरों को जाती। वह सारा-सारा दिन अपने कमरे में घुसी रहती। समय काटने के लिए या तो रिकार्ड-प्लेयर पर संगीत सुनती, या पुस्तकें पढ़ती रहती थी। यदि कोई सहेली घर पर मिलने के लिए आ जाती तो उसका कुछ समय अपनी सखी के साथ ही कट जाता था।

वह अच्छी तरह जानती थी कि उसके पापा वर ढूंढने के लिए कितनी

कर रहे थे। मगर स्वयं उसने कभी कोई दिलचस्पी नहीं ली। ...
स विषय को कभी छेड़ देते तो वह कहती, "आप इस सिलसिले में
से कुछ न पूछें। मैंने आपको वचन दे दिया है कि आप जिस किसी
मेरी शादी करेंगे, मैं उसी को पति स्वीकार कर लूंगी।"

सेठजी कहते, "लेकिन बेटी यह पूरे जीवन का मामला है। मेरी पसन्द
ड़के को भी तुम शादी से पहले देख लो, परख लो, पसन्द कर लो तो
छा रहेगा।"

"वह बात तो मेरी किस्मत में लिखी ही नहीं है। अब मैंने पसन्द-
पसन्द का ख्याल ही मन से निकाल दिया है।"

"लेकिन यदि कहीं शादी के बाद तुमने कोई और बवाल खड़ा कर
दिया तो बताओ कितनी बदनामी होगी!"

"ऐसा हरगिज नहीं होगा। यह मेरा वचन है। मैं अपने वचन पर
अटल रहूंगी।"

सेठजी ने बेटी का दृढ़ निश्चय देखकर बीस दिन के भीतर-भीतर उसे
खबर सुनाई कि लड़का ढूंढ लिया गया है। दीपा बोली, "यह सब मुझे
बताने की कोई ज़रूरत नहीं। जिस दिन दूल्हा यहां पहुंच जाएगा, मैं वेदी
पर उसके पहलू में बैठ जाऊंगी, और पवित्र अग्नि के चारों ओर जितने
चक्कर लगाने हैं लगा लूंगी।"

सेठजी ने यह सुनकर ठण्डी आह भरी और चुप होकर रह गए।

आखिर कुछ दिनों के बाद कोठी का वातावरण शहनाइयों के संगीत
से गूंज उठा। खूब सजावट की गई। गहमा-गहमी हुई।

फूलों से लदा और भारी-भरकम सेहरा पहने दूल्हा भी आ गया
दीपा दुल्हन के वस्त्रों में लम्बा घूंघट काढ़कर अपने होने वाले पति के पह
में वेदी पर जा बैठी। शादी की रस्म पूरी हो गई और दीपा अपने पति
पत्नी बन गई।

दूल्हा अपने साथ केवल गिनती के बाराती लाया था। दीपा की
यही इच्छा थी कि शादी अधिक-से-अधिक साधारण होनी चा
विवाह हो जाने के बाद सेठ जी अपनी बेटी और दूल्हा को अलग क
ले गए जहां दूल्हे ने चेहरे पर बंधा हुआ सेहरा उतार कर तिपाई
दिया और दीपा ने घूंघट उठा दिया। दोनों ने एक-दूसरे को देखा
एकदम ही उठकर खड़ी हो गई और अपने पापा की ओर देखते

"पापा ! यह है मेरा दूल्हा ?"

"हां।"

"क्यों ?"

पापा ने सिर खुजाते हुए अर्थपूर्ण दृष्टि से दूल्हे की ओर देखा और फिर कहा, "मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार कमलजीत से तुम्हारी शादी करने को तैयार नहीं था, लेकिन इसने धमकी दी कि यदि दीपा से मेरी शादी न हुई तो मैं आत्महत्या कर लूंगा…बोलो ! कमलजीत, बोलो न !"

यह कहते-कहते बेटी की नजर बचा कर सेठजी ने कमलजीत को हाथ से हामी भरने के लिए इशारा किया।

साजिश के अनुसार कमलजीत फौरन बोल उठा, "हां ! तुम्हारे पापा बिल्कुल ठीक कहते हैं। मैंने इन्हें यह भी साफ-साफ बता दिया था कि मैं दीपा की तरह केवल धमकी ही नहीं दे रहा हूं, वरन सचमुच आत्महत्या कर लूंगा…"

यहां से सेठ जी ने बात उठाते हुए कहना शुरू किया "इसकी धमकी से मैं घबरा गया। मैंने सोचा कि भगवान न करे, यदि इसने अपनी जान ले ली तो इसकी आत्मा भटकती रहेगी, और इसके दुखी दिल का भार हम दोनों पर पड़ेगा…"

यह बात हो ही रही थी कि दीपा जोर-जोर से फर्श पर पांव मारती हुई बाहर निकल गई। कमलजीत उसके पीछे जाने लगा तो सेठ जी उसे रोकते हुए बोले, "अभी रहने दो। उसका दिमाग बहुत गर्म हो रहा है। थोड़ी ही देर बाद जब वह जरा ठंडी पड़ जाए तो तुम उसे मना लेना।"

कमलजीत फिर सोफे पर बैठ गया। सेठजी अपने पाइप में तम्बाकू भरने लगे। पन्द्रह-बीस मिनट इधर-उधर की बातों में गुजर गए। तब एक नौकर कमरे के भीतर किसी काम से आया तो सेठ जी ने उससे कहा, "जरा देखो तो दीपा कहां है। अगर दिख जाए तो उससे कहना कि पापा बुला रहे हैं। तुम्हारी बात सुन कर अगर वह इधर चली आए तो ठीक है वरना मुझे बता देना। मैं खुद ही उसको बुला लाऊंगा।"

नौकर 'बहुत अच्छा' कह कर चला गया। आठ-दस मिनट बाद लौट कर आया और बोला, "साहब, दीपा जी का तो कुछ पता ही नहीं।

"क्या मतलब ?" यह कहते-कहते सेठ जी उठ खड़े हुए।

"साहब ! सारी कोठी खोज मारी है, सारे बाग में उन्हें ढूंढ़ा, मगर वह
...हीं नहीं हैं ।"

कमलजीत ने कहा, "सम्भव है वह अपनी सखियों के साथ कहीं बैठी हो ।"

"जी नहीं, उनकी फ्रेन्ड में से भी किसी को उनका कुछ पता नहीं ।"

सेठ जी और कमलजीत ने एक-दूसरे की ओर बड़ी परेशानी से देखा, और फिर वे दीपा को ढूंढ़ने के लिए निकल पड़े । वह कहीं नहीं थी । और किसी को उसका पता नहीं था । उसकी सहेलियां भी बिगड़ कर वापस जा रही थीं । उनकी शक्ल से लगता था कि वे बहुत अपमानित महसूस कर रही थीं ।

कमलजीत ने घबरा कर अपने ससुर से कहा, "कहीं उसने आत्महत्या न कर ली हो । मैंने जो उससे कहा था कि मैं उसकी तरह केवल धमकी नहीं दूंगा, शायद इसी पर उसे गुस्सा आ गया ।"

सेठ जी ने उसके कन्धे पर हल्की-सी थपकी देते हुए कहा, "मेरे ख्या...
में चिन्ता की कोई बात नहीं ।"

कहने को तो सेठ जी ने यह कह दिया परन्तु भीतर से वह भी ...
चिन्तित हो रहे थे ।

संध्या को गाड़ी का समय हो गया तो भी दीपा कुछ पता नहीं...
उसकी सखियों से मिलकर पूछताछ की गई, लेकिन किसी को उसके...
में कुछ मालूम नहीं था ।

आखिर यही तय हुआ कि कमलजीत बिना दुल्हन के वाप...
जाए और बाद में सेठ जी दीपा का पता लग जाने पर उसे ...
देंगे ।

कमलजीत को गाड़ी में रात भर नींद नहीं आई । उसके सा...
शान थे । दिल्ली में सेठ जी के जानने वाले आपस में कानाफूसी...

दूसरे दिन वह स्टेशन पर उतरा । दोस्तों से विदा होकर...
बंगले में पहुंच गया ।

घर में खूब चहल-पहल दिखाई दे रही थी । यह सोच...
बैठ गया कि जब घर वालों को यह पता लगेगा कि दुल्हन...
सारे घर पर दुःख के बादल छा जायेंगे । परन्तु जब वह घ...

तो किसी ने दुल्हन के बारे में उससे पूछा ही नहीं। वे आपस में खूब चहक रहे थे।

कमलजीत एक कुर्सी पर बैठ गया और अपना सारा जिस्म ढीला छोड़ते हुए ममता से कहा, "एक प्याला चाय तो बना कर लाओ। मेरे तो होश गायब हैं।"

ममता ने उसका बाज़ू थामा और अपने साथ ले चली। वह हैरान था कि वह उसे कहां घसीटे ले जा रही है। वह चिढ़ कर कुछ कहने को ही था कि एक कमरे के दरवाज़े पर रुक कर ममता बोली, "भैया, चाय का प्याला पीने से आपके होश ठिकाने पर नहीं आयेंगे।"

इससे पूर्व कि कमलजीत कुछ कह पाता, ममता ने दरवाज़ा खोल कर उसे भीतर धकेल दिया और दरवाज़ा फिर बन्द कर दिया।

सामने बिस्तर पर दीपा दुल्हन के लिबास में बैठी थी। उसके होंठों पर मुस्कराहट और आंखों में शरारत की चमक थी।

कमलजीत की तो यह दशा हुई कि लड़खड़ा कर गिरने से बाल-बाल बचा और सहारा लेने के लिए उसने अपनी पीठ दरवाज़े के साथ लगा दी।

दीपा उठ कर उसके पास आ खड़ी हुई और हंसकर बोली, "पापा और तुमने मिल कर जो साज़िश की, उससे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मैं जानती थी कि पापा मेरी शादी तुम ही से करेंगे क्योंकि उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि मैं तुम्हारे सिवाय किसी के साथ खुश नहीं रह सकूंगी।"

"परन्तु तुमने अन्त में आकर यह क्या चमका दे डाला।"

"चकमे का जवाब चकमे से ही देना पड़ता है।"

"मगर तुम यहां पहुंची कैसे?"

"मेरी सहेलियों ने सारा प्रबन्ध कर रखा था। उनमें से एक-दो ने तुम्हें उसी समय पहचान लिया था जब तुम दूल्हा बन कर हमारे यहां पहुंचे।"

"ओह! तो गोया वही चुपके से तुम्हें वहां से ले उड़ीं और गाड़ी में बिठा दिया।"

"हां तो मिस्टर, मैं तुम्हारी पत्नी तो बन गई, लेकिन यह न समझना कि मैं तुम्हारे पांव की जूती बन कर रहूंगी। तुम्हें हर बात क़ायदे से करनी

होगी…"

कमलजीत ने हाथ उठा कर कहा, "मेरा सुझाव यह है कि तुम सब बातें एक कागज़ पर लिख दो कि मुझे क्या-क्या करना होगा, और क्या-क्या नहीं करना होगा।

"यह सुझाव हमको पसन्द आया। लेकिन तुम्हें वचन देना होगा कि हमारी हर शर्त स्वीकार करोगे।"

"तथास्तु।"

"हमें बहुत जल्द सिवान पहुंच कर वहां का सारा काम समेटना होगा।"

"तथास्तु।"

"पापा को फौरन तार देनी होगी कि मैं यहां 'वन-पीस' मौजूद हूं।"

"तथास्तु।"

अब कमलजीत ने उसे अपने बाजुओं में उठा लिया और धीरे से कहा, "यदि दुल्हन की इजाज़त हो मैं उसे पलंग पर बैठ कर प्यार कर लूं।"

"तथास्तु।"